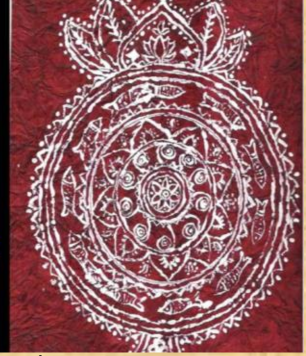
मैथिली प्रतियोगिता

गजेन्द्र ठाकुर

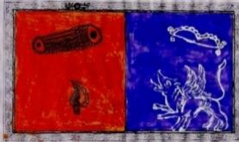
विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in) पेटारसँ

ISSN 2229-547X VIDEHA ***सम्पादक:*** गजेन्द्र ठाकुर।





विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्






अनुक्रम

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

(विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: *अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी अछि। अभिलेख सभक विस्तृत विवरण आ तिरहुता दिस लिपिक झुकाव विस्तारमे देल गेल अछि। अहाँ जाहि लिपिक अनुलग्नक-५ सँ अभ्यास करी ओतबे अपन नोटमे ओहि अभिलेखसँ सामिग्री उठाबी। सम्पूर्ण मोन रखनाइ नहिये सम्भव छैक नहिये से जरूरी छैक। ई आलेख साढ़े आठ हजार शब्दक अछि, अहाँ अपन सुविधासँ एकर ६००- १००० शब्दक नोट बना सकैत छी।****)***

लिपि? आ लिपि छी की? लिपिक उद्भव।

एजिप्टक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपिक आविष्कार टोथ देवता केलनि, मेसोपोटामियाक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपि नीबो देलनि, ग्रीसक लोक ग्रीक लिपिक आविष्कारक हर्मीजकेँ मानै छथि आ भारतमे एकर श्रेय ब्रह्माकेँ जाइ छनि।

पाषाणकालक लोक मारते रास चित्र लिखलनि आ ओहीसँ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटल। मुदा ई चित्र सभ चित्रलिपि नहि छल, कारण एकचित्रक सम्बन्ध दोसर सँ नहि छल आ सभटा चित्र फराक-फराक छल। मुदा ओहिसँ पाछाँ जा कऽ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटले होएत।

पहिल-लिपि: चित्रलिपि

एखन धरिक खोजबीनसँ पता चलैए जे चित्रलिपिक विकास भेल- टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील नदीक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे।

उपरका खोह आ धारक कातक पाथरपर लिखल चित्र आ चित्रलिपिमे अन्तर बिकछेबाक खगता अछि। अहाँ हमरासँ प्रेम करै छी तँ हमर चित्र लिख देलहुँ, कोनो शिकार करै छी तँ से चित्र लिखलहुँ। से अहाँ भेलहुँ लिखिया। से भारतोमे बहुत ठाम छल, मुदा लिखिया लिपिकार चोट्टहि नहि बनि जाएत। लिपिकार जे चित्र बनेलक से कलकारी लेल नहि वरण् खगता लेल। से एतऽ सूर्य बनेबाक लेल वृत्त

बना दियौ, पूरा चित्र बनेबाक खगता एतऽ नै अछि, फेर दूटा एहने चित्रक सम्बन्ध स्थापित करू, दूसँ तीन.. आ चित्र लिपि तैयार।

से चित्रकार चित्र लिखलक, आ लिपिकार बनेलक। लिपिकारकेँ लिखिया नहि कहि सकैत छिऐ। आ से भेल टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कातक (असीरिया, बेबीलोन आ सुमेरमे), नील नदीक कातक (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे ईजियन आ मिनोअन सभयताक लोक।

चित्रलिपि: चित्रात्मक चित्रलिपि आ विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि

बाहरसँ दुनू चित्रलिपि अछि मुदा चित्रात्मक चित्रलिपि चित्रक मात्र बोध करबैत अछि जेना वृत्त सूर्यक बोध करेलक। मुदा जखन एकर प्रयोग गुमार लेल होमए लागल तँ ई भऽ गेल विचार आकि भावनाक प्रतीक आ ओहि लिपिक नाम भेल विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि। आब कलाकारीसँ बेशी खगता महत्त्वक भेल आ ताहि लेल चेन्हक आकार सेहो छोट भऽ गेल। आइयो चीन आ जापानमे विचार/ भावनात्मक चित्रलिपिक प्रयोग होइत अछि। मुदा पध-आधारित लिपि चीनमे खतम भऽ गेल, मुदा जापानमे ओ आइयो प्रयोगमे अछि।

चित्र-ध्वनि लिपि

भाषाक उद्भव आ विकास भेल। जेना ओतए ध्वनिसँ सम्बन्धित शब्द प्रवेश केलक तहिना लिपिमे सेहो भेल। आ चित्र-ध्वनि लिपिक विकास भेल। एहिमे विचार-भावनाक संग ध्वनिक प्रवेश सेहो भेल आ पाछाँ जा कऽ ओ ध्वन्यात्मक लिपि बनल।

ध्वन्यात्मक लिपि

ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि आ वस्तु-व्यक्तिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि वा ध्वनि-समूह लेल चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे पोलीफोन (एक चिन्हक अनेकार्थ वा ध्वनि) आ होमोफोन (अनेक चिन्ह द्वारा एक ध्वनि वा अर्थ) मिला कऽ सेहो अर्थ/ ध्वनि-निर्णय नहि कऽ पबैत छल आ ताहि लेल तेसर ध्वनि-चिन्ह डिटरमिनेटिवक व्यवस्था भेल आ फेर अर्थ वा ध्वनि निर्णय सम्भव भेल।

एहि लिपिसँ पद-आधारित आ व्यंजन-प्रधान लिपि बनल।

स्थान-लाघव आ प्रयत्न लाघव

एतए प्रयत्न-लाघवक चर्च करब आवश्यक अछि। प्रयत्न लाघव लेल कम प्रयाससँ अपेक्षित परिणामक प्राप्ति। माने भाषाक सम्बन्धमे कम शब्दमे सुस्पष्ट विचार व्यक्त करब, पैघ-ध्वनि लेल छोट सर्वमान्य ध्वनिक प्रयोग करब आ ओही हिसाबसँ लिपिक सन्दर्भमे पैघ चेन्ह लेल छोट चेन्हक प्रयोग करब। ओहिना स्थान-लाघव लिपिमे स्थान-कटौती लेल प्रयुक्त होइत अछि। टॉपिक १२ मे शब्द विचारमे लिपि-उच्चारण सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। से प्रयत्न लाघवसँ कखनो काल ध्वनि अनचिन्हार भऽ जाइत अछि, आ ओकर रूपान्तर लिपिमे प्रत्न-लाघव आ कखनो काल स्थान-लाघ्वक संग होइत अछि।

पद-आधारित लिपि

पद आधारित लिपिमे प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघव नहि रहैत अछि। एकरा एना बुझू जे तमिल लिपि अछि सिलेबल आधारित लिपि, रोमन लिपि अछि अल्फाबेट लिपि आ तिरहुता आ देवनागरी अछि अल्फा-सिलेबिक लिपि। माने जतऽ संयुक्ताक्षर नहि अछि से भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। माने अंग्रेजी, जे रोमन लिपिमे लिखल जाइत अछि, मे संयुक्ताक्षर नहि होइत अछि, मात्र २६ टा अल्फाबेट होइत अछि, से ओ भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। तमिलमे सिलेबल आधारित लिपि अछि। से ओ भेल सिलेबल आधारित लिपि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से ओ भेल अल्फा-सिलेबिक लिपि। एहि तीनूक तुलना मोटा-मोटी वार्णिक (अंग्रेजी), मात्रिक (तमिल) आ वार्णिक आ मात्रिक (तिरहुता आ देवनागरी) छन्दसँ कएल जा सकैत अछि। मुदा एतऽ एकटा पेंच अछि, अंग्रेजीमे वर्णक गणनासँ जे मीटर निर्माण करब तँ लय नहि बनत से ओतऽ सिलेबल आधारित गणना करए पड़ैत अछि, आ किएक तँ ध्वनिक सम्बन्ध मात्र सिलेबलसँ छै, शब्दकेँ सिलेबलमे तोड़ल जाइत अछि। जापानी लिपि पद-आधारित अछि से ओतऽ ई झमेल नहि अछि, आ ओतऽ ध्वनिक ईकाई लेल जे शब्द प्रयुक्त होइत अछि तकर अनुवाद मोटामोटी सिलेबलमे कएल जा सकैत अछि

आ ओही आधारपर हाइकूमे १७ टा ध्वनि पुरेबा लेल गणना होइत अछि। तिरहुता, देवनागरी आ ब्राह्मीमे जे बाजल जाइए सएह लिखल जाइए, आ एतऽ पाणिनीपूर्व आ पणिनिक परम्परामे ध्वनि आधारित सन्धिक निअम बनल अछि। कर्मधारय समासक विग्रह पदात्मक होइत अछि, महादेव भेला महान् देव, आ जँ दूसँ बेशी पद अछि तँ से भेल बहुव्रीहि- जेना लम्बोदर (नमगर जिनकर उदर से, माने गणेश)। अंग्रेजी (रोमन लिपि) मे बजबा काल सन्धि होइत अछि मुदा लिखबा काल नहि, मुदा ओतहुओ दीर्घ लेल डबल ए, डबल बी आदि प्रयुक्त होइते अछि, पंकचुएशन सेहो ई काज करैत अछि, हँ ओतऽ ट्रिपल ए नहि होइत अछि, मुदा हमहूँ सभ तँ दीर्घक बाद प्लुतकेँ छोड़िये देने छी। आ तही कारणसँ मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखल जाइत अछि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से मात्रिक आ वार्णिक दुनू छन्द एहिमे गणना कएल जा सकैत अछि। टॉपिक १ मे पृष्ठ १८ सँ गणना (मात्रिक आ वार्णिक) सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। सिलेबल जेना शब्दसँ सम्बन्धित अछि पद तहिना समाससँ पहिलमे ध्वनि प्रमुख अछि आ दोसरमे पद (अर्थ)। से वएह पद आधारित लिपि ध्वन्यात्मक लिपिक विकास छल। जकर प्रमाण ऐतिहासिक रूपसँ उपलब्ध अछि, आ जतऽ सँ लिपिक असली विवेचन सम्भव अछि। आ चित्र-लिपिक रूपमे जाहि तीन गोट लिपिक चर्च भेल माने टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कात (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील धारक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे एहिमेसँ टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कातमे सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे जे सभ्यता सभ क्रमसँ आएल ओहिमे पहिने सुमेरमे क्यूनीफोर्म लिपिक प्रारम्भ भेल ४००० शताब्दी बी.सी.ई. (बिफोर कॉमन एरा)मे। बेबीलोन लोकनि सुमेरसँ ई लिपि सिखलनि आ हुनकासँ असीरिया लोकनि। माटिक सानल आ लोथ बनाएल पट्टीपर सुखेलासँ पहिनहिये नोकबला स्टायलससँ, मोटा-मोटी ३५० टा अक्षरसँ, ई क्यूनीफॉर्म लिपि लिखल जाइ छल जखन आ फेर रौदमे सुखाएल वा चूल्हिमे पकाएल जाइत छल। आधुनिक कालमे एकरा पढ़बाकश्रेय एकटा अंग्रेज हेनरी रॉलिनसनकेँ जाइ छनि। तेसर चरणक बाद धरि ई पद-आधारित बनि गेल छल। एजिप्टमे हायरोग्लाइफिक

(हायरोग्लिफिक, हायरेटिक आ डेमोटिक) लिपि क्यूनीफॉर्म लिपिक समकालीन छल। एहिमे २४ टा चिन्ह रहैक जाहिमे सभटा व्यंजन रहैक। स्वर रहबे नहि करैक, से बहुत रास झमेल आ अस्पष्टता आबि जाइ छलैक, से ओकर निवारणलेल ओ लोकनि आर विशेष चेन्ह आ चित्रक प्रयोग करैत छलाह। ओ सभ लाल मोशि-कलमसँ पेपीरस पातपर लिखैत छलाह, ओही पेपीरससँ पेपर बनल अछि। क्यूनीफॉर्म आ हाइरोग्लाइफिक ई दुनू लिपि दहिनसँ वाम दिश लिखल जाइत छल। एहि दुनू लिपिक समकालीन लिपि छल चीनक लिपि से ऊपरसँ नीचाँ लिखल जाइत छल। पहिने एकटा शब्द लेल एकटा चिन्ह छल, मुदा फेर एकटा विचार लेल एकटा शब्दक प्रयोग होमए लागल। चीनक लिपिमे कोनो अल्फाबेट नहि अछि, ४०,००० चिन्ह अछि। एकर अलाबे एलमाइट सभ पहिने देशज रेखात्मक आ चित्र-प्रचुर अक्षरक प्रयोग केलनि मुदा फेर ओ लोकनि सेहो क्यूनीफॉर्म लिपि पकड़ि लेलनि मुदा ओतऽ ११३ चेन्ह जाहिमे ८०सँ बेशी पद-आधारित चेन्ह छल, केर प्रयोग ओ केलनि।

से एजिप्टक बदला लिपिक आविष्कारक मेसोपोटामिया (सुमेर, बेबीलोन आ असीरिया) क लोक रहथि, जे लिखबाक कलाक आविष्कर्ता छथि। जेना ऊपर चर्च भेल अछि, ओ लोकनि पहिने चित्र लिखलन्हि, आ किएक तँ चित्र बनेबामे बेसी समयक नोकशानी होइत छलन्हि से ओ लोकनि प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघवसँ चित्रकेँ चेन्ह बना देलन्हि, चेन्हमे समानता आ समरूपता आनि रेखात्मक पद्धतिक लिपि बनेलन्हि। फेर ई चेन्ह ध्वनिकेँ प्रदर्शित करए लागल, आ एहि तरहक मोटामोटी ३५० टा चेन्ह बनल।

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे जे खाँटी वर्ण आधारित लिपि बनल ताहूमे, फेर मिनोअन सभ्यतामे जे लिपि आविष्कृत भेल ओहिमे पद-आधारित लिपिक प्रभाव पड़ल। पद-आधारित लिपिक दूटा रूप चीनमे छल मुदा तकर प्रयोग चीनमे बन्द भऽ गेल मुदा जापानमे ई प्रयोगमे अछि जकर किछु चर्च ऊपर आएल अछि।

व्यंजन प्रधान लिपि

एकरा वर्णमाला वा वर्ण आधारित लिपि सेहो कहि सकैत छी।

आन लिपि सभमे चेन्ह सभक संख्या ततबा बढ़ि गेल जे शिशु लेल ओकर सीखब असम्भव भऽ गेल। एहि लिपिक विकासक कारण छल प्रयत्न लाघव। एक्के लिपिमे अनेक भाषा लिखब सम्भव भऽ गेल।

टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे)क क्यूनीफॉर्म लिपि वर्णमाला नहि बनि सकल। एहि लिपिक सम्बन्ध सेमेटिक भाषासँ हेबाक प्रमाण अछि। चित्रात्मक फेर विचारात्मक, फेर ध्वन्यात्मक लिपि ई बनि सकल। मुदा ध्वन्यात्मक लिपि सेहो संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ क्रिया-विशेषणक आवश्यकताकेँ किछु सुधारक संग पूर्ण कऽ सकल। फेर ई पद-आधारित बनल आ एतहि एकर विकास खतम भऽ गेलैक।

बादमे जा कऽ जुरुथ्रुष्टक अनुयायी लोकनि मेसोपोटामियामे अपन लिपिकेँ व्यंजन प्रधान बनेलन्हि जकरा अर्द्ध-वर्णमाला कहि सकैत छी। मुदा ओहिमे कृत्रिम हेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, आ ई प्रवृत्ति ब्राह्मीमे सेहो भाषा-वैज्ञानिक लोकनिकेँ देखा पड़ैत छन्हि।

क्रीटमे सेहो चित्र-प्रचुर रेखाकृतिसँ आगाँ बढ़ि १३५ चेन्हबला भावना-प्रधान आ ध्वनि-प्रधान लिपि बनेलन्हि। हिनकर लिखब वामसँ दहिन आ दहिनसँ वाम दुनू छल।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे मूल वर्णमालाक आविष्कार दोसर शताब्दी बी.सी.ई. मे भेल जकर नाम उत्तरबरिया सेमेटिक वर्णमाला छल। आ तकर बाद आनो-आन मूल वर्णमाला आविष्कृत भेल जेना आरामाइक, फिनीशिअन, ग्रीक आ ब्राह्मी आ ई लिपि सभ अनचोक्के आविष्कृत नहि भेल होएत वरण ओतहु वएह प्रक्रिया भेल हएत जे मेसोपोटामियाक लिपि संग भेल छल। मुदा एक स्तरक बाद मेसोपोटामियाक क्यूनीफॉर्म लिपि पद-आधारित लिपि बनि अपन खिस्सा खतम केलक ई लिपि सभ पूर्ण वर्णमाला बनि गेल।

भारतमे लिपि आ लेखनकला

नागार्जुनकोण्डासँ प्राप्त दोसर शताब्दीक एकटा मूर्तिमे राजा शुद्धोधनक दरबारक दृश्य अंकित अछि जाहिमे तीनटा भविष्यवक्ता

भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका सभक नीचाँ बैसल लिपिकार तकरा लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई आइ धरिक सभसँ पुरान चित्र आधारित प्रमाण अछि। एहिसँ अतिरिक्त पुरान प्रमाण हड़प्पा संस्कृति, अशोकक अभिलेख आदि तँ अछिये। अशोकक अभिलेख आ हड़प्पा संस्कृतिक बीचमे सेहो मारते रास अभिलेख भेटलाछि जेना सोहगौराक ताम-पत्र अभिलेख, पिपरहबाक बौद्ध-भीड़ अभिलेख, महास्थान आ बर्लीक पाथर अभिलेख, आ भट्टिप्रोलुक अभिलेख।

भारतमे हड़प्पा सभ्यतामे पहिल बेर लिपिक प्रयोग भेल मुदा ओ एखन धरि पढ़ल नहि जा सकल अछि। एकर अभिलेख सभ छोट-छोट छैक सभसँ पैघ अभिलेखमे २६ टा चेन्ह छैक। धोलावीर (गुजरात) मे नग्रक द्वारपर एकटा साइनबोर्ड हेबाक प्रमाण अछि जाहिमे ९ टा चेन्ह छैक।

ब्राह्मी आ खरोष्ठी

ब्राह्मी वामसँ दहिन आ खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिशामे लिखल जाइत अछि। मुदा दुनू भारतक वर्णमाला पद्धतिक आधारपर विकसित भेल अछि। अशोकक अभिलेख ब्राह्मी आ खरोष्ठी (मानसेहरा आ शाहबाजगढ़ी) दुनूमे भेटल अछि आ एकरा एकटा अंग्रेज जेम्स प्रिंसेप १८३७ सी.ई. मे ब्राह्मी पढ़बामे सक्षम भेलाह। खरोष्ठी पढ़बाक श्रेय सम्मिलित रूपसँ कर्नल मसोन आ जेम्स प्रिंसेप कैँ देल जाइत अछि। एहि अभिलेख सभमे अशोकक नाम पियदस्सी लिखल छैक आ किछुमे असोक (अशोकक पालि-प्राकृत रूप) सेहो। अशोकक अभिलेखमे लिपिकरक चर्च अछि।

ब्राह्मी लिपि बहुत दिन धरि विकसित आ परिष्कृत/ परिवर्द्धित होइत प्रयोगमे रहलाअ एहिसँ भारतक आन लिपि सभक उत्पत्ति भेल मुदा खरोष्ठी लिपि अपने संग खतम भऽ गेल। अशोकक अभिलेखक अतिरिक्त इण्डो-ग्रीक राजा सभ एकर प्रयोग अपन मुद्रापर केलन्हि जाहिमे तर आ ऊपरमे ग्रीक आ ्खरोष्ठी लिपिमे राजाक नाम लिखल रहैत छल।

नारद-स्मृतिमे लिपिकेँ उत्तम आँखि कहल गेल अछि आ एकर सृजन **ब्रह्मा** केलनि तकर चर्च अछि।

बृहस्पति स्मृतिमे चर्च अछि जे छह मासक बाद स्मृति धोखा देमऽ लगैत अछि से पातपर लिखल आखरक सृजन **ब्रह्मा** केलनि।

चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनमे सेहो चर्च अछि जे वामसँ दहिन लिखल जाएबला लिपिक सृजनकर्त्ता ब्रह्मा छथि।

एहि लिपिक नाम ब्रह्मी लिपि छल आ से पाणिनी पूर्व व्याकरणाचार्य द्वारा स्वीकृत छल, मुदा पाणिनी व्याकरणक अनुरूप ब्रह्मी अशुद्ध अछि। से एहि लिपिक नाम ब्राह्मी पड़ल। पाणिनी अष्टाध्या आ अमसिंह अमरकोषमे लिपि आ लिबिक चर्च करैत छथि। पाणिनी पूर्व आचार्य यास्क अपन निरुक्तमे बहुत रास पूर्व आ समकालीन व्याकरणाचार्यक नाम गणबैत छथि। वर्णक गणना आधारित छन्द आ व्याकरणाचर्य सभक उपस्थिति अपरोक्ष रूपसँ लेखनकलाक उपस्थितिक आभास करबैत अछि। तीन हजार वर्ष पूर्व झेलम आ चेनाबक बीच गांधार (अखन ओतऽ यूसुफजई पठान निवास करैत छथि) इलाकामे दक्षक संघराज्य छल, एहि इलाकामे काबुल धार पच्छिमसँ आबि कऽ सिन्धु धारमे संगम करैत अछि। ओहि संगमसँ चारि माइल उत्तर लहुर गाम, जे पाणिनीक नानी गाम छल, मे पाणिनीक जन्म भेल, ओइ गामक नाम ओइ कालमे शलातुर रहैक। चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआन च्वांग), सातम शताब्दीमे. एहि गामक विद्वान ब्राहमण व्याकरणाचार्यक चर्च केने छथि। माने परम्परा आगाँ-पाछाँ काएम छल।

जैनक भगवती सूत्र एहि **ब्राह्मी** लिपिकेँ नमस्कार करैत अछि।

लिपिक आधार- अक्षर, वर्ण आ मात्रा आ तकर साक्ष्य

ऋगवैदिक ऋचा वर्णवृत्तमे अछि, मात्रिक छन्दमे नहि। वार्णिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि।

छान्दोग्य उपनिषदमे अक्षर शब्द उल्लेख अछि दीर्घ स्वरक सेहो।

तैत्तरीय उपनिषदमे वर्ण आ मात्रा दुनूक चर्चा अछि।

ऐतरेय आरण्यकमे स्वर आ व्यंजन दुनूक चर्चा अछि।

पंचविंश ब्राह्मणमे सभसँ छोट दक्षिणा १२ कृष्णल आ सभसँ

पैघ दक्षिणा ३,९३,०१६ कृष्णल सुवर्णक
चर्चा अछि।

कौटिल्यक अर्थशास्त्र चूड़ाकर्म संस्कारक बाद लिपि आ अंकक प्रशिक्षणक निर्देश करैत अछि। राजाकेँ मन्त्रिपरिषदक संग पत्राचार आ गुप्तचरक कूटलिपिमे संदेश पठेबाक चर्च अछि। अर्थशास्त्र कहैत अछि जे लिपिकार तेजीसँ लिखबामे निपुण होथि, साफ-साफ लिखथि आ लेख पढ़बामे सेहो समर्थ होथि।

बौद्ध ग्रन्थ सुत्तंतमे अक्खरिका क्रीड़ाक चर्च अछि, जाहिमे अकासी अक्षर बनेबाक स्पर्धा रहैत अछि। बौद्ध भिक्षु लेल एहि क्रीड़ाक निषेध अछि मुदा विनय-पिटक लेखल-कला सिखबाक अनुमति बौद्ध-भिक्षुकेँ दैत अछि। कटाहक जातकमे जाली पत्र देखाकेँ ठकबाक चर्च अछि तँ महासुतसोम जातकमे तक्षशिलाक अध्यापक अपन पुरान शिष्यकेँ पत्र लिखै छथि। कण्ह जातक अक्खर (अक्षरक पालि-प्राकृत रूप) क प्रयोग करैत अछि। महावग्गमे अंक-शब्दक प्रशिक्षण आ कटाहक जातकमे शीतलपाटीक चर्चा अछि जाहिपर लिखब सिखाओल जाइत छल। ललितविस्तर बुद्धक लिपिशाला, हुनकर शिक्षक विश्वामित्र, चाननक शीतलपाटी आ सोनाक लेखनीक चर्चा करैत अछि, एतऽ ६४ टा लिपिक वर्णन अछि जतऽ राजनैतिक सीमाक हिसाबसँ अंगक लिपि, मगधक लिपि वङक लिपिक चर्च अछि मुदा विदेहक लिपिक स्थानपर पूर्व विदेह लिपि लिखल अछि। एकर कारण अछि जे वज्जि विदेहपर अधिकार कऽ लेने छल आ वज्जि आ विदेहक लिपि संयुक्त रूपसँ विदेह लिपि छल। अजातशत्रु तेसर शताब्दीमे वज्जिकेँ जीति मगधमे राजनैतिक रूपसँ मिला लेलन्हि, मुदा सांस्कृतिक रूपसँ ओ अपन अस्तित्व बचेने रहल। ललित विस्तर तेसर शताब्दीक ग्रंथ थिक आ ताहि द्वारे ओ मगध लिपिक संग पूर्व विदेह लिपिक वर्णन करैत अछि। ई प्रवृत्ति बादमे गुप्तकालक तीरभुक्ति (तिरहुत) प्रान्तमे सुदृढ़ रूपसँ सोझाँ आएल आ पूर्वविदेह लिपिक नामकरण भेल तिरहुता। ललितविस्तरमे बाल अवस्थामे बुद्ध-सिद्धार्थक वर्णमाला प्रशिक्षणक चर्च अछि आ ओहिमे वार्णिक अक्षरक काँति आ अलंकरणक योजनाक चर्च अछि जे

ब्राह्मी लिपिक अछि।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला आ ब्राह्मीक बीचमे अलेफ् आ अ, बेथ् आ ब्, गिमेल् आ ग, दालेथ् आ द, हे आ ह, वाव् आ व, जाइन् आ ज, चेथ् आ घ, थेथ् आ थ, योध् आ य, काफ् आ क, लामेध् आ ल, मेम् आ म, नुन आ न, सामेख आ स, आइन् आ ए, फे आ प, साधे आ च, कॉफ् आ ख मे अद्भुत समानता अछि आ मानवक मस्तिष्क कोना दूर रहलोपर एक्के रङ अछि तकर द्योतक अछि। बूलरकेँ ब्रम भेलन्हि जे ब्राह्मी लिपि उतरबरिया सेमेटिक लिपिक अनुकरण केलक। ई ओ काल छल जखन हड़प्पा आ मोहनजोदाड़ोकेँ सेहो मेसोपोटामियाक आउटपोस्ट ताधरि मानल जाइत जाधरि भारतक आन भागमे उत्खनन नहि भऽ गेलै आ हड़प्पा संस्कृतिक देशज रूप प्रकट नहि भऽ गेलैक (हर्मन कुल्के आ दीतमार रोथरमण्ड, अ हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, २००४, पृ. १९, मुदा ओ पृ.५४ पर अखनो भ्रममे छथि जे खरोष्ठी अरामेइक लिपिक आधारपर बनल जे तखन फारसक आधिकारिक लिपि छल। अरामाइकमे मात्र २२ टा अक्षर छैक, स्वरक अपूर्णता अछि, ह्रस्व-दीर्घक भेद नहि अछि, स्वरक मात्राक सेहो अभाव अछि से ओ भारतीय भाषा लेल अयोग्य अछि, खरोष्ठीमे ई सभ गुण अछि, संगे दीर्घ-गुण-वृद्धि ध्वनि लेल भेदक चिन्ह सेहो अछि, प्राकृत अभिलेख लेल ई ब्राह्मी सन सक्षम छल, मात्र दहिन-वाम रहने ई विदेशी नहि भऽ जाएत। खरोष्ठी दहिनसँ वाम लिखल जाइत अछि मुदा एकर वर्णमाला भारतीय अछि, दहिनसँ वाम लिखल जएबाक कारण किछु विद्वान लोकनिकेँ एहिमे फारसक प्रभाव देखाइ पड़ैत छनि, मुदा सत्य तँ यएह अछि जे ब्राह्मी आ खरोष्ठी लिपिमे एक्के वर्णमालाक प्रयोग भेल अछि।)। जेना सङीतमे भारतक सारेगामा क सात टा सुर आ पश्चिमी ऑक्टेव (ओत्तहु साते टा छैक, ऑक्टेव माने आठम सँ पुनः पुनरावृत्तिक मात्र ई प्रतीक अछि) ई सिद्ध करैत अछि जे भाषा कोनो हुअए कान वएह छैक मनुक्खबला। ब्रेल आ इण्टरनेशनल फोनेटिक अल्फाबेट ध्वनिक संग मस्तिष्क (ब्रेल) क सेहो संप्रेषण मोटामोटी एक्के हेबाक प्रमाण दैत अछि (देखू अनुलग्नक) से पहिने तँ किछु विद्वान एकरा बैक्ट्रो-पालि आ आरियानो-पालि विदेशी लिपि बुझि कऽ कहलन्हि, कनिंघम एकरा गांधारी कहलन्हि, मुदा

ललितविस्तर आ चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनक प्रमाण अकाट्य छल आ ओतऽ वर्णित एकर नाम खरोष्ठी सर्वमान्य भेल। चीनी साक्ष्य ब्राह्मीक उद्भव ब्रह्मा द्वारा आ खरोष्ठीक सर्जन ब्राह्मण आचार्य खरोष्ठ द्वारा भेल मानलक अछि। तेसर शताब्दीक बाद अभिलेख संस्कृतमे लिखल जाए लागल, प्राकृतक प्रयोग बन्द भऽ गेल। प्राकृत लेल ब्राह्मी आ खरोष्ठी दुनू सक्षम छल मुदा संस्कृतक सन्धियुक्त अलंकृत क्लिष्ट शब्द, पद आ समास लेल मात्र ब्राह्मी। से एक बेर जे एकर प्रयोग बन्द भेल तँ प्राकृतसँ निकलल भाषा सभ लेल सेहो ब्राह्मीसँ निकलल लिपिक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल।

ब्राह्मीक एरागुडीक अशोकक अभिलेख २६ पाँतीमे अछि। वाम दहिन लेखनक पूर्ण रूपसँ पालन नहि भेल अछि, ओना बेशी पाँती वाम-दहिन अछि। किछु वाम-दहिन पाँतीमे किछु अक्षर वाम-दहिन तँ किछि दहिन वाममे अंकित अछि, किछि ऊपर नीचाँ सेहो अछि। ८ पाँती दहिन-वाम अछि। एक पाँतीमे मात्र एक अक्षर अछि। से दहिन वाम रहने विदेशी प्रभाव सिद्ध नहि होइत अछि। खरोष्ठी सन जापानी सेहो दहिन वाम लिखल जाइत अछि।

ललितविस्तरक प्रसंग सेहो इशारा करैत अछि जे व्याकरणक विशेषताकेँ पूर्ण करब ब्राह्मीक उद्देश्य छल, मुदा ई आग्रह ऋगवेदसँ अर्थशास्त्र तक अछि, आ भारतीय परिप्रेक्ष्यमे ब्राह्मी आ ओहिसँ निकलल लिपि ओहि आग्रहकेँ पूर्ण करैत अछि, आ एकर परिष्कृत रूपकेँ कृत्रिम नहि वरण् स्वाभाविक मानल जेबाक चाही। से किछु विद्वान ब्राह्मीक व्याकरण सम्बन्धी आवश्यकताकेँ पूर्ण करए लेल भेल परिष्करणकेँ विदेशी अक्षरकेँ भारतीय प्रारूपमे आनब कहलन्हि अछि (बूलर, ऑन द ओरिजिन ऑफ द इण्डियन ब्राह्मी अल्फाबेट, १८९८), मुदा कनिंघम एकरा भरतीय चेन्ह सभसँ बहार भेल मानलन्हि अछि (कनिंघम, कोरपस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेरम, खण्ड-१)।

ब्राह्मी लिपिक अतिरिक्त ६३ टा आर लिपिक चर्च ललित विस्तरमे अछि। सम्पूर्ण यूरोपमे ग्रीस आ रसियन कॉमनवेल्थ छोड़ि कऽ (एहि दुनू ठाम अलग-अलग लिपि छैक) सम्पूर्ण यूरोपमे रोमन लिपिक

प्रयोग होइत अछि। से सम्पूर्ण यूरोपमे आइ मात्र तीनेटा लिपि छैक। जँ रूसकेँ यूरोपसँ हटा दी तँ ओ भारतक बराबरे अछि। भारतमे सभ प्रान्तमे मोटामोटी अलग-अलग लिपि अछि, मुदा तमिलक अतिरिक्त सभमे अल्फा-सिलेबिक (अक्षर आ संयुक्ताक्षरक) निर्वहण मोटामोटी एके रङ होइत अछि। एकर कारण छापाखानाक देरीसँ आगमन मात्र अछि।

ब्राह्मीक मानक रूप आ ओकर क्षेत्रीय शैली

ब्राह्मीक मानक रूप छल आ तकर प्रमाण अछि अशोकक अभिलेख। अशोक १४म प्रस्तर-अभिलेखमे कहै छथि जे अभिलेख-आलेखनक गुण-दोष लिपिकरक जिम्मा अछि, आ सएह कारण छल जे अशोकक अभिलेखमे अक्षर आ ओकर आकारमे समरूपता अछि आ ईहो प्रमाणित होइत अछि जे अशोकक काल धरि ब्राह्मीक मानक रूप आबि गेल छल। जे भेद अछि से क्षेत्र अनुसार, लिपिकरक लेखनक अनुसार आ लेखन उपकरणक विविधताक अनुसार अछि, आजुक हिसाबेँ जँ असमतल पाथर, खोह आदिपर लिपिकार द्वारा पुरातन उपकरणसँ जतेक असमरूपता आएल अछि से मानक ब्राह्मीक स्थिति आर सुदृढ़ करैत अछि। पंकचुएशन संस्कृतमे रहबे नहि करए से प्राकृतमे सएह परम्परा आगाँ बढ़ल। विराम चिन्हक व्याकरणगत आवश्यकता ब्राह्मीक लिपिकारकेँ ओही कारणसँ आवश्यक नहि लगलन्हि।

कुटिल लिपि

कुटिल लिपि

;

उत्तर भारत ६अम शताब्दी सी.ई.

;

पच्छिम (शारदा) ; पूब (किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरी।

कुटिल लिपिक विशेषतासँ प्रेरित नामकरण- न्यूणकोण वर्णमाला (बूलर, इण्डियन पालियोग्राफी, प्.६८), नह शीर्ष वर्णमाला (टॉड, एनल्स ऑफ राजस्थान, पृ. ७००), भारयीय नाम सिद्ध मातृका,काश्मीर आ वाराणसीमे प्रचलित (अल-बेरुनी, भारत, पृ. १७३, सचाउ), देवल प्रशस्तिमे एकरा लेल कुटिलाक्षरणी प्रयुक्त भेल।

आदित्यसेनक अफसड़ पाथर-अभिलेखमे एकर नाम विकटाक्षरणी अछि। विक्रमांकदेव चरितमे कुटिल लिपिमे सिद्धहस्त कायस्थ लोकनिक चर्च अछि।

जेम्स प्रिंसेप, जे १८३७ ई. मे अशोकक अभिलेखकेँ पढ़ने छलाह, एकरा लेल कुटिल लिपिक नामकरणक अनुशंसा केलन्हि (जर्नल ऑफ एशियाटिक सोशाइटी ऑफ बेन्गाल, पार्ट-५ पृ. ७७८)।

कुटिल लिपिक विकासक की कारण छल? पहिल तँ ई छल जे लिखबाक करची-कलम आ मोशिक प्रयोग संग नव उपकरण आ पुरान उपकरणक नव प्रयोगसँ अलंकरणयुक्त अभिलेख लेखनक इच्छा जागृत भेल, लटपटौआ लिखबाक आग्रह सेहो एहि लेल कारण बनल। एहिसँ उपरका भाग फन सन बनि गेल कारण मोशि ढबकि जाइ, पाछाँ नाङरि आ पद-चिन्ह सेहो सुस्पष्ट भेल। अलंकरणक प्रवृत्तिसँ वर्ण वृत्ताकार आ चिक्कन स्वरूप लेबऽ लागल। अलंकारक कारणसँ एकर नाम पड़ल सिद्धमातृका।

कुटिल लिपिक अभिलेख भेटल अछि, कौशाम्बीक माटिक सदण्ड सप्तदीपक (ई मोन पाड़ैए मौर्य कालक बौद्ध सप्ताक्षरी (प्रसिद्ध मंत्र) कूटाक्षरक), मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेख, ईशानवर्माक हरहा पाथर-अभिलेख, सर्ववर्मनक असीरगढ़ मोहर-अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर आ नागार्जुनी खोह अभिलेख, ईश्वर वर्मनक जौनपुर पाथर-अभिलेख, शाहपुरक प्रतिमापर अभिलेख , मन्दागिरि अभिलेख, जीवितगुप्त द्वितीयक देववार्णार्क स्तम्भ अभिलेख, हर्षवर्धनक मधुबन आ बाँसखेड़ा ताम्रपत्र-अभिलेख, हर्षवर्धनक सोनीपत मोहर-अभिलेख।

तिरहुता

तिरहुता लिपिक खोजमे आब भारतक पूब भागमे आउ।

पूब भागक ब्राह्मीक बाद किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरीक प्रयोग भेटैए।

किराँत लिपिमे लिम्बू भाषा आदि लिखल गेल। ई सभ लिपि वामसँ दहिन दिश लिखल जाइए मुदा रञ्जना लिपि कूटाक्षरमे ऊपरसँ

दक्षिण लिखल जाइए। नागरीक रूप नन्दीनागरीक प्रयोग मुदा बेशी मध्य दक्कन आ दक्षिण भारतमे भेल आ माध्वाचार्यक द्वैत दर्शनक संस्कृतमे लिखल पाण्डुलिपि नन्दीनागरीमे अछि।

विदेह, अंग, वज्जि आ नेपालक तराईमे संस्कृत आ मैथिली दुनू तिरहुतामे लिखल जाइ छल आ एहिमे सभ विषय, जेना साहित्य, गणित, धर्म, दर्शन लिखल जाइ छल आ पाता (सुख-दुख दुनुक) चलै छल आ चिट्ठी-पत्री अहीमे होइ छल। कैथीक प्रयोग हिसाब-किताब, खाता-खतियान लेल होइ छल आ मुख्य रूपसँ कायस्थ एकर प्रयोग करै छला। मुदा मिथिलाक कर्ण-कायस्थक पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल (मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)। एकर विपरीत मैथिल ब्राह्मणक पञ्जीक किछु फील्ड-वर्क आ पत्रचार कैथीमे भेल (अनुलग्नक) मुदा एतहु पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल। ई १४म शताब्दी सी. ई. (कॉमन एरा) सँ शुरू भऽ कऽ २०म शताब्दी सी.ई. धरि रहल जखन देवनागरीमे पञ्जी लिखब प्रारम्भ भऽ गेल।

किछु नव आविष्कृत लिपि

लिपिक अनुकरणसँ साइन (इशारा) भाषा वधिर लेल **१८म शताब्दी** सी.ई. (कॉमन एरा) मे वधिर स्कूलमे फ्रांसक चार्ल्स मिशेल देल एप्पे द्वारा आविष्कृत भेल। ई एहेन लिपि अछि जे कागतपर नहि वरण् वायु माने वातावरणमे बनाओल जाइत अछि। अन्ध-दिव्यांग लेल ब्रेल लिपि **१९म शताब्दी**मे फ्रांसक लुइ ब्रेल आविष्कृत केलनि। **२०म शताब्दी**मे रघुनाथ मुर्मू संथाली भाषा लेल ओल-चिकी लिपिक आविष्कृत केलनि।

ब्राह्मी लिपिक पुबरिया प्रकारक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक हरिषेन लिखित प्रयाग प्रशस्ति जे अशोकक स्तम्भपर लिखल गेल छल, चन्द्र गुप्त-२ क उदयगिरि खोह लेख, स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा अभिलेख।

तिरहुता लिपिक खोजमे हम सभ उत्तर आ दक्षिणमे सँ उत्तर भारतीय आ फेर उत्तर भारतीयसँ उत्तर-पूब दिस बढ़ब। उत्तर आ दक्षिण

भारतक लिपिक जे अन्तर अछि से “म” मे देखाइत अछि। उत्तर भारतक दुनू प्रकार माने पूब आ पच्छिमक प्रकार श, ष, ल आ ह मे देखाइत अछि।

गुप्त कालक अभिलेखक पूब प्रकारमे “ल” केर वाम अंग सोझे नीचाँ दिस झुकैत अछि (उदाहरण जौगड़क फराक अभिलेख)। “ष” केर आधार चेन्ह गोल बनाओल गेल आ बिचुलका चेन्हक माला सन बनि गेल। “ह” केर आधार चेन्ह धकिया देल गेल आ एकर सुल्फी उर्ध्वाधरसँ जोड़ि देल गेल।

स्कन्दगुप्तक भिताड़ी स्तम्भ अभिलेखे, ओना तँ भारतक पूबमे अछि, मुदा ओहिमे उत्तर भारतक पच्छिम प्रकारक लिपिक प्रयोग भेल। कलाकार पच्छिमसँ आओल हेताह ताहि कारण सँ ई भेल होयत। फेर ईहो भेल जे उत्तर भारतक ब्राह्मीक पूब आ पच्छिम प्रकारक सीमा रेखा परिवर्तित होइत रहल। कन्नौजपर अधिकारक लेल राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार आ पाल राजवंशक बेच संघर्ष मोटामोटी ७५०-१२०० ई. क मध्य भेल। एहि तरा-उपरी युद्धमे गुर्जर-प्रतिहार जखन बीस पड़लथि तँ पछबरिया कलाकारक कलाकारी पूब दिस बढ़ल। तहिना पाल जखन बीस पड़लाह तखन पुबरिया कलाकार सभकेँ बेसी पच्छिम धरि रोजगार भेटलन्हि। पछबरिया ब्राह्मी नागरी बनल आ पुबरिया ब्राह्मी तिरहुता, असमी, बांग्ला आ ओड़िया। पुबरिया प्रकारक पच्छिम आरि पाल साम्राज्य, मगध आ विदेह+वज्जि निर्धारित भेल। दसम शताब्दी धरि नागरीक पुबरिया आरि बनारस निर्धारित भऽ गेल आ ओ पूर्ण रूपसँ पुबरिया ब्राह्मीसँ फराक भऽ गेल।

घियासुद्दीन तुगलकक बाद फिरोजशाह तुगलक आक्रमणसँ तिरहुत साहित्य आ कलाक क्षेत्रमे पछुआ गेल आ ओकर लिपिक बड्ड भारी नोकसान भेलै। तिरहुता लिपिक विकास ओतहि ठमकि गेलै।

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। १२९४ ई. मे जन्म आ १३०७ ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ १३२४-२५ ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन केलन्हि। मुदा एहि हारिसँ पहिने मिथिलाक

पञ्जी-प्रबन्धक स्थापनाक ओ प्रयास केने रहथि, ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य । आधिकारिक स्थापक नियुक्य भेलाह मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त। हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, मिथिलाक पण्डित लोकनि १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। ओना तँ ओहि समयमे हरसिंहदेव मिथिलासँ पलायन कऽ गेल रहथि तैयो हुनका सांकेतिक रूपमे एकर संस्थापक मानल गेल।

क्षत्रियक पञ्जी तँ आब उपलब्ध नहि अछि मुदा ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक जे पञ्जी उपलब्ध अछि तकर लिपि मात्र तिरहुता अछि आ २०म शताब्दीक पञ्जीक तिरहुता जे एहि पञ्जी सभमे अछि से १३२६ ई. (१४म शताब्दीक) क पञ्जीक तिरहुतासँ एक्को मिसिया भिन्न नहि अछि। फॉण्ट बनलाक एकर विकासक सीमा बिना रूप परिवर्त्तित भेने असीम भऽ गेल अछि आ एक्के खाँचामे कलाकार अपन कलाकारी देखा कऽ कएक डिजाइनबला अक्षर निर्मित कय सकैत छथि।

से ब्राह्मीक विकास भेल उत्तरी आ दक्खिनी प्रकारमे। उत्तरक प्रकार दू भागमे बँटि गेल, पुबरिया आ पछबड़िया। आ मोटा-मोटी १०म शताब्दीमे पुबरिया लिपि पछबरिया लिपिसँ पूर्ण रूपसँ भिन्न भय गेल। पुबरिया लिपिक सीमा मगध, अंग आ तिरहुत निर्धारित भेलै आ नागरी जे पछबरिया ब्राह्मीक रूपमे गुप्त साम्राज्यक पतन धरि प्रयागोसँ पच्छिम धरि सीमित छल ८म शताब्दीमे ई वाराणसी धरि पहुँचि गेल १२म शताब्दीमे गंगाक दक्षिणमे मगधमे पछबरिया आ पुबरिया दुनू प्रकारक प्रयोग होमय लागल। मुदा गंगाक दक्षिणमे मगधसँ पूब पुबरिया प्रकार मात्र रहलै, आ गंगाक उत्तरमे तिरहुतमे सेहो पुबरिये प्रकार मात्र रहलैक। मुस्लिम आक्रमणक बाद समस्त मगधमे पछबरिया प्रकार पसरि गेलैक मुदा १४म शताब्दी धरि (उदाहरण महाबोधि मन्दिर गया) पुबरिया लिपिक प्रयोग एतऽ पूर्णरूपसँ बन्न भय गेलैक।।

१३२६ ई. मे पञ्जी लिखबाक प्रारम्भ भेल आ तहियासँ २०म शताब्दी धरि ई तिरहुतामे बिना परिवर्तित भेने लिखाइत रहल आ ओकर ओही रूपमे फॉण्ट बनि गेलै (देखू गूगल बुक्सपर विदेह आर्काइवक पञ्जीक ११००० तालपत्र/ बसहा कागत अभिलेख, जे प्रारम्भसँ २०म

शताब्दी धरिक अछि, २०म शताब्दीक अन्तमे पञ्जी सेहो देवनागरीमे लिखल जाय लागल)। तँ तिरहुताक उद्भव आ विकासक सीमा रेखा १३२६ ई. भेल जखन तिरहुताक अन्तिम रूप निर्धारित भय गेल। पञ्जीकारक नीक-अधलाह हस्तलिपिकेँ तिरहुता फॉण्टक विभिन्न डिजाइन मात्र मानल जा सकैत अछि।

एकर ई परिणाम भेलै जे तिरहुतामे जे संस्कृत ग्रंथ लिखल जाइ छल, वा पाता चलै छल सेहो अपरिवर्तित रूपमे २०म शताब्दी धरि चलल। तुगलक आक्रमणसँ अभिलेख लिखनिहारक रोजगार खतम भऽ गेलन्हि आ जे कियो बचलाह से तालपत्र आ बसहा कागतपर लिखल अभिलेखसँ भिन्न लेखबाक क्षमतासँ रहित भय गेलाह।

छापाखानाक प्रयोगक बाद आ यूनीकोडक अंकनक बाद आब डिजाइनक आपसमे लिपि परिवर्तन सन प्रयोग सम्भव भय गेल।

मैथिलीक अष्टम सूचीमे गेलाक बाद संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ सरकारी कार्यमे मैथिलीक प्रयोग लेल केन्द्र सरकार मात्र देवनागरीक अनुमति देने अछि। पहिने देवनागरी, तिरहुता, बांग्ला, तमिल आदि लिपिमे संस्कृत लिखाइत छलै, मुदा आब सरकार मात्र देवनागरीमे संस्कृत लिखबाक आदेश देलक अछि। ओना बिहार-झारखण्ड आदिमे अखनो सांकेतिक रूपमे स्कूल, कॉलेजक परीक्षामे आ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली अहाँ देवनागरी वा तिरहुतामे लिखि सकै छी। केन्द्र सरकार संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ अन्य कार्य लेल संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, मराठी, कोंकणी, डोगरी, बोडो आ नेपाली केँ देवनागरीमे; संथालीकेँ ओल-चिकी वा देवनागरीमे; सिन्धीकेँ अरबी वा देवनागरीमे; उर्दू आ काश्मीरीकेँ फारसी लिपिमे; मणिपुरी आ बांग्लाकेँ बांग्ला लिपिमे लिखबाक आदेश देने अछि। असमी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, तमिल, तेलुगु अपन-अपन अही नमक लिपिमे लिखल जायत आ पंजाबी भाषा गुरुमुखी लिपिमे लिखल जायत।

आब फेर तिरहुताक विकास दिस घुमैत छी। गुप्त साम्राज्यक पतन धरि पुबरिया लिपिक आरि-धूरि प्रयागक लग-पासक इलाका रहय जे आठम शताब्दीमे काशी पहुँचि गेलैक। १२म शताब्दीसँ-१४म शताब्दी

धरि मगधमे पुबरियो प्रकारक प्रचलन रहलै, जकर बाद ओहि इलाकामे मात्र नागरीक प्रचलन रहल। १४म शताब्दीमे १३२६ मे पञ्जी लिखेनाइ शुरू भेल आ मुस्लिम आक्रमणक बाद तिरहुताक विकास पूर्ण रूपसँ ठमकि गेल आ ओ ओहि कालमे जाहि रूपमे रहय तही रूपमे २०म शताब्दी धरि रहल।

तिरहुता लिपिक १३२६ ई. धरि क्रमिक विकास आ अन्तिम स्वरूपक प्राप्ति

अशोकक प्रयाग आ रामपुरवा, मठिआ, पहेरिया, निग्लीव, राधिया, सारनाथ स्तम्भ लेख सभमे एकरूपता अछि, एकरा ब्राह्मीक उत्तरवर्ती उत्तर-पूर्वी प्रकार कहल जा सकैत अछि।

उत्तर-पूर्वी प्रकारमे किछु विशेषता अछि। “ख” केर नव रूप भेटबामे अबैत अछि। बोधगयाक एकटा अभिलेखमे “ख” केर आधार त्रिभुजक आकारक अछि। नव-मौर्य काल, जे अशोकक परवर्ती कालक अछि, मे “च” मे दू टा घुमघुमौआ आकृति लम्बवत रेखाक दुहू दिस बनैत अछि, मुदा दुनू घुमाव एक आकारक नहि अछि, छोट-पैघ अछि आ ताहि कारणसँ वृत्त नहि बनि पबैत अछि। महाबोधि मन्दिरक रेलिंग- बुद्ध परिक्रमा- मे अभिलेख सभाछि जाहि मे “य” आ “ज” उत्तर भारतीय प्रकारक अछि आ “ल” लटपटौआ अछि। जौगड़क फराक पाथर-अभिलेखमे मुदा बड्ड लटपटाकेँ लेखल गेल अछि जे बादमे पूर्व गुप्त अभिलेख (४म-५म शताब्दी) क पुबरिया प्रकारमे आर पुष्ट भेल। जौगड़मे “ह” केर लटपटौआ प्रकार बादमे पुबरिया प्रकारमे देखल जाइत अछि।

उत्तर-मौर्य कालक ब्राह्मीक परवर्ती अक्षर प्रकार

दशरथक नागार्जुनी खोह अभिलेख उत्तर-पूर्वी प्रकारक अछि आ तकर बाद महाबोधि मन्दिरक रेलिंग (परिक्रमा)क स्तम्भ सभपर अभिलेखमे ई सेहो देखाइत अछि।

नागार्जुनी खोह अभिलेखक लटपटौआ “ल” दर्शनीय अछि। “श” कलसी अभिलेखसँ मेल खाइए आ पुबरिया घुमौआ “श”क ई पूर्व रूप अछि (४म-५म शताब्दी)। “स” सेहो परिवर्तित अछि, उपरक नोकशी नमहर भऽ कनेक झुकि कऽ दोसर पाँति सनबनैत अछि।

महाबोधि मन्दिरक रेलिंग दशरथक नागार्जुनी खोहक५० बर्ख बादक अछि। एहिमे “क” कटार सनाछि, “ग” दू प्रकारक अछि- लटपटौआ आ कोणाकार, “प” मे बेस परिवर्तन अछि आ दूटा समकोण स्पष्ट देखाइ दैत अछि। “म” सेहो दू तरहक अछि, पहिल प्रकारमे वृत्त नीचाँ आ अर्धवृत्त ओकर ऊपर अछि, दोसर प्रकारमे त्रिभुज नीचाँ आ समकोण ओकर ऊपर अछि। “र” वक्र पाँतिक रूपमे अछि। “व” मे नीचाँ दिस वृत्तक स्थान त्रिभुज लऽ लेने अछि। “स” दू प्रकारक अछि, पहिल वामदिस कने वक्र, निचुलका नोकशी नीचाँ दिस आ दोसर मौर्यकाल सन जतय निचुलका नोकशी कने नम्हर रहैत छल। “ह” बड्ड लटपटौआ अछि जे उत्तर भारतक पूर्वी भागक ब्राह्मीक स्वरूप छल।

सारानाथसँ प्राप्त अभिलेख (०१ ई.पू. सँ ०१ ई. धरि)

उत्तर-पच्छिमक (०१ ई.पू.-०२ ई.पू.) प्रकारसँ कोनो अन्तर नहि अछि। लम्ब रेखा कने छोट भेल अछि, वक्र रेखा सभ कलाकारीककारण कोणीय भेल अछि। जँ स्वर शब्दक बीचमे अबैत अछि तँ मौर्यकालक कोणीय प्रकार लटपटौआ स्वरूप लय लैत अछि।

कुषाण अभिलेख

ब्राह्मी लिपिक उत्तर भारतीय प्रकारक पूर्वी प्रकार बोधगयाक महाबोधि गाछक नीचाँमे राखल पाथरमे प्राप्त होइत अछि। “प” केर उर्ध्वाधर रेखा छोट भेल अछि, “म” मे निचुलका भागक त्रिभुज आकार पूर्व कुषाण स्वरूपसन अछि। “श” कोणीय अछि आ एहिमे क्षैतिज रेखा वाम लम्बवत पाँतिकेँ छू नहि सकल अछि। साहेत-माहेत क बोधिसत्त्वक आकृतिपर लटपटौआ “ह” अछि आ आनठाम कोणीय “ह”। “स” मे पछुलका भाग चाकर अछि। “य” कखनो-काल अधोलिखित अछि आ एहिमे तीन फाँड़ अछि।

गुप्त युगक प्रारम्भ (४म- ५म शताब्दी)

पूर्व प्रकार “ल”, “ह”, “ष” आ “स” मे स्पष्ट अछि। एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति, चन्द्रगुप्त-२ क उदयगिरि खोहाभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा भांगल अभिलेख, कुमारगुप्त-१ क धनैदाहा अनुदान-पत्र,

कुमारगुप्त-१ क मानकुँवर अभिलेख, स्कन्दगुप्तक बिहार स्तम्भ अभिलेख, भीमवर्मनक कोसम आकृति अभिलेख आ स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख।

लिपिक प्रकारक अन्तर कोना पकड़ी?

उत्तर भारतक प्रकार आ दक्षिण भारतक प्रकार (नागरी सहितमे) अन्तर "म" अक्षरपर ध्यान देलासँ आ उत्तर भारतक पूर्वी आ पश्चिमी प्रकारमे "ष", "ल" आ "ह" पर ध्यान देलासँ लिपिक कलाकारीमे भिन्नता पकड़ाइत अछि।

तिरहुताक स्वरूप एहि तरहेँ पूर्वी प्रकारसँ बहार भेल। "ल"-एकर वाम भाग सोझे-सोझ नीचाँ दिस खसैत अछि। "ष" केर आधार कलाकार गोल बनेने छथि आ कनछियाह बिचुलका रेखासँ घुमाकय मिलेने छथि। "ह" केर आधार थकुचि कऽ छोट कयल गेल अछि आ ओकर नोकशी लम्बवत रेखामे मिला कऽ वाम दिस घुमाओल गेल अछि। "स" मे हरदम एकर वाम लम्बवर रेखाक अन्तमे घुमाव रहैत अछि, जे पहिने वक्र वा नोकशी सन रहैत छल। ई कुषाण कालक मथुरामे सेहो भेटल अछि। समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति पूर्वक प्रकारक मानक रूप अछि।

तिरहुता भारतीय लिपिक तंत्र सिद्धांत

बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त आ चतुष्कोणक प्रयोगसँ कलाकार तंत्र-मंत्र कय सकल होथि से सम्भव नहि मुदा तिरहुताक अक्षरकेँ सुन्दर बनेबामे ओ अवश्य सफल भेलाह।

ब्राह्मीक उत्तरवर्ती पूर्व प्रकार (५५० ई. सँ ११०० ई.)

बुहलर (बूलर) एहि कालक लिपिकेँ सिद्धमातृका कहैत छथि।

५५० ई.-६५० ई.

एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- नन्दनक अमौना अनुदान अभिलेख, शिवराजक पटियाकेला अनुदान अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर खोह अभिलेख, अनन्तवर्मनक नागार्जुनी खोह अभिलेख। मुख्य परिवर्तन जे तिरहुता दिस भेल ओ अछि:

-तीन फेँड़ बला "य";

-"घ", "प", "फ", "ष", "स" केर नीचाँ दिस समकोणीय

प्रवृत्ति संगे एहि सभ चेन्हमे दहिन दिस पुच्छी वा लम्ब जे पछबरिया प्रकारमे विकसितभेल तकर अभाव।

६५० ई. सँ ७०० ई.

-“अ” केर वाम अंगक उपरका भागक कनेक नमगर भय गेल काँटीक नोक (v अक्षर) जकाँ, निचुलका भाग वक्र बनि गेल आ माथपर बट्टम सन चेन्ह अर्द्धविराम सन

“आ”- दोसर वक्रमे अन्तर अर्द्धविराम सन, दहिन अंगक निचुलका भागसँ जुड़ल

“इ”- गुप्त कालक लिपिक पश्चिम प्रकार जे बिन्दु वा निचुलका वृत्त सन छलै से पैघ वक्रमे विकसित भय गेल

“उ”- निचुलका भागक क्षैतिज रेखा वक्रमे परिवर्तित भय गेल आ नमगर भय गेल आ अही रूपमे १०म शताब्दी धरि रहल आ तखनजा कय अन्तिम रूपसँ विकसित भेल

“ओ”- नमगर अर्धविराम पाँछा दिस चौरस भय गेल

“क”- पहिल बेर वाम दिस सदैव घुमाव रहय लागल, ई घुमाव ११म शताब्दीमे अर्धवृत्त बनि गेल

“ख”- अक्षरक आधारमे त्रिभुज आकृति बनल फेर ई सोझ रेखा बनल आ फेर घुमि गेल, त्रिभुजक एक भुजा अर्धवृत्त बनि गेल आ दोसर नमगर भय गेल आ वृत्तक दुनू चापकेँ छूलक।

“ग”- आधार रेखाक वक्रता प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल। ६अम शताब्दीक यशोधर्मन अभिलेखक आधार रेखा वामदिस घुमि गेल आ दहिन दिस टेढ़ भय गेल आ दहिन लम्बसँ न्यून कोण बनेलक।

“ङ”- निचुला दहिन दिसुका कोण न्यूनकोण बनि गेल आ लम्बवत सोझ रेखा गोलाइ लय लेलक

“च”- गुप्त कालक दुनू गोलाइ त्रिभुज बनि गेल जे “वी” आकार ऊपरमे लेलक, आधार रेखा वा निचुलका रेखा वाम दिस कने नमगर भय गेल।

“छ”- कोनो अन्तर नहि।

"ज"- पुबरिया प्रकारमे निचुलका प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ क्षैतिज आकार स्पष्ट छल आब लम्बवत रेखामे सेहो स्पष्ट रूपसँ गोलाइ देखाइ पड़य लागल। बिचुलका नव क्षैतिज ओतबी घुमि गेल जतेक निचुलका आधार रेखा छल। उपरका क्षैतिज रेखाक दहिन दिस "वी" आकार जुड़ि गेल।

"ञ"- कनेक लटपटौआ

"ट"- पछबरिया प्रकारसँ बेस अन्तर आबि गेल। खुजल गोलाइ आ "वी" आकृति ओहि गोलाइक उपरका भाग पर क्षैतिज रूपमे राखि देल गेल।

"घ"- आधार रेखाक गोलाइ प्रारम्भिक गुप्त कालक पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल, आब ई तीन फेँड़बला "य" सन बनि गेल।

"ठ"- पूर्वकालक मौर्य प्रकार अखनो प्रयुक्त होइत रहल।

"ड"- दूटा छोट गोलाइ बनि गेल।

"ढ"- कोण गोलाइ लय लेलक।

"ण"- आधार रेखा टेढ़ भय गेल आ ओ निचुलका भागक दहिन दिस न्यून कोण बनेलक आ वाम नोकशी नमगर भय गेल।

"त"- गुप्त कालहिमे दहिन अंगक निचुलका भाग नमगर भय गेल रहय, ई कने गोलाइ लय लेलक आ एकटा "वी" आकार ऊपरमे बनि गेल।

"थ"- उपरका भाग चकराइ लय लेलक।

"ध"- छोट चाप अर्द्ध-वृत्त मे बदलि गेल।

"न"- प्रारम्भिक गुप कालक गोलाइ बला रूप बदलि कय आधुनिक नागरी रूप लय लेलक। गोलाइ मुख्य भागसँ फराक भय गेल आ मुख्य भागसँ एकटा छोट क्षैतिज रेखासँ मिलि गेल आ कने छोट सेहो भय गेल।

"प"- कनेक आर बेशी लटपटौआ आकार लेलक आ न्यून कोण आर स्पष्ट भय गेल।

"ब"- "ब" केर स्थान "व" लय लेलक।

"भ"- "भ" आ "ह" केर बीच अन्तर खतम भय गेल,

पछबरिया प्रकार मे ई पहिनहिये भय गेल छल।

“म”- न्यून कोण आर तीक्ष्ण भय गेल आ तकर परिणाम भेल जे दहिना अंग नीचाँ दिस बढ़ि गेल।

“य”- “य” दू प्रकारक, पहिल दू फैँड़बला, एकर निचुलका हीसमे न्यूनकोण बनैत अछि आ दोसर प्रकारमे न्यूनकोण ओतेक स्पष्ट नहि अछि मुदा दहिन भागक अंग नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल अछि।

“र”- निचुलका छोरपर “वी” वा तीरक आकृतिक जे पहिलुक्का अभिलेख सभक पछबरिया प्रकारमे सेहो छल। ई “ड” केर छोट रूपसँ मिलानी खाइत अछि।

“ल” दू प्रकारक अछि। पहिल प्रकारमे वाम अंगक वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल अछि आ सभसँ नीचाँ जा कय कनिये बाहर दिस वक्र रूप लैत अछि । दोसर प्रकारमे वाम अंगक वक्रपर नोकशी अछि जे नमगर भऽ कऽ नीचाँ जेबाक बदला आन्तरिक आकार लैत अछि। ई मोटा-मोटी आजुक तिरहुता आ देवनागरी सन भऽ जाइत अछि।

“व”- एतय ओही तरहक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि जेना “ख” केर आधारमे त्रिभुज बनैत अछि। त्रिभुजक दुनू भुजा वक्र बनि जाइत अछि, तेसर नमगर भऽ जाइत अछि। अक्षर ऊपर “वी” आकार बनैत अछि।

“श”- अक्षरक उपरका भाग पूर्व गुप्त कालमे वक्र छल, आब जा कऽ उपरका भाग वक्रक रूप लैत अछि, निचुलका दहिन अंग ऊपर दिस नमगर भेल अछि।

“ष”- ई तीन प्रकारक अछि- पहिल प्रकारमे रूप वक्रित अछि, दोसर प्रकारमे वक्र फोंक “वी” आकृतिक रूप लैत अछि, तेसर प्रकारमे “वी” आकृतिक उपरका भाग फराक भऽ जाइत अछि आ “वी” आकृति नहि रहि जाइत अछि (ई प्रकार भेटैत अछि ६अम सँ ९अम शताब्दीक उत्तर-पूर्वी अभिलेख सभमे)।

“ह”- अक्षरक दहिन अंगमे वक्र आ नोकशीक नमगर होयब आ शीर्षपर “वी” आकृति (ढबकल सन) आ अखनि धरिक क्षैतिज आधार

रेखा कने टेढ़ भऽ जाइत अछि।

आठम शताब्दी

एहि कालक मुख्य अभिलेख जाहिमे ब्राह्मीक उत्तरकालक पुबरिया रूप फराक होइत अछि-

जीवितगुप्त २ केर देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख, धर्मपालक खलीलपुर अनुदान पत्र आ धर्मपालक समयक बोधगया आकृति अभिलेख।

मुख्य बिन्दु अछि।

स्वर- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

क, ग, च, ज, ट, ठ, ड, द, ध, न, भ, म, य, ह- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

ण- दहिन वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल।

त- नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल, निचुलका छोरपर बड्ड छोट वक्र।

“थ”- “वी” आकृतिक छोरक नमगर भेलासँ उपरका भाग चकरगर भेल।

“प” दू प्रकारक- पुरनका रूप जाहिमे न्यूनकोण अखनो स्पष्ट अछि। नवका रूपमे न्यूनकोण उपस्थित तँ अछि मुदा स्पष्ट नहि अछि आ एकर स्थान नीचाँ दिसुका दहिन लम्ब रेखा लऽ लेने अछि।

“ल”- न्यूनकोण बड्ड छोट भऽ गेल अछिआ दहिन लम्ब रेखा नीचाँ दिस चल गेल अछि।

“श”- ई दू प्रकारक अछि। पूर्व रूप वक्र संग अछि। बादक रूप ९अम शताब्दीक दिघवा-दुभौली अनुदान सन अछि।

“ष”- वाम अंगक निचुलका भाग लटपटौआ अछि आ वाम भागक लम्ब सँ आगाँ चलि जाइत अछि।

अफसड़ अभिलेखमे सभ ठाम दन्त “स” केर प्रयोग भेल अछि।

धर्मपालक बोधगया अभिलेख

“श” तीन प्रकारक अछि- पहिल प्राचीन रूप जाहिमे उपरका भाग गोलाइ लेने अछि। बादक रूप बिन डण्टाक अछि। एकटा बिचुलका

रूप अछि जाहिमे डण्टा सन आकृति छै, मुदा ओ न्यूनकोणकेँ दक्षिण उर्ध्वाधर रेखाक बदलामे नीचाँमे छुबैत अछि।

"ज" मे उपरका क्षैतिज रेखा बिला जाइत अछि आ "वी"आकृति ओकर बदलामे आबि जाइत अछि। बिचुलका क्षैतिज रेखा एकटा वक्र अछि।

"न" दू प्रकारक- पुरनका प्रकार फानी सन छल। आब ई गुप्त आ तिरहुताक बीचबला आकार लऽ लैत अछि।

"ण"- आधार रेखा बिला जाइत अछि।

"ह"- निचुलका दिसुका न्यूणकोण बेसी स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

धर्मपालक बाद देवपालक अन्तर्गत तिरहुत प्रदेश रहल। मुदा तकर बाद गुर्जर-प्रतिहार सम्राट तिरहुत छीनि लेलनि, बिग्रहपाल -१ आ नारायणपाल क शासनकालमे।

ब्राह्मीक परवर्ती पुबरिया प्रकार (९अम शताब्दी सी.ई.)

एहि सभमे ई सभ मुख्य प्रकार अछि:

१.देवपालक मुंगेर अनुदान पत्र

२.देवपालक समयक घोसरवा अभिलेख

३.नारायणपालक बादल स्तम्भ अभिलेख

४.नारायणपालक विष्णुपाद मन्दिर अभिलेख

५.नारायणपालक भागलपुर अनुदानपत्र्

६.महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान-पत्र

७.महेन्द्रपालक रामाज्ञा अभिलेख

घोसरवा अभिलेख

अ/आ- उपरका भाग अखनो पूर्ण रूपसँ विकसित नहि भेल अछि।

इ- दूटा वृत्त वा बिन्दु ऊपरमे आ काटबला वक्र नीचाँमे।

ई-समकोण त्रिभुजक रूप लऽ लेने अछि।

ख- अखनो वाम अंगक नीचाँ दिस "वी" आकृति लेनहिये अछि।

च- चकराइ बढ़ि गेल।

ज- पुरातन रूप- बिचुलका क्षैतिज रेखा कने नीचाँ दिस टेढ़ भेल आ निचुलका क्षैतिज रेखा एकटा छोट वक्रमे खतम होइत अछि।

ट/ ठ केर दहिन अंग नहि देखाइ पड़ैत अछि।

ण- आधार रेखा पूरा-पूरी खतम भऽ गेल।

थ- उपरका भाग चाकर भऽ गेल।

द/ ध- निचुलका रेखा नीचाँ दिस वक्र भऽ गेल अछि।

न- फानी सन पूर गुप्त काल आ तिरहुताक बीचक रूप। फानी अक्षरक मुख्य अंगसँ विलग भऽ गेल।

प- पुरातनरूप नीचा दिस कोनो वक्रता नहि। एकटा अधिक कोण आ एकटा नूनकोण बदलामे निचुलका भागमे दूटा समकोण बनि जाइत अछि।

भ-नीचाँ दिस टेढ़

म- फानी अखनो नहि बनल अछि।

य- न्यूनकोण चपा गेल अछि आ तिरहुता स्वरूप प्राप्त कऽ लेने अछि।

ल- आधाररेखा पूरा-पूरी दबि गेल अछि।

व- न्यूनकोणक बदलामे दहिन उर्ध्वाधर सोझ रेखाक नमगर रूप आबि गेल।

ष- उपरका रेखा टेढ़ भऽ गेल।

स- आधार रेखा फेर क्षैतिज भऽ गेल आ उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ भऽ गेल।

ह- पुरातन रूप, न्यूनकोण अखनो दोसर निचुलका रेखा नहि बनल अछि।

विष्णुपद मन्दिर अभिलेख

"इ" दू प्रकारक- पहिल प्रकारमे दूटा वृत्त ऊपरमे आ एकटा कटाव नीचाँमे। दोसर प्रकारमे ऊपरमे एकटा छोट क्षैतिज रेखा आ दूटा वृत्त नीचाँमे।

"ख" तिरहुताक आकारक रूप लऽ लेने अछि।

"घ" अखनो नीचाँमे न्यूनकोण बनेने अछि।

“ट”- दहिन दिसुका उर्ध्वाधर सोझ रेखा पूरा-पूरी बिला गेल।

“ठ”- अखनो पुरने रूप अछि।

“प”- दू प्रकारक। पुरनका रूप जतऽ कोण अखनो अछिये। दोसर रूपमे तिरहुताक लटपटौआ रूप।

“म”- आधार रेखा विलुप्त भऽ गेल।

“श” आ “ष” क रूप फानीबला आ अखुनका रूपक बीचबला रूप लेने अछि।

नारायणपालक भागलपुर अनुदान

अ/ आ- पूरापूरी तिरहुता रूप, एतय धरि जे छोटका रेखा जे दहिना लम्ब रेखाक अर्द्धविराम रूपी कटावसँ मिलैत अछि, नीचाँ दिस टेढ़ भेल अछि।

“उ”- एहिमे एकटा उपरका रेखा बनैत अछि आ लम्बरूपी रेखावाम दिस वक्र भऽ जाइत अछि।

“क” केर त्रिभुज चाकर भऽ गेल अछि।

“ख” तिरहुता सन लटपटौआ भऽ गेल अछि।

“घ” मे न्यूनकोण खतम भऽ गेल आ तिरहुता केर आकार लऽ लेलक अछि।

“च”- उपरका भाग पातर भऽ गेल अछि।

“ज”- बिचुलका क्षैतिज भाग दू टा सोझ रेखामे बदलि गेल अछि आ अधिककोण बनबैत अछि।

“ट”- उपरका रेखाक दहिन छोरसँ नीचाँ दिस छोटका रेखा जाइत अछि।

“ण”- तिरहुता प्राचीन रूप। दूटा छोट रेखा लम्ब सोझ रेखाक वाम दिस जा कऽ मिलैत अछि।

“त”- ई बदलि गेल अछि, एहिमे एकटा उपरका रेखा आ एकटा लम्ब रेखा समकोण पर अछि संगहि एकटा वक्र लम्ब रेखाक वाम दिस जुड़ि गेल अछि, जेना नागरीमे अछि।

“थ”- तिरहुता सन उपरका वक्र खुजि गेल अछि।

"ध"- उपरा भाग खुजि गेल अछि।

"न"- पुरातन फानीबला रूप, फानी नीचाँ दिस झुकल।

"प"- उपरका दिस पातर भेल।

"फ"- उपरका कम चाकर भेल।

"म"- सभरूप फाने सन।

"ल"- अन्तिम रूपसँ आधार रेखा थकुचा गेल अछि।

"श"- सभ प्रकार फानी सन।

"ष"- पुरातन रूप, उपरका आ निचुलका भाग बराबर, दोसर मे उपरका भाग कम चाकर।

प्रतिहार नरेश महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान (गोपालगंज)

एहिमे पुबरिया प्रकारक विशेषता भेटैत अछि जेना च पतरा गेल, ज लटपटा गेल, थ- तिरहुताक पूर्व रूप बुझाइत अछि, फानीबला "म" अछि, "श"मे फानी लम्ब रेखासँ मिज्झर होइत अछि, "ष" मे उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ होइत अछि। ई अनुदान पूब आ पच्छिमक मिश्रित रूप प्रस्तुत करैत अछि।

१०म शताब्दीमे पैघ साम्राज्य सभ खतम होइत गेल आ तेँ अभिलेखो नहियेक बराबर अछि। नालन्दा आकृति अभिलेख एहि कालक अछि जाहिमे "भ" केर पुरान रूप देखबामे अबैत अछि। "श" केर परवर्ती रूप देखाइत अछि। बोधगया केर आकृति पर अभिलेखमे सेहो भ केर पुरान रूप भेटैत अछि आ श केर परवर्ती रूप सेहो। ख केर रूप तिरहुता सन अछि।

तिरहुता लिपिक विकासक अन्तिम चरण

किछु लिपि जे अखन धरि नहि पढ़ जा सकल अछि

(१)- हड़प्पा लिपि

(२)- अलंकृत ब्राह्मी, भारतकसभ भागमे छोट-छोट अभिलेख एहि लिपिमे अछि, मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल।

(३)- शंख लिपि- एकर अक्षर सभ शंख सन अछि तेँ एकर ई नामकरण भेल। ई सेहो मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल। (**कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे**

तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि।)

(४)- ब्राह्मी सन एकटा लिपि जे माटिक मोहर सभपर पूर्व भारतक चन्द्रकेतुगढ़ आ तामलुकसँ भेटल्;अ अछि।

(५)- खरोष्ठी सन दहिनसँ वाम लिखल जायवला एकटा लिपि जे अफगानिस्तानसँ भेटल अछि।

तिरहुताक विकासक अन्तिम चरण

किछु अक्षर पहिने तिरहुताक रूप लऽ लेलक तँ किछु कने बाद। किछु अभिलेखमे किछु अक्षरक प्रयोगे नहि भेल। अनुलग्नक-५ मे तिरहुता रूपक क्रमिक स्थिति देखाओल गेल अछि। कैथी, तिब्बती आ देवनागरी लिपि अही तरहेँ अपन वर्तमान रूपमे आओल जे अनुलग्नकमे देखाओल गेल अछि। किछु विद्वान हर्षवर्द्धनक बादक समयमे ओकर तिरहुतक मंत्री अर्जुन द्वारा कन्नौजक राजा बनब आ तिब्बतक बौद्ध यात्री सभकेँ तंग करबाक चर्चा केने छथि आ प्रत्युत्तरमे तिरहुत पर तिब्बतक कब्जाक चर्चा करैत छथि। आधुनिक विद्वान ओहिपर शंका व्यक्त करैत छथि। तिब्बतक राजनैतिक प्रभुत्वपर तँ शंका अछि मुदा सांस्कृतिक रूपसँ निम्न तथ्य तिब्बतक वज्रयानक मिथिलामे उपस्थिति देखबैत अछि। बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर, उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा। मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली नाहर भगवतीपुर भुवनेश्वरी मन्दिर (मधुबनी) मे सेहो अछि, प्रायः बौद्ध भिक्षु लोकनिक ई तपस्या स्थली होयत। फेर बौद्ध सिद्ध सरहपाद जे लिखै छथि- सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ, मण्ड पिबन्तों बिसरउ एमइउ। ओ सिद्धिरस्तु आ एहि विचार कि माँड़ पीने बुद्धि मन्द होइत अछि दुनूक चर्च करैत छथि जाहिसँ हुनकर बौद्ध धर्मक मैथिल होयबाक प्रमाण भेटैत अछि, हुनकर जे फोटो तिब्बतसँ भेटैत अछि ओहिमे हुनकर फोटोक नीचाँमे तिब्बती लिपिमे वर्णन अछि।

७म शताब्दी आ बादक किछु तिरहुता अभिलेख

अन्ध्राठाढी अभिलेख (श्रीधरदासक आंध्रा-ठाढ़ी अभिलेख), मधुबनी, बुद्धमूर्ति अभिलेख (कोर्थु), विष्णुमूर्ति अभिलेख (लदहो), १२म शताब्दीक सिमरौनागढ़क तिरहुता पाथर-अभिलेख, १९म शतीक ब्रह्मपुरा शिलालेखमे तिरहुताक आदर्श रूप, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीचक गौरीशंकर स्थान, गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख, बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि, ताहि युगक तिरहुताक अभिलेख। मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे तिरहुताक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। पौराणिक कथामे समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतहि भेल छलन्हि। बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर (जिला अररिया) लग तिरहुताक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र 'एक छलीह महारानी' उपन्यास सेहो लिखने छथि। बाइसी-बसैटी, अररिया तिरहुता ताम्रपत्र- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे ताम्र-पत्रपर कीलित अछि, जे कारी रंग सँ पेंट कऽ देल गेल अछि आ शिलालेख सन लगैत अछि।

जलज कुमार तिवारी आ एस. कृष्णामूर्ति २०१९ ई.मे प्रकाशित अपन आलेखमे निम्न तिरहुता अभिलेख सभक वर्णन दैत छथि जे अखन धरि कोनो पोथीमे नहि आयल छल। चेचर गाम (वैशाली) मे बुद्ध मूर्तिपर अभिलेख भेटल अछि जे तिरहुता लिपि आ संस्कृतमे अछि (९अम शताब्दी)। तारा मूर्ति, जगतपुर बरुआरी (सुपौल) जे सहरसा म्यूजियममे राखल अछि, तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख एततसँ भेटल अछि (१० म शताब्दीक)। तारा मूर्ति, दभैछा (वैशाली) मे

तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख भेटल अछि (१० म शताब्दीक)। पिपरौलिया विष्णु आकृति (मूर्ति), दरभंगा, तिरहुता लिपि. संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी)। गाम- भच्छी (बहेरी लगक जिला दरभंगा, मधुबनीक भच्छीसँ भिन्न), तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म-११म शताब्दी)। कण्दाहा (सहरसा) क पाथर अभिलेख, ओइनवार कालक राजा नरसिम्हदेवक आदेशसँ वंशधर ब्राह्मण द्वारा (तिरहुता १५मशताब्दी, भाषा संस्कृत)। मनसा आकृति (भैरवस्थान, मुजफ्फरपुर)- तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषामे लिखल अभिलेख (१५ म शताब्दी)। बुद्ध मूर्ति, कोर्थु दरभंगा, तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी)। एकर अतिरिक्त ओ पहिल शताब्दीक एकटा ब्राह्मी अभिलेखक चर्च सेहो करैत छथि [गाम पखौली जिला वैशाली (स्तम्भ अभिलेख) (ब्राह्मी लिपि, पहिल शताब्दी)]। तीनटा अशोक स्तम्भपर, जे कोल्हुआ (मुजफ्फरपुर)मे भेटल अछि, बादमे कियो अभिलेख खचित केने छथि। ओहिमे दूटा अभिलेख ७म शताब्दीक अछि जे नागरी लिपि आ संस्कृत भाषामे अछि आ तेसर ५म शताब्दीक अछि जे संस्कृत भाषामे आ ब्राह्मी लिपिमे अछि। कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि, जे अखन धरि नहि पढ़ल जा सकल अछि। (*जलज कुमार तिवारी, एस. कृष्णामूर्ति, मिथिला भारती, भाग-६, अंक १-४, २०१९ ई.*)

मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र (विद्यादेव कमौली प्रशस्ति), गदाधर मन्दिर अभिलेख (गदाधर मठ गया), गंजम ताम्रपत्र, लोकनाथक दानपत्र, भागलपुर, मुंगेर आ नालन्दाक दानपत्र, बादल स्तम्भ अभिलेख, विश्वरूप सेनक मदनपाद दानपत्र, अशोकाचलक बोधगया अभिलेख, वल्लालसेनक नैहाटी अभिलेख, ढाका अभिलेख (ढाका मूर्ति अभिलेख), देवपारा प्रशस्ति, अनुलिया आ साहित्य परिषद दानपत्र, भुवनेश्वर, सुन्दरवन, वेलवा आ बोधगया अभिलेख क्रमसँ देवनागरी आ तिरहुताक बीचमे फाँक आनि देलक।

उपसंहार

तेसर शताब्दी ई.पू. मौर्य, दोसर आ पहिल शताब्दी ई. पू. शुंग, पहिल सँ तेसर शताब्दी शक/ कुषाण, चारिमसँ छअम शताब्दी- गुप्त, सातमसँ ९अम शताब्दी सिद्धमातृका आ तकर बाद तिरहुता, एहि क्रममे तिरहुताक विकास हम देखि सकैत छी। तंत्रक योगदानसँ आ तिब्बती लिपिक प्रभावसँ तिरहुता अलंकृत भेल। मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास मे राजेश्वर झा जी किछु पुरातन तथ्यसँ अपनाकेँ दूर नहि कऽ सकला, जेना ओ नहि फरिछा सकला जे ब्रह्मी पूर्व पाणिनी व्याकरणाचार्य लोकनि द्वारा प्रयुक्त होइत छल आ पाणिनीक व्याकरणमे ओ अशुद्ध भऽ गेल आ तखनसँ एकर नाम ब्राह्मी भऽ गेल। ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा प्रयुक्त हेबाक कारणे ब्रह्मी नाम भेलपर जिदियायल छथि। हुनकर अवधारणा जे वैदेही लिपिसँ ब्राह्मी (जकरा ओ ब्रह्मी लिखै छथि) बहरायल सेहो भ्रामक अछि। मिथिलामे शंख लिपिमे सेहो छोट-छीन अभिलेख भेटल अछि, जकर वर्णन ऊपर कयल गेल अछि, जे हड़प्पा लिपि जेकाँ पढ़ल नहि जा सकल अछि आ ब्राह्मीमे सेहो अभिलेख भेटल अछि, से हुनकर कथन जे सोझे हड़प्पासँ लोक विदेह आयल विदेघ माथवक संग (शतपथ ब्राह्मण) आ एतऽ वैदेही लिपि शुरू कऽ देलक, से मान्य नहि अछि। से सगर भारतमे जे परम्परा छल जे ब्राह्मीमे पैघ अभिलेख लिखल जाइत छल आ नाम आ हस्ताक्षर लेल शंख लिपिक प्रयोग कएल जाइत छल से मिथिलोमे भेटल अछि। राजेश्वर झा तंत्र-सिद्धांत आ एकर तिरहुता लिपिपर प्रभावक सेहो जरूरति सँ बेशी प्रभाव देखेने छथि, जखन कि ओकर प्रभाव किछु सोझे आ किछु तिब्बती लिपिक माध्यमसँ पड़ल मुदा ओ ओहिसँ अलंकृत मात्र भेल। हुनकर ई कथन जे शब्दकल्पद्रुममे देल लिखबाक पद्धतिसँ बांग्ला लिपि नहि वरन् मात्र मिथिलाक्षर (तिरहुता) लिखल जा सकैत अछि, सेहो भ्रामक अछि। बांग्ला वा मिथिलाक्षर वा तिब्बती वा देवनागरी सभ ब्राह्मीपर आधारित अछि आ ई एहि तरहेँ बूझल सा सकैत अछि जे रोमन लिपिमे एकसँ एक फॉण्ट छै जे कखनो अहाँकेँ अरबी सन बुझायत कखनो लटपटौआ, आ सभ एक दोसरामे परिवर्तनीय अछि। शब्दकल्पद्रुममे देल विधि तिरहुते नहि बांग्लो लेल उपयुक्त छल, छापाखाना एलाक बाद जेना रोमन पूर्ण रूपसँ संयुक्ताक्षर खतम कऽ लेलक तहिना बांग्ला बहुत रास

संयुक्ताक्षरकेँ खतम कऽ लेलक। आ ओहि नवका रूपकेँ राजेश्वर झा जी शब्दकल्पद्रुमसँ जोड़बाक गलती केलन्हि। राजेश्वर झाकेँ खरोष्ठी लिपिक सम्बन्धमे सेहो भ्रम छन्हि। खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिस लिखल जाइत अछि मुदा ई पूर्ण रूपसँ भारतीय लिपि छल, वएह स्वर व्यंजन (कचटतप)। ब्राह्मीसँ किछु चेन्ह कम भेलाक कारण, जखन अभिलेख प्राकृतसँ संस्कृतमे लिखल जाय लागल, खरोष्ठी संस्कृतक समासयुक्त अभिलेखक लेखन लेल अनुपयुक्त भऽ गेल आ खतम भऽ गेल आ कोनो भारतीय लिप एहिसँ बहार नहि भऽ सकल।

आधुनिक तिरहुताक रूपक विकास नारायणपालक भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपालक दानपत्र, महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मनक वेलवा दानपत्र, लक्ष्मणसेनक तर्पण निधि दानपत्र सँ विकसित होइत पक्षधर मिश्र कृत विष्णुपुराण आ १३२६ ई. सँ प्राप्त मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक पञ्जीमे आबि कऽ समाप्त भऽ जाइत अछि। जे किछु छोट-मोट परिवर्तन लेखकक व्यक्तिगत लेखनीक कारण छल से छापाखाना एलाक बाद खतम भेल। रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) तिरहुतामे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केलन्हि।तकरा बाद कम्प्यूटर फॉण्टमे एकरूपता आबि गेल आ से सम्भव भेल देवनागरी यूनीकोड (मंगल), बांग्ला यूनीकोड (वृन्दा) आ तखन तिरहुता यूनीकोडकेँ आधार बनेलासँ। छापाखानामे दिक्कति रहै, जे किछु रूपकेँ ओतय छोड़य पड़ैत छलै, आ घोंघाउज होइत छल जे एहि तिरहुताकेँ सीखि कऽ पाण्डुलिपि नहि पढ़ल जा सकैए। कम्प्यूटरमे एक्के आधारपर विभिन्न फॉण्टक निर्माण भेलासँ विभिन्न फॉण्ट विभिन्न तरहक लेखन रूपकेँ अंकित करैत अछि आ ओ सभ आपसमे परिवर्तनीय होइत अछि। से सभ १३२६ ई. क बादक सभ तरहक परिवर्तन (संयुक्ताक्षर सहित), जे परिवर्तन नहि वरन् लेखनक विभिन्न स्टाइल छल, क समावेश आब सम्भव भऽ गेल अछि।

अनुलग्नक १: कैथी लिपिमे मैथिलीक किछु उदाहरण (साभार जीनोम मैपिंग आ जीनियोलोजिकल मैपिंग, मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध भाग-१ आ २ , श्रुति प्रकाशन, २००८, २००९)

अनुलग्नक २: मिथिलाक कर्ण कायस्थक तिरहुता लिपिमे लिखल किछु पात (साभार मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)

अनुलग्नक ३: लर्न मिथिलाक्षर- गजेन्द्र ठाकुर

अनुलग्नक ४: देवनागरी: तिब्बती: तिरहुता

अनुलग्नक ५: ब्राह्मीसँ तिरहुता धरि लिपिक विकास

[अनुलग्नक एहि क्रममे देल अछि, अनुलग्नक-४ (एक पन्ना) फेर अनुलग्नक-५ आ तकरा बाद अनुलग्नक- १-२-३]

संदर्भ:

१. *जलज कुमार तिवारी, एस. कृष्णामूर्ति, मिथिला भारती, भाग-६, अंक १-४, २०१९ ई.*

२. हर्मन कुल्के आ दीतमार रोथरमण्ड, अ हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, २००४

3. A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century (2009)

4. Buhler, J.G.: Indian Paleography

5. Cunningham, A. : Inscriptions of Ashoka, Cpoins of Ancient India

६.मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास- राजेश्वर झा, १९७१

मैथिली आ आन पुबरिया भाषा

मैथिली आ असमिया

मैथिली जकाँ असमियामे सेहो ह्रस्व इ दीर्घ ई, आ ह्रस्व उ दीर्घ ऊ केर उच्चारणमे कोनो खास अन्तर नहि होइत अछि। मुदा असमिया ऐ केर उच्चारण ओइ आ औ केर उच्चारण ओउ होइत अछि। पहिल तँ मैथिलीसँ भिन्न मुदा दोसर मैथिलीक समान।

मैथिलीमे जेना “अ” बाजल जाइत अछि असमियामे तेना “आ” बाजल जाइत अछि। असमियाक “अ” केर उच्चारण मैथिलीमे नहि अछि।

असमिया “च” आ “छ” मैथिलीक “स” सन बाजल जाइत अछि। असमियाक “ज” “झ” आ “य” मैथिलीक “ज” सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो बहुत ठाम “य” केर उच्चारण “ज” सन होइत अछि।

असमियामे मूर्धन्य आ दन्त दुनू दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि। ट. ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न एहि सभमे उच्चारणक दृष्टिसँ कोनो अन्तर नहि होइत अछि, सभटा दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि।

श, ष, स तीनू “स” सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे “ष” कखनो काल “ख” सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो “श” आ “स” “स” सन उच्चरित होइत अछि।

“श” “ष” आ “स” “र” केर संग वा दू स्वरक बीचमे रहला पर एकटा तेसरे ढंगसँ उच्चरित होइत अछि, जकर समान मैथिलीमे कोनो उच्चारण नहि अछि।

असमियामे “जँ संयुक्ताक्षरसँ शब्दक अंत होइत अछि तँ ओ अकारान्त उच्चरित होइत अछि। माने “ञ” केर उच्चारण “न” सन होइत अछि।

मैथिली	**असमिया**
ऐ (अइ)	एइ
चाह	साह
हमर	मोर
कनियाँ	परिवार
परिवार	संसार

बहीन	मनी
जलखै/ जलपान	जलपान
दही	दोइ
नारिकेलक लड्डू (लड़ू)	नारिकलर लारू
सुआद (सोआद)	सोआद
नीक (भल)	भाल
बेस (बड्ड)	बेस
खाउ	खाओक
लिअ	लओक
जाउ	जाओक
करू	करक
अपने	आपुनि
करबाक/ करू (करक)	करक
जएबाक (जाउ)	जाओक
अहाँ	आहा
धानक	धानर
दिअ	दियक
दे	दे
बाड़ीमे	बाड़ीत
औषध	औसध
नेबू (नेबो)	नेमु
कथा (गप)	कथा
एक बेर	एबार
दुइ	दुइ
चारि	सारि
मते (अनुसारे)	मते
लगाति	लगत
खेनाइ	खा
तूँ (पुरातन-तोइ)	तोइ

आइ-काल्हि	आजिकालि
करह	कर्अ
कतऽ	कोत
नहि (नइँ)	नाइ
चाहक पात	साह पात
बाँस	बाँह
नोकसान	लोकसान
बौस्तु	बस्तु
आनौं (आनी)	आनौं
करौं (करी)	करौं
लिखौं (लिखू)	लिखौं
एक बेर	एबार
आबह	आह
टाका-पाइ (पइसा)	टका-पइसा
के	कोन
परिवार	परियाल
छौरा	लोरा
रखलौं	राखिसों
र्ाति	राति
बजे	बजात
प्रायः	प्राय
भाराक घर	भाराघर
डेढ़ हजार	डेर हेजार
बेसी	बेसि
पचास	पसास
हाथी	हाँती
हरिण	हरिणा
पोखरि	पुखुरि

असमियामे कोनो शब्द पर जोर देबाले ––हे जोड़ि कऽ बाजल जाइत अछि। असमियामे –जनी स्त्रीलिंग वाचक प्रत्यय तँ ––जन पुल्लिंग वाचक प्रत्यय अछि।

असमियामे बहुवचन बनबै लेल तीन प्रकारक विभक्ति लगैत अछि। "तुमि", "तेओँ", "आपुनि" क संग -लोक, तुच्छार्थबोधक विशेष्य पदक संग -बोर, "तइ", "सि", "एइ", "ताइ" सर्वनाम आ संबंधवाचक विशेष्य पदक संग "हैंत" क प्रयोग होइत अछि।

एकवचन	**बहुवचन**
तुमि	तोमालोक
आपुनि	आपोनालोक
तेओ	तेओंलोक
तइ	तहँत
सि	सिहँत
एइ	एइहँत
ताइ	ताइहँत/ सिहँत
लोरा	लोराबोर
किताप	कितापबोर
घर	घरबोर

असमियामे "ई"/"एकरा" लेल "एइ" आ "ओ"/"ओकरा" लेल "सेइ" प्रयुक्त होइत अछि। लागत/ पड़त लेल असमियामे लागिब प्रयुक्त होइत अछि।

असमियामे प्रश्नवाचक वाक्यमे जाहि शब्द पर बलदेबाक रहैत छैक ओहिमे ––नो जोड़ल जाइत छैक। धातुक संग ––ओवा जोड़ि कऽ भूतकाल वाचक विशेषणक निर्माण होइत अछि।

मूल धातुक संग ––आ जोड़ि कऽ क्रियावाची संज्ञा बनाओल जाइत अछि। असमियामे कर्मवाच्यक ब्रिया बनेबा लेल धातुमे ––आ जोड़ि कऽ आ फेर ––हय वा ––जाय केर प्रयोग कयल जाइत अछि।

मैथिली सन असमियामे सेहो क्रिया कालक अनुसार बदलैत अछि।

मैथिली आ बांग्ला

मैथिली	**बांग्ला**
अपने	आपनि
नै (नहि)	नय
छी	आछि/ छि
काज	काज
इनार	इनार
करै (करैत) छी	कोरेछि
गेल छलौं (छलहुँ)	गियेछिलाम
बाजू नै	बोलबेन ना
रान्हल	रान्ना
की	कि
संगे	शंगे
चाह	चा
दू टा	दुटो
ई सब	एशब
सिंघाड़ा	शिङाड़ा
कोन	कोन
हाथ	हात
अखन	ऐखोन
पाँचटा	पाँचटा
अच्छा	आच्छा
छथि	आछेन
छी	आछि
हुअय	आछो
करू	कोरून

चाही	चाइ
खोलै छी	खुलछि
कोनो	कोनो

बांग्ला "अ" ओड़िया सन "ओ" उच्चरित होइत अछि।
मैथिली सन इ/ ई आ उ/ऊ केर ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणमे भेद नहि अछि आ ऐ मैथिलीमे अ+इ आ बांग्लामे ओ+ई उच्चरित होइत अछि। औ बांग्लामे ओ+उ उच्चरित होइत अछि।
"न" आ "ण" केर उच्चारण बांग्लामे एके रङ होइत अछि। मैथिलीमे "ण" केर उच्चारण कखनो काल "ड़" होइत अछि (गणेश=गड़ेस)।
व/ ब एके रङ "ब" (मैथिली जकाँ) सन उच्चरित होइत अछि।
आश्विन मैथिलीमे लिखलो आ बाजलो "आसिन" जाइत अछि मुदा बांग्लामे लिखल आश्विन आ बाजल आश्शिन जाइत अछि।
तहिना :-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि	**बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि**
अन्वेषण	अन्नेशन
श्वास	शाश
उच्छवास	उच्छास
अक्षर	अक्खोर
पद्म	पद्दो
विस्मय	बिश्शय
उज्जवल	उज्जल

फेर बांग्लामे एना लिखल आ फराकबाजल सेहो जाइत अछि:-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि	**बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि**
संस्हा	शंस्था
स्हान	स्थान

सुस्ह्	शुस्थो
असुस्ह्	अशुस्थो

बांग्लामे कोनो शब्द पर विशेष बल देबाकलेल --तो जोड़ल जाइत अछि। बांग्लामे पूर्व निर्दिष्ट वस्तु लेल प्रयुक्त वस्तुवाचक संज्ञा/ सर्वनामक एकवचनमे --टा --टि आ बहुवचनमे --गुलो, -गुलि जोड़ल जाइत अछि। बांग्लामे संख्यावाचक शब्दक संग --टा, -टि, -टे, -टो जोड़ल जाइत अछि मुदा --गुलो, -गुलि केर प्रयोग नहि होइत अछि।

बांग्लामे "संग" आ "लेल" सन अव्यय लेल सम्बन्ध विभक्तिक प्रयोग होइत अछि जेना:-

चायेर शंगे- चाहक संग

आमार शंगे- हमरा संग

आमार जोन्ने- हमरा लेल

बांग्लामे सर्वनामक सम्बन्धवाचक रूपबनेबा लेल सर्वनामक तिर्यक रूपमे --देर जोड़ल जाइत अछि।

आमा-आमादेर-हमर

आपना-आपनादेर-अहाँक

तोमा-तोमादेर- तोहर

एना-एनादेर-हिनकर

वर्त्तमान काल आज्ञार्थकक बाद --ना प्रयोग जोर देबा लेल कयल जाइत अछि।

देखू ने- देखुन ना

कोनो शब्द पर बल देबा लेल मैथिलीमे द्वित्व+एकार केर प्रयोग होइत अछि जेना- कम्मे, एक्के। बांग्लामे ई प्रभाव --इ युक्त भेलासँ अबैत अछि जेना-कमइ।

मैथिलीमे "अछि" केर नकारात्मक "नहि अछि" प्रयुक्त होइत अछि मुदा बांग्लामे "आछे" केर नकारात्मक लेल मात्र "नेइ" प्रयुक्त होइत अछि।

अपूर्णकालिक क्रियारूप मे जँ धातु स्वरांत होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपक संग कालवाची प्रत्यय --च्छ जोड़ल जाइत अछि। जँ धातु

व्यंजनान्त होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपमे –-छ जोड़ल जाइत अछि। कालवाचक प्रत्यय लगेलाक बाद पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि।

मैथिली	**बांग्ला**
हम अबै छी	आमि फिरिछि
हम जाइ छी	आमि जाच्छि
ओ सब आबै छथि	उनि फिरछेन
अहाँ जाइ छी	आपनि जाच्छेन
तूँ आबै छैँ	तुमि फिरछो
तूँ जाइ छैँ	तुमि जाच्छो
ओ सब अबैत छथि	तिनि फिरछेन
ओ सब जाइ छथि	तिनि जाच्छेन
ओ आबै छथि	शे फिरछे
ओ जाइ छथि	शे जाच्छे
अहाँ अबैत छी	आपनि फिरछेन
अहाँ करैत छी	आपनि कोरछेन

बांग्लामे एक प्रकारक असमापिका क्रिया होइत अछि- क्रियाक तिर्यक रूपक। बादमे –-ते जोड़लासँ ई बनाओल जाइत अछि।
करय मे- कोरते (कोर+ते)
जाइ मे- जेते (जा+ते)
आबय मे- आशते (आश+ते)
मैथिली सन बांग्लामे सेहो दू शब्द वा वाक्यकेँ जोड़बा लेल ओ, आर, एबं (मैथिलीमे एवं/ एवम्) केर प्रयोग होइत अछि। बांग्लामे “ओ” केर प्रयोग “संग” केर अर्थमे सेहो होइत अछि।
हमहूँ- आमि ओ
धातुक पाछाँ पुरुषवाचक प्रत्यय लगा कय क्रियाक सामान्य वर्त्तमान कालक रूप बनि जाइत अछि।
कर+इ= कोरि
कर+एन= करेन

कर+ओ= करो
कर+इश= कोरिश
कर+ए= करे।

मैथिली आ भोजपुरी

भोजपुरीमे

केर बदला	**ई वर्ण प्रयुक्त होइत अछि**
ण	न
ल	र
ष	ख
श	स

भोजपुरीमे सहचर तीन प्रकारक अछि, विपरीतार्थक, समानार्थक्, आनुप्रासिक आ विशेषार्थ बोधक सहचर।

विपरीतार्थक सहचर

शब्द	**विपरीतार्थक सहचर**
हकासल	पियासल
लरम	गरम
रकम	पताई
साँप	गोजर

समानार्थक सहचर

शब्द	**समानार्थक सहचर**
लकड़ी	काठी
कनिया	बहरिया
पुरखा	पुरनिया

किन	बेसाह
बिआ	बाल
नेग	चार

आनुप्रासिक सहचर

शब्द	**आनुप्रासिक सहचर**
अखोर	बखोर
हरवा	हथियार
बोहनी	बट्टा
पर	पाहुन
चासा	बासा
चिरई	चुरुंग

विशेषार्थ बोधक सहचर

शब्द	**विशेषार्थ बोधक सहचर**
सेवा	खरचा
अह	जह
तगड़	बगड़
अकट	बहेर
आउँज	गाउँज

भोजपुरीक किछु उपसर्ग

नि-निदरदी

कु- कुअन्न

अध- अधमरु

भोजपुरीक किछु प्रत्यय

डाका- अइत- डकइत

हार- चूड़ी- चूड़ीहार

लकड़ी- लकड़ीहार

हर-मुस- मुसहर

बाप- बहर

मामा- ममहर

भोजपुरीमे संज्ञासँ विशेषण

कातिक- कतिका

आइन- धुँआ- धुआँइन

भोजपुरीमे विशेषणसँ संज्ञा

पियर- पिअरी

अई- थेथर- थेथरई

अवती- बूढ़- बुढ़उती

भोजपुरीमे संज्ञासँ संज्ञा

अई- लरिकाई

भोजपुरीमे विशेषणसँ विशेषण

लाल- ललछहूँ

औठा- पहिल- पहिलौठा

स्त्री प्रत्यय

आइन- मिसिर- मिसराइन

आनी- देवर- देवरानी

भोजपुरीमे वचन

लइका (एकवचन)- लइकन (बहुवचन)

हाथी (एकवचन)- हाथिन/ हाथियन (बहुवचन)

मैथिली	**भोजपुरी**
छथि	तारी
खाइत अछि	खाता
खुजैत अछि	खुलता
नहि खेलाइत छथि	खेलत नइखन
नहि अछि	नइखे
नहि जयताह	ना जइहन
नहि खयताह	ना खइहन
जाइ छी	जातार
पढ़ैत छी	पढ़ तानी
खाइ छथि	खा तारन
अहाँ	रउआ

भोजपुरीक सेहो विभिन्न रूप अछि, जेना क्षेत्रानुसार बा, बाटे, बीया, बड़वें, बटे/ बानी बाजल जाइत अछि।

मैथिली आ मगही

भुव्अनेश्वर शर्माक मगही शब्दकोषमे किछु वर्ण आ संयुक्ताक्षर जेना ण, श, ष, ऋ, लृ, क्ष, त्र, ज्ञ हटा देल गेल अछि। मैथिली सन मगहीमे सेहो “व” केर उच्चारण “ब” आ कतेक ठाम “य” केर उच्चारण “ज” होइत अछि।

मगही सेहो अपन उत्पत्ति ८४ सिद्ध आ नाथ सम्प्रदायक नाथ साहित्यसँ मानैत अछि। मगही क्रियामे एकटा आकारक मात्रा कम होइत अछि जेना:-

मैथिली	**मगही**
एनाइ	अनई
गेनाइ	गनई
धोनाइ	धोनई

मगही लोकोक्ति आ कहावत:

अदरा गेल, तीन गेलन, सन, साठी, कपास- स्रदरा नक्षत्रमे वर्षा नहि भेने सन, साठी (धान) आ कपासक खेती बर्बाद भऽ जाइत अछि।

ओछा के प्रीत बालू के भीत- ओछ व्यक्तिसँ दोस्तियारी क्षिक होइत अछि।

ब्तातदेवल- खोराकी चलायल

सिहरी फटल- अकश-तिकश खतम भेल।

हहास कयल- दोसरकेँ आगू बढ़ैत देखि कऽ जरल।

तुला राशि के भेल- बड्ड तमसायल

कन्या राशि के भेल- काजसँ बेकार भेल।

ओरहन देवल- शिकाइत कयल।

पीढ़ा देवल- आदर देल।

खोपसन देवल- उलहन देल।

डॉ रामनरेश मिश्र "हंस" मगधक भाषा मागधीक विकसित रूपकेँ मगही कहलनि अछि। मागधी प्राकृतसँ असमिया, बांग्ला, ओड़िया, मैथिली, भोजपुरी आदि भाषा सेहो बहार भेल अछि।

मगहीमे "र" लेल "ल" "ड़", "ल" लेल "र" "ड़" केर प्रयोग होइत अछि। मगहीमे सेहो निर- लगा कऽ निरइठ बनैत अछि (अइठ/ निरइठ)।

मगही लोकगाथा

आल्हा, सोरठी वृजभार, लोरकाइन, रेसमा-चुहरमल, सारंगा-सदाबृज, छतरी-घुघुलिया, कुँवर विजयी, राजा भरथरी, गोपीचन्द, सोभां नायक, सती बिहुला, नेटुआ दयाल सिंह, राजा ढोलन सिंह, मान गुजरिया, मामा-भगिना, विक्रम, कर्दब-लीला, बनजारा, हिरनी-बिरनी, सहलेस, नूनाचार, राजा हरिचन, बाबा चिन्तामन, बकतौर, बिहुला-विसहरी, बाबा लखन्दर बिहुला-विषधर।

मगही लोकनाट्य, नाट्य-गीत आ लोक-नृत्य

-कीर्त्तन, जातरा, करमा भइया दूज, जीतिया (नायिका रुसि कऽ नैहर चलि गेल, धनरोपनीक बाद किसान-मजदूर ई नाट्य करैत छथि।)

-फागू, चैता, सावनी, बारहमासा, रोपनी।
-दूधवंशी (दुसाध), साफी (धोबी), च्हन्द्रवंशी (कहार), कोइरीक नाट्य गीत।
-जनी- जातिक- डोमकच, बीछामार, चुलहारिन, सीता-मीता, गेदुरी।
-ओझा-डाइन।
-सामा-चकेवा, बगुला-बगुली, जाट-जाटिन, सास-पुतोह,
-सगबेचनी, मछली बेचनी, जीराबुन, दही बेचनी।
-नाच, नेटुआ-कसबिन, कठपुतली।
आब किछु मैथिली आ तकर मगही रूपक चर्चा कयल जा रहल अछि।

मैथिली	**मगही**
खेलेलौं (खेलेलहुँ)	खेलली
हएत	होत
अछि	हे
छथि	हथ/ हथुन
छी	ही
जायत	जइतो
एता	अतथुन
भेटत	मिलतो

मगहीक रूप

पटनाक आसपास मारलुक (मारबौ) आदिक प्रयोग होइत अछि जे कने दक्षिण गेला पर हथिन/ छथिन आदिमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

मैथिली आ संथाली

मैथिली	**संथाली**
पिता	बा
बाबी (बा)	नुनुगो (बुडीगो)
बाबा	गोड़म्बा
नमस्ते	जोहारगी
भेल	हुयेना

उसरि कऽ (जल्दी)	उसारा
अछि	काना/ गिया
छी	काना
आर	आर
सँ	ते
एखन लगाइत	एहोबोक् लगीत
देखाउ	उदुगमे
विलम्ब	बिलम्ब
दिऔ	मे/ में
करू	मा/ कामीयमे
नहि	आलोम
बनू	बिनाक्आ
बुरबक (बोका)	बोका
आउ	हजुक्मे
ध्यान	ध्यान
दाँत सभ	डाटा
लगा लिअ	लगाव ताम
सत्त	सरी
खबरि	खोबोर
हमरा	इञ
खराप	बड़ीच्
मोन	मोने
लगा कऽ	लगाव
काज	कातेक
कैँ	दो
घास	घास
आनू	अगुकुम
अहाँ सँ	आमसांव

जरूर	जरूड़
थोर	थोड़ा
पंखा	पंखा
बिजली	बिजली
लैम्प	लैम्प
कागत-पेंसिल	कागज-पेंसिल
मना	मना
मामिला	मामला
समय	समय
धन	धन
मेहनति	मेहनत
अहाँ	आम
कुकुड़ (पु.)	सीता
कुकुड़ (स्त्री.)	सीता इंगा
पिल्ला (कुकुड़क बच्चा)	सीता होपोन
बाछी	बछी
बेंग	रोटे
पनही (जुत्ता)	पनाही
करैल	कारला
घर (दलान)	दुलान
मचान	मचान
कड़छु	कड़छु
पटिया	पटया
चालनि	चलनी
सलाइ-काठी	सलाई कठी
सूत	सुतम
थारी-बाटी	थरी-बटी
लोटा	लोटा
बोरा	बोरा

गहूम	गुहुम
दही	दाही
थुथुन	थुथना
गाहकि (गहकी)	गहकी
अखबार	खोबोर कागज
हरियर	हरयड़
खर्चा	खर्चा
साफ करब	साफा
बीछब	बाछाव
बनायब	बिनाव
नव करब	नावा
नेहोरा करब	नेहोर
जिरायब (विश्राम करब)	जिराव
थरथरी	थारथाराक्
आछी करब (छीकब)	अछीम
साटब	साटाव

बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल

मैथिली आ हिन्दी

मैथिली	**हिन्दी**
हमरा सभक	हमारा
हमर	मेरा
ओकर	उसका
ई	यह
ओ	वह
ई सब	ये

ओ सब	वे
अछि	है
छी	हूँ
देखनाइ	देखना
जीनाइ	जीना
गेनाइ	जाना
पीनाइ	पीना
छूनाइ	छूना
सुतनाइ	सोना
पढ़नाइ	पढ़ना
जाउ	जाइए
जो	जा
राम गेल	राम गया
सीता गेलि	सीता गई
आननाइ	लाना
बजनाइ	बोलना
बिसरनाइ	भूलना
छह	हो
लिखैत अछि	लिखता है
लिखि रहल अछि	लिख रहा है
जायत	जाएगा
अयताह	आएंगे
राम जाइत अछि	राम जाता है
सीता जाइत अछि	सीता जाती है
सीता जाइत छथि	सीता जाती हैं
राम खेनाइ खेलक	राम ने खाना खाया
राम सोहारी खेलक	राम ने रोटी खाई
तोँ ई काज केने छह	तूने यह काम किया है
राम फिल्म देखने छल	राम ने फिल्म देखी थी

राम फिल्म देखने छला	राम जी (आदर) ने फिल्म देखी थी
राम पाठ समाप्त कऽ लेने होयत	राम ने पाठ समाप्त कर लिया होगा
राम पाठ समाप्त कऽ लेने हेता	राम जी (आदर) ने पाठ समाप्त कर लिया होगा
राम सीताकेँ देखलक	राम ने सीता को देखा
राम सीताकेँ देखलनि	राम जी (आदर) ने सीता को देखा

ऊपर अहाँकेँ स्पष्ट भऽ गेल होयत जे हिन्दीमे कर्त्ता लेल “ने” प्रयुक्त भेल मुदा मैथिलीमे ई रिक्त रहल। कर्म लेल हिन्दीमे “को” आ मैथिलीमे “केँ” प्रयुक्त भेल।

हिन्दी	सेब	एक सेब	दू सेब	दो सेबों में
मैथिली	सेब	एकटा सेब	दूटा सेब	दूटा सेबमे
हिन्दी	सिपाही	एक सिपाही	दो सिपाही	दो सिपाहियों ने
मैथिली	सिपाही	एकटा सिपाही	दूटा सिपाही	दूटा सिपाही
हिन्दी	साधु	एक साधु	दो साधु	दो साधुओं को
मैथिली	साधु	एकटा साधु	दूटा साधु	दुनू साधुकेँ
हिन्दी	चमगादड़	एक चमगादड़	दो चमगादड़	दोनों चमगादड़ों पर
मैथिली	बादुर	एकटा बादुर	दूटा बादुर	दुनू बादुर पर
हिन्दी	चिड़िया	एक	दो चिड़िया	दो

		चिड़िया		चिड़ियाओं
मैथिली	चिड़ै	एकटा चिड़ै	दूटा चिड़ै	दुनू चिड़ै

एतय स्पष्ट भऽ गेल जे बहुवचनमे हिन्दीमे शब्दक रूप परिवर्तित भेल मुदा मैथिलीमे से नहि भेल। एहिसँ पहिने क्रियामे किछु ठाम स्त्रीलिङ्गमे हिन्दी सन परिवर्तन मैथिलीमे सेहो भेल (गेलि) मुदा बेसी ठाम (जाइत अछि, छथि) परिवर्तन नहि भेल। आदरसूचक वाक्यमे हिन्दीमे क्रियामे परिवर्तन नहि भेल मुदा मैथिलीमे भेल (देखलक/ देखलनि)। स्त्रीलिङ्क बहुवचनमे हिन्दीमे रूप परिवर्तित होइताछि मुदा मैथिलीमे से नहि होइत अछि।

कारक/ विभक्ति (मैथिली)	**कारक/ विभक्ति (हिन्दी)**
राम	राम ने
रामकेँ	राम को
गेन्दसँ, लाठीसँ, लाठी द्वारा	गेन्द से, लाठी द्वारा
रामकेँ, रामकलेल, राम हेतु	राम को, राम के लिये, राम हेतु
गाछसँ (विलगाव)	पेड़ से
रामक घर, रामक पोथी, सीताक राम	राम का घर, राम की किताब, सीता के राम
घर पर, खोतामे	घर पर, घोसला में

मैथिली आ ओड़िया

किछु विशेष टिप्पणी देल जा रहल अछि जाहिसँ मैथिली आ ओड़ियाक बीचमे सम्बन्ध स्पष्ट भऽ जायत।

मैथिलीमे “ई” केर बदला ओड़ियामे “इए” प्रयुक्त होइत अछि, मुदा उच्चारण दुनू ठाम एक्के छैक, मात्र वर्त्तनीमे अन्तर छैक। जेना रेघा कऽ हम सब “ई” बाजै छी सएह “इए” छिऐ।

“तूँ जाह” हम सब कहै छी आ ओड़ियामे “तू जाऽ“ कहल जाइत अछि।

“तूँ जो” हम सब कहै छी आ ओड़ियामे “तुमे जाअ”, हमसब “अहाँ जाऊ” आ ओड़ियामे “आपण जाआन्तु” कहल जाइत अछि।

मैथिलीमे “अछि” ओड़ियामे सेहो “अछि” अछि।

हमर केर प्राचीन मैथिली रूप “मोर” (पिआ मोर बालक- विद्यापति) अखनो ओड़ियामे गद्यमे “मोर” प्रयुक्त होइत अछि।
“नहि” केर बदला “नाहिं” (नाँई) (मैथिलीमे सेहो एहेन उच्चारण होइत अछि आ मैथिली पत्रिका अंतिकामे नइँ लिखलो जाइत अछि), “अपने” आ “अहाँ” केरबदला “आपण” प्रयुक्त होइत अछि जे मैथिलीक “अपने” सन अछि।
“छी” केर बदला “छि” प्रयुक्त होइत अछि।
“कोन” केर बदला “केउँ”, “काल्हि” केर बदला “कालि” आ “पीलक” केर बदला “पिइला” प्रयुक्त होइत अछि।
“नै सुनलनि” केर बदला “शुणिलुनि”, एतय गहिंकी नजरिसँ देखब तँ पता लागि जायत जे नकारात्मक बनेबा लेल ओड़ियामे “नि” शब्दक अन्तमे जोड़ल जाइत अछि।
’कैँ’ केर बदला ’कु’ जेना ’रामकैँ’ केर बदला ’रामकु’ प्रयुक्त होइत अछि।
“देल” केर बदला “देल” यएह प्रयुक्त होइत अछि।
जेना अपने सभ भात “सिझ” गेल कहैत छिऐ, ओड़ियामे बरकल पानिक बदलामे “सिझापाणि” कहल जाइत अछि।
“हएत” केर बदला “हेब”, “नै हएत” केर बदला “हेबनि” (नि जोड़ि कऽ नकारात्मक बनल)।
अग्रिम/ अगारी केर बदलामे “आगरू”, कराबय केर बदला करिबाकु, पड़त केर बदला पड़िब, “देखने छह” केरबदला “देखिछ”, कतेक/ कत्ते केरबदला केते, जतेक/ जत्ते केर बदला जेते प्रयुक्त होइत अछि।
मैथिली केर “ओ” केर बदला ओड़ियामे “से” प्रयुक्त होइत अछि। मैथिलीमे “से” (जेना- से कहलक) कनेक भिन्न अर्थमे मुदा मोटा-मोटी “फराक” केर अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि।

मैथिली	**ओड़िया**
जाइ छै	जाउछि
एकटा (गोटे)	गोटे
बुलब/ बुलनाइ	बुलिबा

दूटा	दिटा
कोन ठाम(कोन ठाँ)	केउँठि
जाइ छी	जाउछि
देखै छी	देखिछि
आउर के	आउ किए
आबेले छथिन्ह	आसिछन्ति
मरि गेल	मरिगला
जाइ छै	जाइछि
जेबै	जिबे
जायब	जिबि
छलै (छलय)	थिला
जैठाम (जइठाम, जइठाँ)	जेउँठि
दरमाहा	दरमा
गेल	गले
बैसा कय	बसेइदइ
करायब	करेइबा
तोहर	तांकर
लागैछै	लागुछि
करबै	करिबेनि
से काज	से काम
करि लेता	करिनेब
किछु	किछि
दऽ देबै	देइदेबि
तऽ (तँ)	त
दिआयल जायत	दिआजिब
भौजी/ भाउज	भाउज
जलखै	जळखिआ
आउर (आओर)	आउ
चाह	चा

ओड़ियामे उच्चारण सेहो कनेक भिन्न छैक, जेना “अ” केर उच्चारण “ओ” सन होइत छैक। जेना “समर” केँ हम सभ समर पढ़ब मुदा ओड़ियामे एकरा पढ़ल जायत “सोमोरो”। “अ” लागि कय सभ व्यंजन हलन्त सँ पूर्ण होइत अछि से सभटा व्यंजनमे अ=ओ उच्चारण होयत। मैथिलीमे मनोज केँ बाजल जाइत अछि मनोजऽ, मुदा ओड़ियामे बाजल जायत मोनोजो।

इ/ ई, उ/ ऊ- मैथिली आ ओड़ियामे एक्के रङ उच्चारण होइत अछि।

ऐ जेना मैथिलीमे अ+इ आ औ जेना अ+ऊ बाजल जाइत अछि तहिना ओड़ियामे सेहो उच्चरित होइत अछि।

ऋ मैथिलीमे “री” बाजल जाइत अछि मुदा ओड़ियामे “रु” उच्चरित होइत अछि। कृप मैथिलीमे “क्रीप” पढ़ल जाइत अछि आ ओड़ियामे “क्रुपो” उच्चरित होइत अछि।

व ब सन उच्चरित होइत अछि दुनू भाषामे से मैथिलीमे ओ उच्चरित होयत “ब” आ ओड़ियामे “बो”।

मुदा विदेशज शब्दक उच्चारण ओड़ियामे सेहो हलन्त सन होइत अछि आ “ओ” सन “अ” केर उच्चारण नहि होइत अछि।

मैथिली सन “य” केँ “ज” किछु ठाम पढ़ल जाइत अछि, से “यम” मैथिलीमे “जम” आ ओड़ियामे “जोमो” पढ़ल जाइत अछि।

शब्दक प्रारम्भमे जँ “ड” वा “ढ” अबैत अछि तँ नीचाँक बिन्दु दुनु भाषामे विलुप्त रहैत अछि।

मैथिली आ ओड़िया दुनूमे कचटतप केर पाँचम अनुनासिक्य अक्षर (क्रमसँ ङ, ञ, ण, न, म) मे सँ मात्र न आ म सँ शब्दक प्रारम्भ सम्भव अछि।

“क्ष” मैथिलीमे “क्छ” उच्चरित होइत अछि आ ओड़ियामे “ख” वा “ख्य”।

मराठी सन ओड़ियामे संस्कृतक “ळ” अखनो अछि जे मैथिलीमे आब नहि अछि।

“ज्ञ” मैथिली आ ओड़िया दुनूमे “ग्य” उच्चरित होइत अछि।

“त्स” मैथिलीमे “तस” मुदा ओड़ियामे (स् +च) उच्चरित होइत अछि।

भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण ऐतिहासिक आधारपर होइत अछि, जाहिमे भाषाक इतिहास, एक भाषाक दोसर भाषासँ उत्पत्ति, भाषाक आकृति-प्रकृति माने रचनात्मकताक संग अर्थ-तत्त्वपर सेहो ध्यान देल जाइत अछि। जेना कोनो व्यक्ति वा समूह बीजीपुरुषक संकल्पना करैत अछि आ ओतएसँ अपना धरि एकटा वंशवृक्षक निर्माण करैत अछि, तहिना भाषाक इतिहासक लेखक सेहो आदि, मध्य आ आधुनिक कालक आधारपर भाषाक पूर्ववर्ती आ बीज भाषाक संकल्पना सोझाँ अनैत छथि। मुदा भाषाक इतिहासमे पुत्री आ बहिन भाषाक संकल्पना सेहो एहि तरहेँ सोझाँ अबैत अछि।

मैथिलीक भारोपीय भाषा परिवारमे स्थान
स्थान, शब्द, व्याकरण आ ध्वनिक आधारपर भाषा एक-दोसरासँ लग होइत अछि। मुदा एहि मध्य किछु अपवाद सेहो अछि। अवेस्ता, अंग्रेजी आ जर्मन भाषा मैथिलीसँ भौगोलिक रूपसँ दूर रहलोपर एक्के परिवारक अछि, मुदा अरबी, तमिल आदि सापेक्ष रूपेँ भौगोलिक निकटता अछैत दोसर परिवारक अछि।
फेर भाषा स्थित आयातित विदेशज शब्दावलीक आधारपर हम एक भाषाकेँ दोसर भाषाक परिवारक सिद्ध नहि कऽ सकै छी। तहिना ध्वनिमूलक आ शब्दमूलक अर्थक साम्य सेहो दू भाषा परिवारकेँ एक वर्गमे नहि आनि सकैत अछि, जेना संस्कृतक जाल्म आ अरबीक जालिम -शब्दमूलक साम्य वा मैथिलीक मियाऊँ आ चीनी मन्दारिन भाषाक म्याऊँ (बिलाड़ि)- ध्वनिमूलक साम्य।
ध्वनिक साम्यमे सेहो कखनो काल गड़बड़ी होइत अछि, जेना मैथिलीमे ड़, ढ़ आ चन्द्रबिन्दुक खूब प्रयोग होइत अछि मुदा ई तीनू ध्वनि संस्कृतमे नहि अछि।
भौगोलिक आधारपर सेहो "भारोपीय भाषा" ई नामकरण पूर्ण रूपसँ समीचीन नहि अछि, कारण सम्पूर्ण भारतमे भारोपीय भाषा परिवारक उपस्थिति नहि अछि आ भारतमे भारोपीय भाषाक अतिरिक्त आनो

भाषा परिवारक उपस्थिति अछि। यूरोपमे सेहो काकेशियन आदि भाषा परिवार भारोपीय भाषा परिवारमे नहि अबैत अछि।

व्याकरण साम्यक आधार दू भाषाकेँ एक परिवारमे रखबाक सभसँ सुदृढ़ आधार अछि।

मूल रूपसँ भारोपीय परिवारक भाषामे प्रत्ययक प्रयोग खूब होइत अछि आ धातुमे प्रत्यय जोड़ि शब्द बनैत अछि। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, ई तीन तरहक लिंग अछि तँ एकवचन, द्विवचन आ बहुवचन एहि तीन तरहक वचन। मुदा आब अधिकांश भाषामे एकवचन आ बहुवचन यैह दूटा वचन होइत अछि। जाहि क्रियाक फल स्वयं प्राप्त हो से आत्मनेपदी आ जकर फल दोसरकेँ भेटए से परस्मैपदी, ई दू तरहक क्रिया भारोपीय भाषमे रहैत अछि। समासक प्रयोग सेहो मोटा-मोटी भारोपीय भाषाक विशेषता अछि।

भारोपीय परिवारक दू भेद अछि। सए (१००) लेल प्रयुक्त मूल भारोपीय शब्द "क्मतोम" दू तरहेँ बाजल जाइत अछि। संस्कृतमे "शतम्" आ लैटिनमे "केन्टुम्"। एहि आधारपर संस्कृतसँ लग भाषा समूह अवेस्ता (भाषा आ ग्रंथ दुनूक नाम, जेन्द-अवेस्ता- ओहिपर भाष्य), फारसी, मैथिली, रूसी आदि अबैत अछि। केन्टुम् वर्गमे लैटिनसँ लग भाषा जेना ग्रीक, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन आदि अबैत अछि।

शतम् वर्गमे भारत-इरानी (वा इन्डो आर्यन), बाल्टो-स्लाविक, आर्मीनी आ इलीरी भाषा समूह अबैत अछि।

इन्डो आर्यन वा भारतीय-ईरानी भाषा समूहमे ऋगवेद सभसँ प्राचीन अछि। जोराष्ट्रियन धर्मक अवेस्ता ग्रन्थ जे वैदिक कालक अछि ओ अवेस्ता भाषाक ग्रन्थ अछि। ईरानी भाषा समूहमे अवेस्ता, प्राचीन फारसी, पहलवी, पश्तो, बलूची आ कुर्द भाषा प्रमुख अछि। भारतीय आर्यभाषा समूहमे वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली (प्राचीन प्राकृत ५००. ई.पू.सँ १०० ई.पू. धरि), प्राकृत (मध्य प्राकृत १०० ई.पू. सँ ५०० ई. धरि), अपभ्रंश (५०० ई. सँ ९०० ई. धरि) आ अवहट्ट (९०० ई. सँ ११०० ई. धरि) आ तकर बाद मागधी प्राकृतसँ मैथिली, बंगला, ओड़िया, असमी आदि भाषा (११०० ई. सँ) अबैत अछि।

विश्वक भाषाक पारिवारिक वर्ग
(अ) यूरेशिया, (आ)अफ्रीका, (इ)प्रशान्त महासागरक क्षेत्र (पैसिफिक), (ई)अमेरिका

(अ) यूरेशिया- (क)भारोपीय, (ख)द्राविड़, (ग)बुरुशस्की, (घ)काकेशी, (ङ)यूराल-अल्ताई, (च)चीनी, (छ)जापानी-कोरियाई, (ज)हाइपरबोरी, (झ)बास्क, (ञ)सेमीटिक-हेमिटिक- अफ्रीकामे

(क)भारोपीय- (i) इन्डो आर्यन, (ii)बाल्टो-स्लाविक, (iii)आर्मीनियन, (iv) इलीरी, (v)ग्रीक, (vi)केल्टिक, (vii)जर्मानिक, (viii)इटालिक, (ix)हित्ती, (x)तोखारी

(i) इन्डो आर्यन- (a)भारतीय आर्यभाषा, (b)ईरानी
(a)भारतीय आर्यभाषा
(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई.पू.सँ ५०० ई. पू.)
(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई.पू.सँ १००० ई.)
(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि)

(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई.पू.सँ ५०० ई. पू.)- वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत (बाल्मीकि - “मानुषिमिह संस्कृताम्”- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषा।)
(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई.पू.सँ १००० ई.)- पहिल प्राकृत (पाली), दोसर प्राकृत (साहित्यिक प्राकृत- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी, पैशाची, ब्राचड, खस), तेसर प्राकृत (अपभ्रंश- प्रथमे-प्रथम व्याडि आ पतंजलि द्वारा उल्लेख।)
(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि) (अ) शौरसेनीसँ खड़ी बोली, व्रजभाषा, बाँगरू, कन्नौजी, बुन्देली, मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती, गुजराती (आ)महाराष्ट्रीसँ मराठी, कोंकणी, नागपुरी, बरारी (इ) मागधीसँ भोजपुरी, मगही, बांगला, ओड़िया, असमी, मैथिली (ई) अर्धमागधीसँ अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी (उ)

पैशाचीसँ लहँदी (ऊ) ब्राचडसँ सिन्धी, पंजाबी (ए) खससँ पहाड़ी भाषाक विकास रेखांकित होइत अछि।

बाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर- “पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ” संगहि ज्योतिरीश्वर द्वारा सात “उपभाषक” चर्च भेल अछि। प्राकृतक कैकटा प्रकार छल। ओहिमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्दक स्वरांत होएब, क्रियारूपक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ट (अवहट्ठ) केँ “मैथिल अपभ्रंश” ताहि कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ एहिमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक “कीर्तिलता” अवहट्ठमे अछि, मुदा “चर्या गीत” आ “वर्ण रत्नाकर” कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्ठसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक “उक्ति व्यक्ति प्रकरण” सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्ठसँ लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश

आ अवहट्ठक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

मैथिली वा कोनो भाषाक उत्पत्तिक मूलमे मनुक्खक मुँहसँ बहराएल ध्वनि आ ओहि ध्वनिक अर्थ कोनो वस्तु, व्यक्ति वा विचारसँ होएब सिद्ध होएत। ध्वनि तँ चिड़ै, चुनमुनी, माल-जाल आ बौक व्यक्ति द्वार सेहो उत्पन्न होइत अछि मुदा से अर्थपूर्ण नहि भऽ पबैए आ भाषाक निर्माण नहि कऽ पबैए।

१८६६ ई. मे पेरिसमे "ला सोसिएते द लिंग्विस्टीक" नाम्ना संस्था भाषाक उत्पत्ति आ विश्वक भाषा सभक निर्माण" एहि विषयकेँ अपन कार्यकारिणीसँ हटा देलक कारण एहि विषयक विवेचन अनुमानपर अधारित होएबाक कारणसँ वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ दूर रहैत अछि।

वैदिक संस्कृतसँ लौकिक संस्कृत आ ओहिसँ पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिलीक क्रम ताकल जा सकैत अछि। मुदा वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ ओ भाषा अस्तित्वमे रहल होएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल होएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल "गाथिन", "गातुविद्" आ "गाथपति" ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक संस्कृतक उत्पत्ति दैवी रूपमे भेल वा आंगिक-वाक संकेतक संप्रेषणीयता बढ़ेबाक लेल से मात्र अनुमानेक विषय भऽ सकैत अछि। भाषामे ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य आ अर्थक परिवर्तन भेलासँ वैदिकसँ लौकिक संस्कृत बहराएल आ फेर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिली। पाणिनी द्वारा भारतक विभिन्न क्षेत्रसँ लेल शब्दावली लौकिक संस्कृतकेँ ततेक समृद्ध कएलक जे ओहिसँ आन सभ भाषाक कतेको तरहक रूप बहार भेल। कतेक तरहक क्षेत्रीय प्राकृत आ अपभ्रंश ओहि भौगोलिक क्षेत्रक विस्तारकेँ लैत बहार भेल आ ओहिसँ आजुक आधुनिक भारतीय आर्य भाषा सभक उत्पत्ति भेल।

मैथिली भारोपीय भाषा परिवारसँ सम्बन्धित अछि। भारोपीय भाषा परिवारक भीतर विश्वक लगभग चालीस प्रतिशत जनसंख्या अबैत अछि। ई सभसँ पैघ भाषा परिवार अछि, सभसँ समृद्ध सेहो। मोटा-मोटी एकर दू विभाग छैक, पहिल यूरोपक आर्य भाषा आ दोसर भारत-ईरानी

शाखा। भारत-ईरानी आर्यभाषाक भीतर ईरानी, दरद आ भारतीय आर्यभाषा अबैत अछि। दरद भाषामे कश्मीरी आ पामीर पठारक पूर्व दक्षिणक भाषा सभ अछि। मैथिली भाषाक उद्गम आ विकास भारतीय आर्यभाषाक भीतर ताकल जाइत अछि।

भाषाक उद्गम तँ अनुमानक विषय थिक। भाषाक उद्गमक आ तकर प्रयोगक कतेक वर्षक पश्चात् ओहिमे साहित्य रचना होइत अछि। तखन जा कऽ ओकर रूप स्थिर होइत अछि। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेद, लौककिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण, पालि भाषाक प्राचीनतम ग्रन्थ बुद्ध त्रिपिटक, प्राकृतक प्राचीनतम ग्रन्थ विमल सूरिक पउमचरिउ, अपभ्रंशक प्राचीनतम ग्रन्थ यूगीन्द्रक परमात्म प्रकाश अछि। आदि मैथिलीक प्राचीन साहित्य सिद्ध साहित्य, बौद्धगान आ ज्योतिरीश्वरक वर्ण रत्नाकर अछि। सिद्ध सरहपाद 700-780 सरहपाद- “सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ ,मण्ड पिबन्तोँ बिसरउ एमइउ” ।मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु (गणेशजीक अंकुश आँजी) सँ होइत अछि। मिथिलामे ई धारणा अछि जे माँड़ पीलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि। दोसर उदाहरण- बलद बियायल गबैया बाँझे- बड़द बिया गेल आ गाए बाँझे अछि।

मध्यकालीन मैथिलीक ग्रन्थ विद्यापतिक मैथिली साहित्य आ तकर बाद चतुर चतुर्भुज, शंकरदेव, विभिन्न मल्ल नरेश द्वारा रचित साहित्य, कीर्तनिया आ अंकिया नाटसँ मनबोध धरि अबैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्य चन्दा झासँ प्रारम्भ होइत अछि।

प्राचीन भारतक आर्यभाषाक क्षेत्र वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदमे वर्णित धार सभक आधारपर निर्धारित कएल जा सकैत अछि आ एकर प्रसार कोना आन क्षेत्रमे भेल सेहो एहिसँ निर्धारित होइत अछि। ऋगवैदिक आर्य “सप्त सन्धव” माने सात धारक क्षेत्रमे रहैत छलाह- ई सात धार छल वितस्ता, अश्किनी, परुष्णी, शतुद्रु, विपाशा, क्रुमु आ गोमती। एहिमे पहिल पाँचटा धार पंजाबक आ शेष दूटा अफगानिस्तानमे बहैत छल। ई सातो धार ऋगवेद कालक सभसँ उपयोगी धार सिन्धुक सहायक छल। ऋगवेदमे सरस्वती धारक वर्णन “धार सभ माय”क रूपमे

भेल अछि। ऋगवेदमे यमुनाक दू बेर आ गंगाक एक बेर वर्णन अछि। ऋगवेदक दसम मण्डलमे “धारक स्तुति” मे सिन्धु आ सप्तसैन्धवक स्तुति भेल अछि। ओइ कालमे पुरु, अनु, द्रुह्यु, यदु आ तुर्वस नाम्ना पंचजन बसैत छलाह। क्रिवि, त्रित्सु, सेहो ओहि कालमे छलाह। पुरु आ सभसँ शक्तिवान भरत कबीला मिलि बादमे कुरु कबीला बनल। भरत कबीला दाशराज्ञ युद्धमे पाँच आर्य आ पाँच अनार्य कबीलाक संगठनकेँ हरेलक, जाहिमे भरतक पुरहित वशिष्ठ रहथि आ पाँच आर्य आ पाँच अनार्य (दस्यु) कबीलाक संगठनक पुरहित रहथि विश्वामित्र। बोगजकोई एशिया माइनरमे हित्ती शासकक १४म शती ई.पू.क उत्कीर्णित अभिलेखमे इन्द्र, दशरथ, अर्त्ततम आदि राजाक, इन्द्र, वरुण, नासत्य, आदि देवताक उल्लेख अछि। यजुर्वेदक प्रचलित संहिता वाजसनेयी आ सामवेदक संहिता कौथुम, सामवेदक आरण्यक आ उपनिषद छान्दोग्यक आधारपर मिथिलामे ब्राह्मणक वाजसनेयी आ छान्दोग्यमे उर्ध्वाधर विभाजन एखन धरि अछि। यजुर्वेदमे विदेहक वर्णन अछि तँ ऋगवेदमे वैदिक जनकक (सीताक पिता सीरध्वज जनक पछाति भेलाह।)

'वैदेह राजा' ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ ताहिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि।शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग जयन्त आ मिथि -जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइत छन्हि, मिथिला नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग । ’सीरध्वज जनक’ सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़ परम्परा देखबामे अबैत अछि। ’कृति जनक’ सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवलक्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने

छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।
वैदिक संस्कृतक कालमे आर्य सप्तसन्धवसँ विदेह धरि आबि गेल छलाह। अनार्य (दस्यु)सँ ओही कालमे हुनकर सम्पर्क भऽ गेल छल आ शाब्दिक आदान-प्रदान सेहो भऽ गेल छल। यजुर्वेदमे बादमे अथर्ववेदमे ई आदान-प्रदान दृष्टिगोचर होइत अछि। अनार्य (दस्यु) आ व्रात्य (अनार्यसँ आर्य बनल जाति) दुनुक भाषा सप्तसैन्धव आर्यक भाषासँ मिलि गेल आ पुबरिया आ आन क्षेत्रीय बसात लगलासँ वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल। निरुक्तक समयमे सेहो वैदिक शब्दावली कठिन भऽ गेल छल, ओकर उत्पत्तिपर विवेचन शुरू भऽ गेल छल। पाणिनीक भाषा पुबरिया, दछिनबरिया, पछबरिया आ उत्तरबरिया सभ क्षेत्रक दस्यु आ व्रात्य भाषाक शब्दावलीकेँ समाहित कऽ बनल छल। ई संस्कारित भाषा बादक लोक मध्य संस्कृतक रूपमे विख्यात भेल। पाणिनी लौकिक संस्कृतकेँ जेना “भाषा” कहलन्हि, तहिना यास्क आ पाणिनी वैदिक संस्कृतकेँ “छन्दस्”। यैह छन्दस् अवेस्ता भाषाक भाष्य लेल जेन्द (छन्द) कहल गेल।

संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली

१. संस्कृत

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणक (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह क वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नहि होइत अछि छथि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि- जेना छान्दोग्य

उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः कं कु कें) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) क प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ क बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओहि फाँटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार क बाद बिकारीक आवश्यकता नहि अछि।
जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।
वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जाहिमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।
स्वरक वर्णन एहि प्रकारेँ अछि- जाहि वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नहि रहैत अछि, से भेल स्वर।
स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जाहिमे बाजैमे एक मात्राक समय लागए से भेल ह्रस्व, जाहिमे दू मात्रा समय लागल से भेल दीर्घ आ जाहिमे तीन मात्राक समय लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ
पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहैत छलाह।
दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ
पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहैत छलाह।
लृ दीर्घ नहि होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नहि होइत अछि।
अ इ उ ऋ एहि सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ क ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३), तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ एहि चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कए २२ टा स्वर।

एहि सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।
ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि।
नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जाहि अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।
स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।
दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तटपर बनबाओल, एतए इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ 'दात्त' आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नहि भेलोपर स्वरमे भेद अछि। एहिसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करैत छलाह।
स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकैत छी- जेना एहिमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।
आब व्यञ्जन पर आऊ।
व्यञ्जन ४२ टा अछि।
क् ख् ग् घ् ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्
त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म्
य् र् ल् व्
श् ष् स्
ह्
य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।
एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा

विसर्ग।
ई दुनूटा, स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नहि अछि, वरन् स् वा र् क विकार अछि। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्न्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)
पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।
अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय क उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।
इ ई चवर्ग य श क उच्चारण तालुमे होइत अछि।
ऋ ॠ टवर्ग र ष क उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।
लृ तवर्ग ल स क उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।
उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय क उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।
व क उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठक सहायतासँ होइत अछि।
ए ऐ क उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।
ओ औ क उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।
य र ल व अन्य व्यञ्जन जकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नहि करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ एहिमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नहि होइत अछि।
क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।
सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान

समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।
अनुस्वार आ यम क उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण एहि सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् क उच्चारण नहि होएबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यैह गूँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।
श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल "अघोष" , आ नाद प्रकृतिक भेल "घोषवान्"। जाहि वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि "अल्पप्राण" आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल "महाप्राण"।
कचटतप क पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगहि कचटतप क पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष।स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।
छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए । मुदा एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कए होएत - जेना यदि अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकेँ बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल

जाइत अछि। जेना- वरेण्यम्=वरेणियम्
स्वः= सुवः।
आजुक नव कविताक संग हाइकू/ क्षणिका/ हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय, संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वैह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान अछि, जाहिमे जे लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व “इ” एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ ह्रस्व 'इ' छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हैकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि, मुदा की इंग्लिशमे संधि नहि अछि ? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवार्ड्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवार्ड्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनओलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम केँ ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि।मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द ।
वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नहि ।
वार्णिक छन्दमे वर्ण/ अक्षरक गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। एकसँ बेशी मान कोनो वर्ण/ अक्षरक नहि होइछ। मोटा-मोटी तीनटा बिन्दु मोन राखू-
१. हलंतयुक्त अक्षर-०
२. संयुक्त अक्षर-१
३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू-
ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+३+१=२०
आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२
आब तेसर उदाहरण देखू
आब=२
आब चारिम उदाहरण देखू
स्क्रिप्ट=२
मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-
गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतए छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-
वरेण्यम्=वरेणियम्
स्वः= सुवः
गुण आ वृद्धिकेँ अलग कए सेहो अक्षर पूर कए सकैत छी।
ए = अ + इ
ओ = अ + उ
ऐ = अ/आ + ए
औ = अ/आ + ओ
छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त ‘गुरु’ आ ‘लघु’ छंदक परिचय प्राप्त करू।
तेरह टा स्वर वर्णमे अ,इ,उ,ऋ,लृ ई पाँच ह्रस्व आर आ,ई,ऊ,ॠ,ए.ऐ,ओ,औ, ई आठ दीर्घ स्वर अछि।
ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ ‘गुणिताक्षर’ बनैत अछि।
क्+अ= क,

क्+आ=का ।
एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक ‘अक्षर’ कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना ‘अवाक्’ शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा ।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर ‘लघु’ मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।
२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्‌घ स्वर युक्त गुणिताक्षर ‘गुरु’ मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।
३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।
४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।
५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओहि युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि:- १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओला पर उत्पन्न होइत अछि)।
१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नहि अछि। २. उदातात्तर- कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि। ३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ।नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ। ४. अनुदातात्ततर- कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि। ५. स्वरित- जाहिमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, एहिमे। ६. अनुदाक्तानुरक्तस्वरित- जाहिमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ। ७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक,तानक उत्पत्ति होइत अछि।
१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत

अछि।तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि।आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एक प्रकृतिगण कहैत छी। २.उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कय क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण क' उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२,३, आ ४ मंत्रक समूह) मे एहि लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लय पर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।

उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव, प्रस्तोतर द्वारा, उद्गीत उदगातर द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कय गाओल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं,हुं,हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।

हाथक मुद्रा- हाथक मुद्रा १.१.औँठा(प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. औँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. औँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. औँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. औँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट औँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद

ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थल पर गाओल जाइत छल। आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाओल जाइत छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान एहि विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थान पर गाओल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १.स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९

सात टा स्वर सा,रे,ग,म,प,ध,नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य,मन्द,तीव्र।

७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान। ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ एहि सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि –विशेषण-विपर्यय।

वेदपाठ-

१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॒त्विज॑म।होता॑रं रत्न॒ धातमम्।

२. पद पाठ- एहिमे प्रत्येक पदकें पृथक कए पढ़ल जाइत अछि।

३. क्रमपाठ- एतय एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कए पाठ कएल जाइत अछि।

४. जटापाठ- एहिमे ज्योँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम एहि रूपमे होएत। कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ- एहि मे ऊपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप होयत- कख,खक,कखग,गखक,कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।

साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकेँ ध्यानमे रखैत घटाओल, बढ़ाओल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकेँ ओग्नाय। २. विश्लेषण- शब्द/पदकेँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकेँ खिंचनाई/अधिक मात्राक बड़ाबर बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ।५. विराम- शब्दकेँ तोड़ि कय पदक मध्यमे 'यति'। ६. स्तोभ-आलाप योग्य पदकेँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा 'हाउ' 'राइ' जोड़ैत छथि। राणानीय शाखा 'हावु', 'रायि' जोड़ैत छथि।

मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नहि अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत रहए। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।
४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।
५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।
६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।
७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।
यदि अक्षर पूरा नहि होइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।
(अ) वरेण्यम् केँ वरेणियम् स्वः केँ सुवः।
(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकेँ अलग कए लेल जाइत अछि।
ए= अ + इ
ओ= अ + उ
ऐ= अ/आ + ए
औ= अ/आ + ओ
अहू प्रकारेँ नहि पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।
यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट्(२६)।
ॐ भूर्भुवस्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।
वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहैत छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य एहि कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतए आध्यात्म चेतना, अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि।
वैदिक (छन्दस्) आ लौकिक संस्कृत (भाषा) क व्याकरण :
वैदिक आ लौकिक दुनू संस्कृतमे संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, तीन वचन- एक, दू आ बहुवचन रहल, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग लिंगक द्योतक नहि अछि, दारा-पुल्लिंग, कलत्र- नपुंसक लिंग आ भार्या- स्त्रीलिंग; मुदा तीनू पत्नीक

पर्यायवाची अछि। तहिना ईश्वरः (पुल्लिंग), ब्रह्म (नपुंसक लिंग) आ चितिः (स्त्री लिंग) होइत अछि। संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक आठटा कारक (विभक्ति) सेहो होइत अछि। दस गणक धातुक रूप परस्मैपदी (फल दोसरार्कें), आत्मनेपदी (फल अपनार्कें) आ उभयपदी ई तीन तरहक होइत अछि। कर्तृ, कर्म आ भव ई तीन वाच्य आ बारह लकार (लट्, लिट्, लङ्, लुङ्, लुट्, लृट्, लोट्, विधिलिंङ्, आर्शीलिंङ्, लृङ्, लेट् आ लेङ्) होइत अछि। लेट् आ लेङ् लकार लौकिक संस्कृत (भाषा) मे नहि होइत अछि।

संस्कृतमे तीनटा पुरुष- प्रथम (आन भाषाक अन्य पुरुष) , मध्यम आ उत्तम होइत अछि।उद्देश्य आ विधेय; कर्ता आ क्रिया; विशेष्य आ विशेषण आ संज्ञा आ सर्वनामक परस्पर गुण-समानता रहैत छै।

वैदिक संस्कृतमे गीतात्मक आ बलात्मक स्वराघात रहए मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली बलात्मक स्वराघात रहि गेल। वैदिक उच्चारण उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (संगीतशास्त्रक आरोह, अवरोह आ सम सँ तुलना द्रष्टव्य) लौकिक उच्चारणमे खतम भऽ गेल।

वैदिक छन्दमे एक चरण, जकरा पाद कहैत छिऐ ओहि पादमे वर्णक गनती होइत अछि। छन्दमे गति (लय) आ यति (विराम) सेहो होइत अछि। ह्रस्व स्वर लघु होइत अछि, ह्रस्वक बाद संयुक्त वर्ण अएलासँ लघु स्वर गुरु स्वर भऽ जाइत अछि।

उपसर्ग: लौकिक संस्कृतमे उपसर्ग क्रियासँ पहिने अबैत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे पहिने, बादमे, अलगसँ आ कतहु अन्तरालक बाद सेहो अबैत अछि। संगहि वैदिक संस्कृतमे जे एक बेर उपसर्ग क्रियाक संग आबि गेल तँ तकरा बाद ओहि मंत्रमे मात्र उपसर्गक प्रयोग होएत आ वैह उपसर्गयुक्त क्रियाक द्योतक होएत।

समास: वैदिक संस्कृतमे समासमे सेहो कखनो काल भिन्नता छै, जेना अष्टक बाद कोनो शब्द होइ तँ ओ अष्टा भऽ जाइ छै- अष्टापदी। पितृ आ मातृक द्वन्द्व समास भेलापर दुनूमे आ लगै छै आ गुण होइ छै- पितरामातरा।

लेट लकार: लौकिक संस्कृतमे लेट लकारक प्रयोग नहि होइत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे होइत अछि जेना भवाति, पताति लौकिकमे मात्र भवति,

पततिसँ निदृष्ट होइत अछि।

वैदिक आ लौकिक संस्कृत कोनो दू भाषा नहि अछि वरन् लौकिक संस्कृत, वैदिक संस्कृतिक सरल रूप अछि। वैदिक संस्कृतमे लौकिक संस्कृतसँ सभ किछु बेशी अछि (अपवाद- लुट् आ लृट् लकारक वैदिक संस्कृतमे कम उपयोग।)

संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक आ उपनिषदक भाषा वैदिक संस्कृत कहल जाइत अछि आ तकर बादक संस्कृत लौकिक संस्कृत कहल जाइत अछि।

दुनू संस्कृतमे धातु, शब्द आ अर्थ प्रायः एक्के अछि।

दुनूमे तीन लिंग, तीन वचन आ तीन पुरुष होइत अछि।

दुनूमे सभ शब्द प्रायः धातु अछि; रूढ़ शब्द बड्ड कम अछि।

समास दुनूमे अछि, हँ लौकिक संस्कृतमे एकर बेशी प्रयोग देखबामे अबैत अछि।

छन्द सेहो दुनूमे मोटा-मोटी एक्के रङ्क भेटत।

धातुक गण मध्य विभाजन सेहो दुनूमे एक्के रङ भेटत।

णिच्, सन् प्रत्यय दुनूमे एक्के रङ भेटत।

पदक निर्माण दुनूमे एक्के तरीकासँ होइत अछि।

सुप्-तिङ-कृत्-तद्धित दुनूमे एक्के रङ भेटत।

दुनूमे शब्दक क्रम आगाँ पाछाँ भेने अर्थक परिवर्तन नहि होइत अछि।

दुनूमे सन्धि, कारक आ विभक्ति होइत अछि।

मुदा:-

लौकिक संस्कृतमे उपध्मानीय आ जिह्वामूलीय ध्वनिक प्रयोग नहि होइत अछि आ तकर स्थानमे विसर्गसँ काज चलैत अछि।

वैदिक संस्कृतमे ळ, ळह होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे दू स्वर मध्य "ड" ळ भऽ जाइत अछि आ "ढ" ळह भऽ जाइत अछि। लौकिक संस्कृतमे से नहि अछि।

ग्वाङ (ह्रस्व आ दीर्घ) लौकिक संस्कृतमे नहि अछि। यजुर्वेदमे ह, श, ष, स, र एहि सभसँ पूर्व अनुस्वार ग्वाङ भऽ जाइत अछि।

उदात्त, अनुदात्त आ स्वरितक उच्चारण लौकिक संस्कृतमे स्पष्ट रूपसँ नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे लेट् लकारक प्रयोग होइत अछि, लौकिक संस्कृतमे नहि।

वैदिक संस्कृतमे उपसर्ग धातुसँ पृथक् मुदा लौकिक संस्कृतमे संगमे प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे कृत् प्रत्ययक तुमुन् से, सेन्, असे, अध्यै इत्यादि १५ टा प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली "तुम्" प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतक सन्धि निअम शिथिल होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतक दृढ़ होइत अछि।

वैदिक कतेको शब्दक अर्थ लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल अछि। जेना असुर वैदिक संस्कृतमे शक्तिवानकेँ कहल जाइत छल मुदा लौकिक संस्कृतमे राक्षसकेँ कहल जाइत अछि।

धातुरूप सेहो वैदिक संस्कृतमे भिन्न अछि, अन्तिम स्वर दीर्घ सेहो होइत अछि। जेना चक्र- चक्रा: द्वित्वक अभाव होइत अछि जेना "ददाति"क स्थानमे "दाति"; कखनो काल परस्मैपदिक स्थानमे आत्मनेपद आ आत्मनेपदिक स्थानमे परस्मैपद धातुक प्रयोग होइत अछि; शप् स्थानपर कखनो काल दोसर गणक विकरणक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे शब्द रूप, धातु रूप, प्रत्ययक विविधता बेशी अछि।

वैदिक संस्कृतक काल-पुरुष-वचन-लिंगक ऐच्छिक परिवर्तन लौकिक संस्कृतमे मोटामोटी खतम भऽ गेल अछि।

वैदिक संस्कृतक अच्, अम्, जिन्व्, पिन्व् आदि धातु लौकिक संस्कृतमेप्रयोग नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे तर-तम प्रत्यय संज्ञा शब्द सन आ लौकिक संस्कृतमे विशेषण सन प्रयुक्त होइत अछि।

छन्दक हिसाबसँ वैदिक संस्कृतमे स्वर्-सुवर् आ दर्शत, दरशत लिखि लेल जाइत अछि। मुदा लौकिक संस्कृतमे से नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे "आन्" पदक अन्तमे रहलापर आ तकर बाद अ, इ, उ स्वर अएलापर न् लुप्त भऽ जाइत अछि आ आकारक बाद अनुस्वार भऽ

जाइत अछि। जेना महान् इन्द्रः= महा इन्द्रः। लौकिक संस्कृतमे से नहि होइत अछि।
वैदिक संस्कृत:-धातुरूप:-
लट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन परस्मैपदि धातु थ, त, थन, तन ई चारू प्रत्यय लगैत अछि। जेना वद्- वदथ, वदथन, वदत, वदतन।
लट् लकार उत्तमपुरुष-बहुवचन परस्मैपदि धातु मस् (मः), मसि ई दूटा प्रत्यय प्रयोग होइत अछि। जेना नाशयामः- नाशयामसि। इमः –इमसि। स्मः- स्मसि।
लोट् लकारक मध्यमपुरुष एकवचन परस्मैपदि धातुमे हि, धि ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना श्रुणुहि, श्रुणुधि।
लोट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन आत्मनेपद धातुमे ध्वम् आ ध्वात् ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना वारयध्वम्, वारयध्वात्।
(छन्दसि लुङ् लङ् लिटः):- वैदिक संस्कृतमे लुङ्, लङ् आ लिट् लकारक प्रयोग लोट्, लट् लकारक अर्थमे प्रयोग होइत अछि। जेना आगमत् (वैदिक लुङ्)= आगच्छतु (लोट)। अवृणीत (वैदिक लङ्)= वृणीते (लट्)। ममार (वैदिक लिट्)= म्रियते (लट्)।
वैदिक संस्कृत:-शब्दरूप:-
[संस्कृत (सं= स्+म- ई ठीक अछि; एकर उच्चारण सं= स्+न गलत अछि।)]
वैदिक संस्कृतमे शब्दरूपक भिन्नता लौकिकसँ बेशी होइत अछि। जेना अकारान्त पुल्लिंग देवः प्रथमा-स्वितीया-सम्बोधन-द्विवचन वैदिकमे देवा, देवौ दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवौ होइत अछि। प्रथमा-सम्बोधन-बहुवचन वैदिकमे देवासः, देवाः मुदा लौकिकमे मात्र देवाः होइत अछि। तृतीया-एकवचन वैदिकमे देवा, देवेन दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवेन होइत अछि। तृतीया-बहुवचन वैदिकमे देवेभिः, देवैः मुदा लौकिकमे देवैः होइत अछि।
तहिना वैदिक संस्कृतमे ऋकारान्त शब्दक रूप पुल्लिंग-स्त्रीलिंगमे लौकिक संस्कृत जेकाँ होइत अछि, खाली प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचनमे दू रूप होइत अछि। जेना दातृ- दातारा, दातारौ। पितृ- पितरा,

पितरौ। मातृ- मातरा, मातरौ।
अस्मद्:- प्रथमा-द्विवचन वैदिक- वाम्, आवम्; लौकिक आवाम्। चतुर्थी-एकवच वैदिक- मह्य, मह्यम्; लौकिक- मह्यम्। पञ्चमी-द्विवचन वैदिक आवत्, आवाभ्याम्; लौकिक- आवाभ्याम्। सप्तमी-बहुवचन वैदिक- अस्मे, अस्मासु; लौकिक- अस्मासु।
छन्द:-
पिङ्गल मुनिक छन्द शास्त्रक आठमे सँ पहिल चारिम अध्यायक सातम सूत्र धरि वैदिक छन्दक आ तकरा बाद लौकिक छन्दक वर्णन अछि।
वैदिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि। ओतए लघु आ गुरुक विचार नहि होइत अछि। ऋगवेदमे सभसँ बेशी त्रिष्टुप्, फेर गायत्री आ तखन जगती छन्दक प्रयोग भेल अछि।
त्रिष्टुप्- ४४ अक्षर- ११ अक्षरक ४ पाद;
गायत्री- २४ अक्षरक (ई २,३,४,५ पदक होइत अछि), सभसँ बेशी लोकप्रिय ८ अक्षरक तीन पादक गायत्री जाहिमे दोसर पादक बाद विराम होइत अछि। २३ अक्षरक गायत्री निचृद् गायत्री, २२ अक्षरक गायत्री विराड् गायत्री, २५ अक्षरक गायत्री भुरिग् गायत्री, २६ अक्षरक गायत्री स्वराड् गायत्री कहल जाइत अछि। सभ पादमे एक अक्षर कम भेलासँ "पादनिचृद् गायत्री" कहल जाइत अछि।
जगती- ४८ अक्षर- १२ अक्षरक चारि पाद।
पाठ:-
वैदिक संस्कृतकेँ स्मरण रखबाक कएकटा विधि अछि।
संहिता पाठ- मूलमंत्र सन्धि सहित सस्वर पढ़ल जाइत अछि।
पदपाठ- मन्त्रक पदक पृथक पाठ होइत अछि।
क्रमपाठ- क्रमसँ दू पदक पाठ होइत अछि।
जटापाठ- अनुलोम १-२, विलोम २-१, अनुलोम १-२
शिखापाठ- जटापाठमे परिवर्तित उत्तरपदक योगसँ शिखापाठ होइत अछि।
घनपाठ- शिखामुक्त विपर्यक पदक पुनः पाठ होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे यज्ञ आ अध्यात्मिक विषयक चर्च होइत अछि। लौकिक

संस्कृतमे इहलौकिक विषयवस्तु सेहो अबैत अछि।

२.प्राकृत

संस्कृतसँ पहिने प्राकृत रहए वा बादमे ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, इन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि। ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेरहम शताब्दी ई. धरि भेटि जाएत मुदा पारिभाषिक रूपमे जाहि प्राकृतक एतए चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई.सँ छठम ई. धरि साहित्यक भाषा दू अर्थे रहल। पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर एहि प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेर एहि प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्ठक प्रयोग लोक करए लगलाह, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत रहए तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि।

अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेराक अभिलेख उत्तर-पच्छिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व आ गिरनार दक्षिण पच्छिमक जनभाषाक क्षेत्रीय प्रकारक दर्शन करबैत अछि। राजशेखर प्राकृतकेँ मिट्ठ आ संस्कृतकेँ कठोर कहै छथि (विद्यापति पछाति कहै छथि देसिल बयना सभ जन मिट्ठा)।

प्राचीन प्राकृत पालीकेँ कहल जाइत अछि जाहिमे अशोकक अभिलेख, महवंश आ जातक लिखल गेल। मध्य प्राकृतमे साहित्यिक प्राकृत अबैत अछि। बादक प्राकृतमे अपभ्रंश आ अवहट्ठ अबैत अछि।

मोटा-मोटी गद्य लेल शौरसेनी, पद्य लेल महाराष्ट्री आ धार्मिक साहित्य लेल मागधी-अर्धमागधीक प्रयोग भेल। नाटकमे स्त्री-विदूषक बजैत रहथि शौरसेनीमे मुदा पद्य कहथि महाराष्ट्रीमे, नाटकक तथाकथित निम्न

श्रेणीक लोक मागधी बजैत छलाह।

प्राकृतमे सुप् तिङ् धातुक संग मिज्झर भऽ जाइत अछि।

प्राकृतमे धातुरूप १-२ प्रकारक (भ्वादिगण जेकाँ) आ शब्दरूप ३-४ (अकारान्त जेकाँ) प्रकारक रहि गेल, माने दुनू रूप कम भऽ गेल। मुदा एहिसँ अर्थमे अस्पष्टता आएल जकर निवारण कारकक चेन्ह कएलक।

चतुर्थी, द्विवचन, लङ् लिट् लुङ् आत्मनेपद आदिक अभाव भऽ गेल प्रथमा आ द्वितीयाक बहुवचन एक भऽ गेल। ध्वनि परिवर्तन भेल। ऋ, ऐ, औ, य, श, ष आ विसर्गक अभाव भेल (अपवाद मागधीमे य आ श अछि मुदा स नहि)।

अन्तमे आएल व्यंजन लुप्त भेल (ह्रस्व स्वरक बाद दू आ दीर्घ स्वरक बाद एकसँ बेशी व्यंजन नहि रहि सकैत अछि।)

२.प्राकृत

संस्कृतसँ पहिने प्राकृत रहए वा बादमे ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, इन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि। ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेरहम शताब्दी ई. धरि भेटि जाएत मुदा पारिभाषिक रूपमे जाहि प्राकृतक एतए चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई.सँ छठम ई. धरि साहित्यक भाषा दू अर्थे रहल। पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर एहि प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेर एहि प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्ठक प्रयोग लोक करए लगलाह, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत रहए तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि।

अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेराक अभिलेख उत्तर-पच्छिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व आ गिरनार दक्षिण पच्छिमक जनभाषाक क्षेत्रीय प्रकारक दर्शन करबैत अछि। राजशेखर प्राकृतकेँ

मिट्ठ आ संस्कृतकेँ कठोर कहै छथि (विद्यापति पछाति कहै छथि देसिल बयना सभ जन मिट्ठा)।

प्राचीन प्राकृत पालीकेँ कहल जाइत अछि जाहिमे अशोकक अभिलेख, महवंश आ जातक लिखल गेल। मध्य प्राकृतमे साहित्यिक प्राकृत अबैत अछि। बादक प्राकृतमे अपभ्रंश आ अवहट्ठ अबैत अछि।

मोटा-मोटी गद्य लेल शौरसेनी, पद्य लेल महाराष्ट्री आ धार्मिक साहित्य लेल मागधी-अर्धमागधीक प्रयोग भेल। नाटकमे स्त्री-विदूषक बजैत रहथि शौरसेनीमे मुदा पद्य कहथि महाराष्ट्रीमे, नाटकक तथाकथित निम्न श्रेणीक लोक मागधी बजैत छलाह।

प्राकृतमे सुप् तिङ् धातुक संग मिज्झर भऽ जाइत अछि।

प्राकृतमे धातुरूप १-२ प्रकारक (भ्वादिगण जेकाँ) आ शब्दरूप ३-४ (अकारान्त जेकाँ) प्रकारक रहि गेल, माने दुनू रूप कम भऽ गेल। मुदा एहिसँ अर्थमे अस्पष्टता आएल जकर निवारण कारकक चेन्ह कएलक।

चतुर्थी, द्विवचन, लङ् लिट् लुङ् आत्मनेपद आदिक अभाव भऽ गेल प्रथमा आ द्वितीयाक बहुवचन एक भऽ गेल। ध्वनि परिवर्तन भेल। ऋ, ऐ, औ, य, श, ष आ विसर्गक अभाव भेल (अपवाद मागधीमे य आ श अछि मुदा स नहि)।

अन्तमे आएल व्यंजन लुप्त भेल (ह्रस्व स्वरक बाद दू आ दीर्घ स्वरक बाद एकसँ बेशी व्यंजन नहि रहि सकैत अछि।)

न ण मे, य ज मे आ श, ष स मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

पदमे उत्तरपदक पहिल अक्षरक लोप भऽ जाइत अछि, मुदा से धातुरूप अछि तखन लोप नहि होइत अछि। जेना आर्यपुत्र= अज्जउत्त मुदा आगतम्= आगदं

अनुदात्त अव्ययक पहिल अक्षरक लोप होइत अछि। जेना च= अ

भू धातुक भ परिवर्तित भऽ ह भऽ जाइत अछि। जेना भवति= होइ

क ख मे आ प फ मे बदलि जाइत अछि। पनस= फणस, क्रीड्= केल

उच्चारण स्थानक परिवर्तनक क्रममे दन्त्य उच्चारण स्थान तालव्यमे बदलि जाइत अछि। जेना त् = च्

मध्यक य लोपित भऽ जाइत अछि। क, ग, च, ज, त, द क सेहो किछु अपवादकेँ छोड़ि लोप होइत अछि। प, ब, व क लोप सेहो कखनो आल होइत अछि। जेना- प्रिय= पिअ, लोक= लोअ, अनुराग= अणुराअ, प्रचुर= पउर, भोजन= भोअण, रसातल= रसाअल, हृदय= हिअअ, रूप= रूअ, विबुध= विउह, वियोग= विओअ

मध्यक क, त, प क्रमसँ ग, द, ब भऽ जाइत अछि। ख, घ, थ, घ, फ, भ ई सभ ह भऽ जाइत अछि। जेना नायकः= णाअगु, आगतः= आगदो, दीप=दीब=दीव। मुख= मुह, सखी= सही, मेघ= मेह, लघुक= लहुअ, यूथ= जूह, रुधिर= रुहिर, वधू= वहू, शाफर= साहर, अभिनव= अहिणव। कखनो काल मध्यक व्यंजन दोबर भऽ जाइत अछि। जेना एक= एक्क

मध्यक ट, ठ क्रमसँ ड, ढ भऽ जाइत अछि। जेना कुटुम्ब= कुडुम्ब, पठन= पढण

मध्यक प, ब परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना दीप= दीव। शबर= सवर।

ड, त, द परिवर्तित भऽ ल बनि जाइत अछि। जेना क्रीडा= कीला, सातवाहन= सालवाहण, दोहद= दोहल।

म परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना ग्राम= गाँव।

अन्तिम स्प्रश वर्णक लोप होइत अछि, अन्तिम अनुनासिकमे अनुस्वार नहि होइत अछि, अः बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि वा ओकर लोप भऽ जाइत अछि।

मोटा-मोटी शब्दक प्रारम्भमे एकेटा व्यंजन आ मध्यमे बेशीसँ बेशी दूटा व्यंजन सेहो द्वित्वमे जेना क्क वा क्ख रूपमे रहैत अछि।

व्यंजनक बलक अनुरूपेँ निम्न प्रकारक क्रम होइत अछि।(अ) कवर्ग, चवर्ग,, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग मे क (सभसँ बेशी बलगर) सँ भ (क्रमसँ कम बलगर) धरि, सभ वर्गक पाँचम वर्ण छोड़ि कऽ। जेना कवर्गक ङ, चवर्गक ञ, टवर्गक ण, तवर्गक न आ पवर्गक म छोड़ि कऽ। फेर (आ) कचटतप वर्गक पाँचम वर्ण। फेर (इ) ल, स, व, य, र। एहिमे समानबलक वर्णमे बादबला वर्ण प्रबल होइत अछि, अन्यथा अधिक बलबला बेशी बलगर होइत आछि। जेना- उत्पल= उप्पल, खड्ग= खग्ग, अग्नि= अग्गि। फेर जे कचटतप वर्गक पाँचम वर्णक ओही वर्गक कोनो दोसर

वर्ण होएत तँ पाँचम वर्ण ओहिना रहत, नहि तँ ओकर परिवर्तन अनुस्वारमे भऽ जाएत। जेना क्रौञ्च= कोञ्च, दिङ्मुख= दिंमुह।
दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ ओ ज्ज बनि जाइत अछि। मनोज्ञ= मणोज्ज।
कचटतप वर्गक बाद श, ष, स रहलासँ च्छ होइत अछि। जेना अप्सरा= अच्छरा, मत्सर= मच्छर।
क्ष बदलि कऽ क्ख भऽ जाइत अछि।जेना दक्षिण= दक्खिण।
शौरसेनीमे क्ष बदलि कऽ क्ख आ मागधीमे च्छ भऽ जाइत अछि। जेना कुक्षि= कुक्खि (शौरसेनी), कुच्छि (मागधी)।
प्राकृतमे ऋ आ लृ स्वर नहि होइत अछि। ऋ बदलि कऽ (अ) रि भऽ जाइत अछि। जेना ऋषि= रिषि, (आ) अ भऽ जाइत अछि। जेना कृत= कद। (इ) इ भऽ जाइत अछि। जेना दृष्टि= दिट्ठि। (ई) उ भऽ जाइत अछि। जेना पृच्छति= पुच्छदि।
ऐ, औ बदलि कऽ ए भऽ जाइत अछि। जेना कौमुदी= कोमुदी।
संयुक्ताक्षरसँ पूर्व ह्रस्व स्वर रहैत अछि।
उ बदलि कऽ अ वा ओ भऽ जाइत अछि। जेना मुकुल= मउल। पुस्तक= पोत्थअ।
ऊ बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि। जेना मूल्य= मोल्ल।
ए बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना एतेन= एदिणा।
ओ बदलि कऽ उ भऽ जाइत अछि। जेना अन्योन्य= अण्णुण्ण।
अनुस्वार+ अपि= पि आ अनुस्वार+इति= ति भऽ जाइत अछि। खलु= ख भऽ जाइत अछि।
य् बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना कथयतु= कधेतु।
प्राकृतमे अन्तिम व्यंजनक लोप भऽ जाइत अछि। व्यंजन सन्धिक मोटा-मोटी अभाव रहैत अछि।
स्वर सन्धिमे सेहो मध्य वर्णक लोप भेलोपर सन्धि नहि होइत अछि।
शब्दरूपमे द्विवचन खतम भऽ गेल। चतुर्थीक रूप षष्ठीमे मिलि गेल। व्यंजन अन्तबला शब्द खतम भऽ गेल।
धातुरूपमे शब्दरूपसँ बेशी अन्तर आएल। व्यंजन अन्तबला धातु खतम

भऽ गेल। धातुरूप एक्के रीतिसँ चलए लागल, द्विवचन खतम भऽ गेल, रूपक भिन्नता कम भऽ गेल। आत्मनेपद रूप मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। लिट्, लिङ्, लुङ् रूप सेहो मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। भूतकाल लेल कृदन्त प्रत्ययक प्रयोग होमए लागल। भ्वादिगण आ चुरादिगणक अलाबे सभ गण खतम भऽ गेल।

शौरसेनीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ ज्ज् भऽ जाइत अछि।

शौरसेनी आ माहाराष्ट्री- संस्कृतक मध्यक त शौरसेनीमे द भऽ जाइत अछि मुदा माहाराष्ट्रीमे ओ लोपित भऽ जाइत अछि। जेना- संस्कृत- जानाति= शौरसेनी जाणादि= माहाराष्ट्री जाणाइ

संस्कृतक मध्यक थ शौरसेनीमे घ मुदा माहाराष्ट्रीमे ह भऽ जाइत अछि। जेना संस्कृत अथ= शौरसेनी अघ= माहाराष्ट्री अह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ मागधीमे ञ्ञ बनि जाइत अछि।

मागधीमे श, ष, स ई तीनू परिवर्तित भऽ श; र परिवर्तित भऽ ल; ज परिवर्तित भऽ य बनि जाइत अछि। अकारान्त प्रथमा एकवचनमे ए लगैत अछि। जेना दरिद्र= दलिद्द।

मागधीमे ज बदलि कऽ य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ य्य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ण्य, न्य,ज्ञ,ञ्ज बदलि कऽ ञ्ञ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे मध्यक च्छ बदलि कऽ श्च भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ष्क= स्क वा श्क, ष्ट= स्ट वा श्ट, ष्प= स्प, ष्फ= स्फ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे र्थ बदलि कऽ स्त भऽ जाइत अछि।

विधिलिङ् क प्रयोग जैन प्राकृत- अर्धमागधी आ जैन महाराष्ट्रीमे प्रचलित रहल, आन प्राकृतमे ई मोटा-मोटी खतम भऽ गेल।

संस्कृतक तुम् शौरसेनीमे दुं, मागधीमे सेहो दुं रहैत अछि मुदा महाराष्ट्रीमे उं भऽ जाइत अछि।

प्राकृतक शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्रीक अतिरिक्त पैशाची प्राकृतक सेहो उल्लेख भेटैत अछि। गुणाढ्यक वृहत्कथा एहि प्राकृतमे लिखल गेल जे आब स्वतंत्र रूपसँ उपलब्ध नहि अछि। एकर उल्लेख उद्धरण रूपमे

कखनो काल भेटैत अछि। ई पश्चिमोत्तर भारतक प्राकृत छल, उद्धरण रूपमे उपलब्ध साहित्यक अनुसार एहिमे निम्न विशेषता छल। ण बदलि कऽ न भऽ गेल। र बदलि कऽ ल भऽ गेल। ल बदलि कऽ र भऽ गेल। सघोष अघोष बनि गेल। दू स्वरक बीचक ल बदलि कऽ ळ भऽ गेल। स्वरक बीचमे ष बदलि कऽ श वा स, ज्ञ बदलि कऽ न्य आ ण्य बदलि कऽ ञ्ञ भऽ गेल। एहिमे आत्मनेपद आ परस्मैपद दुनू अछि।
पश्चिमोत्तरक खोतानसँ प्राकृत धम्मपद खरोष्ठी लिपिमे दहिनसँ वाम लिखल लेख प्राप्त होइत अछि जाहिमे श, ष, स तीनूक प्रयोग अछि।
मोटा-मोटी प्राकृतमे शब्द-धातुरूपक सरलीकरणक प्रक्रिया दृष्टिगोचर होइत अछि, द्वित्व, मूर्धन्यीकरण, अघोषीकरण आ सघोषीकरण, लकारक बदला कृदन्तक प्रयोग सेहो बढ़ि गेल।

प्राकृत आ पालि:
प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्धकरैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४)। आ वैदिक कालमे संस्कृतकेँ संस्कृत नै भाषा कहल जाइ छल। आ जकरा आइ प्राकृत कहै छिऐ से पालिक बाद ओइ रूपमे बुझल गेल (साहित्य लेखन सम्बन्धमे)।
भरतक नाट्यशास्त्रमे ७ टा आ वररुचि ४ टा प्राकृतक चर्चा करै छथि। ओना तँ महावीरक वचन अर्ध-मागधी प्राकृत आ बुद्धक वचन मागधी-प्राकृतमे देल गेल मुदा ई दुनू मूलतः जनभाषा रहए।
मुदा जखन विभिन्न क्षेत्रक लोक जुमलाह तँ बुद्ध सभकेँ अपन क्षेत्रक भाषामे बुद्धवचन सिखबा लेल कहलन्हि: अनुजानामि भिक्खवे, सकायनिरुत्तियाबुद्धवचनं परियापुणितं- माने भिक्षु लोकनि, अपन-

अपन भाषामे बुद्धवचन सिखबाक अनुमति दै छी। आ बुद्धवचनमे प्रधान तत्व जनभाषा मागधीक रहल मुदा आन आन भाषाक तत्व सेहो फेंटाएल; आ से भाषा पालि भऽ गेल।

पालिमे:

"ऋ", "लृ", "ऐ", "औ" आ "अः" नै होइए आ "अं" स्वर नै व्यंजन होइए।

तालव्य श आ मूर्धन्य ष सेहो नै होइए मात्र दन्त स होइए।

संस्कृतक "ळ" व्यंजन होइए।

संस्कृतक संयुक्त व्यंजन "क्ष", "त्र" आ "ज्ञ" नै होइए।

"ऋ" बदलि कऽ "अ", "इ", "अ,इ", "इ,उ" भऽ जाइए। "वृ" बदलि कऽ "रु" भऽ जाइए।

"लृ" बदलि कऽ "उ"भऽ जाइए।

"ऐ" बदलि कऽ "इ" वा "ए" भऽ जाइए।

"औ" बदलि कऽ "उ" आ "ओ" भऽ जाइए।

संस्कृतक ह्रस्वक दीर्घ भेनाइ: सिंहः= सीहो

संस्कृतक दीर्घक ह्रस्व भेनाइ: मुनीन्द्रः= मुनिन्दो

निकटकस्वर: निषण्णः= निसिन्नो

बलाघात: मध्यमः= मज्झिमो

प्रसार: जयति=जेति

स्वरलोप: इति= ति

पालिमे ड आ ढ सेहो नै होइत अछि। तालव्य श आ मूर्धन्य ष लेल "स" वा "छ" प्रयुक्त होइए; ड लेल"ळ" आ ढ लेल "ल्ह" प्रयोग होइए।

क बदलैए "य" मे: जेना लौकिकः= लोकियो वा "व" मे जेना शुकः= सुवो

आगाँ-पाछाँ सेहो होइए: जेना मशकः=मकसोः, करेणुः=कणेरु

कवर्ग चवर्गमे बदलैए: कुन्दः=चुन्दो

तवर्ग टवर्गमे बदलैए: प्रथमः=पठमो

"ख" उष्मीकृत भऽ "ह"मे बदलैए: प्रखरः= पहरो

"क" घोषीकृत भऽ "ग" भऽ जाइए: मूकः=मूगो

"ग" अघोषीकृत भऽ "क" बनि जाइए: तडागम् = तळाकं

“झ” अल्पप्राणीकृत भऽ“ज” बनि जाइए: झल्लिका = जल्लिका
“प” महाप्राणीकृत भऽ “फ” बनि जाइए: परश्:= फरसु
व्यञ्जनक लोप सेहो होइए: पविसिष्यामि= पविस्सामि
दुर्बल संयुक्त व्यंजनक लोप: क्षत्रियः= खत्तियो
ध्वजः= धजो
आब सरलताक संधान देखो” गर्हा= गरहा; रत्नम् = रतनं
पालिमे तीनटा सन्धि अछि: स्वर, व्यंजन आ अनुस्वार (निग्गहीत) सन्धि।
स्वर सन्धि: स्वरक बाद स्वरमे पूर्ववर्ती/ परवर्ती स्वरक लोप वा ककरो लोप नै होइत अछि।
व्यंजन सन्धि: ह्रस्व वा दीर्घ स्वरक बाद व्यंजन एलापर ओ स्वरक्रमसँ दीर्घ आ ह्रस्व भऽ जाइए।
निग्गहीत सन्धि: अनुस्वार (निग्गहेत)क कतौ आगमन तँ कतौ लोप भऽ जाइए। जेना- त+खणे= तंखणे ;आ सं+रागो= सारागो
पालिमे दुइयेटा वचन होइत अछि- एकवचन आ बहुवचन; आ सात टा विभक्ति: पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी,पञ्चमी, छट्ठी, सत्तमी, आलपन। ५०० सँ ८०० धरि धातु नौ गणमे आठ लकार (आशीर्लिङ आ लुट् लकार नै होइत अछि) होइत अछि।
पालिमे समास संस्कृत सन होइत अछि।
प्राकृतमे:
ओना मूल बात यएह अछि जे सभ प्राकृत शब्दक संस्कृत रूप नै अछि।
साहित्यिक प्राकृतक कएक प्रकार होइत अछि।
पैशाची प्राकृतमे “ट” लेल “त” आ “ल” लेल”ळ”
अर्धमागधी प्राकृतमे मध्यक स्वतंत्र “क” बदलि जाइए “ग”, “त” वा “य” मे। दू टा स्वरक बीच “प” बदलि जाइए “व” मे।
शौरसेनी प्राकृतमे दू टा स्वरक बीचक स्वतंत्र “त” बदलि जाइए “द” मे आ “थ” बदलि जाइए “ह” वा ध” मे।
मागधी प्राकृतमे “र” क स्थानपर “ल”, “य” केर स्थानपर “य्य” वा “ज्ज”, “स” आ “ष” क स्थानपर “श” क प्रयोग होइत अछि।
प्राकृत मे ह्रस्व आ दीर्घ “ऋ”, “लृ”, “ऐ” आ “औ” नै होइत अछि। न

केर बदला “ण” होइत अछि।
ऋ बदलि जाइए: अ, आ, ई, उ, रि
लृ बदलि जाइए: इलि
ऐ बदलि जाइए: ए
औ बदलि जाइए: उ
दू स्वरक बीच क, ग, च, ज, त, द, य, व केर लोप होइत अछि जेना: लोक=लोअ, लावण्य= लाअण्ण
ख परिवर्तित भऽ जाइए ह मे: शाखा= शाहा
प्रारम्भक य भऽ जाइए ज, जेना: यम=जम
श आ ष भऽ जाइए स; क्ष भऽ जाइए ख वा छ वा झ; ज्ञ भऽ जाइए ण; त्व भऽ जाइए च; थ्व भऽ जाइए छ, द्व भऽ जाइए ज; ध्व भऽ जाइए झ।
सन्धि संस्कृत सन अछि। वचन दू- एकवचन आ बहुवचन, विभक्ति सात। संस्कृत जेकाँ धातु दस गण मे रहैत अछि, तुदादिगणक रूपक लोप भऽ जाइत अछि । भूत आ भविष्य मे एक्के-एक्के टा रूप होइत अछि।
प्राकृतमे समास संस्कृत सन होइत अछि।
३. अवहट्ट
अपभ्रंश जखन समापनपर छल तखन मोटामोटी एगारहमसँ चौदहम शताब्दी धरि “अवहट्ठ” साहित्यिक भाषाक रूपमे उपस्थित रहल। मैथिलीसँ एकर निकटताक कारण एकरा “मैथिल अपभ्रंश” सेहो कहल गेल आ ई अपभ्रंशक प्रकारक रूपमे सेहो मर्यादित रहल।
विद्यापतिक स्वयं कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक भाषाकेँ अवहट्ठ कहै छथि मुदा ताहूसँ पूर्व एहि शब्दक प्रयोग भाषाक सन्दर्भमे पहराज केने छथि “पाउअकोस”मे। अद्दहमाण अपन कृति संदेशरासकमे आ वंशीधर प्राकृत पंगलम् क टीकामे अवहट्ठक भाषाक रूपमे उलीख कएने छथि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- “पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ”। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्ठक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्‌दक स्वरांत होएब, क्रियारोपाक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक

रूप आदिक रूपरेखा अवहट्ठमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल। खास कऽ विद्यापतिक अवहट्ठमे मैथिली वर्तनीक इकार, ओकार, आ अनुनासिकक बदलामे “कचटतप”वर्गक पाँचम अनुनासिक वर्णक प्रयोग देखबामे अबैत अछि मुदा हुनकर अवहट्ठ भाषामे कखनो काल बुझाइत अछि जे ई भाषा खाँटी मैथिली अछि तँ कखनो एहिमे प्राकृत, फारसी, गुजराती-सौराष्ट्री अवधी आ कोशली भाषाक शब्दावलीक बेशी प्रयोग भेटैत अछि। आ सैह कारण रहल होएत जे हुनकर अवहट्ठ सर्वदेशीय (राजशेखर कहै छथि “विश्व-कुतुहली”) बनि सकल। एकर दूटा देवनागरी पाण्डुलिपि दू ठामसँ- गुजरातक स्तम्भतीर्थमे आ उत्तर प्रदेशक फतेहपुर जिलाक असनी गाममे भेटल आ एकटा मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि नेपालसँ भेटल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ठ (अवहट्ठ) केँ “मैथिल अपभ्रंश” ताहि कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्ठक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ एहिमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक “कीर्तिलता” अवहट्ठमे अछि, मुदा “चर्या गीत” आ “वर्ण रत्नाकर” कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्ठसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक “उक्ति व्यक्ति प्रकरण” सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्ठसँ लग अछि। संगे ईहो सत्य जे कीर्तिलता आ कीर्तिपताकामे विद्यापति अवहट्ठक कतेको प्रकारसँ प्रयोग करै छथि। पहिने तँ ई अपभ्रंशक पर्यायक रूपमे प्रयुक्त होइत छल मुदा जेना जेना अपभ्रंशक विशेषताकेँ ई छोड़ैत गेल आ आधुनिक भारतीय भाषाक व्याकरणिक विशेषताक, खास कऽ मैथिलीक व्याकरणिक विशेषताक आधार बनऽ लागल तखन ई अपभ्रंशसँ पृथक् अवहट्ठक रूप लेलक। एकर प्रमुख व्याकरणिक विशेषता अछि- स्वर संयोग, क्षतिपूर्तिक लेल दीर्घीकरण, व्यंजनक अपन खास विशेषता, रूपक

विचार (लिंग-वचन), निर्विभक्तिक प्रयोग, कारक-परसर्ग, कारक विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, क्रिया, कृदन्त, आज्ञार्थक, पूर्वकालिक, संयुक्त क्रिया, क्रिया विशेषण, शब्दावलीक विशेषता, पूर्व स्वरपर स्वराघात, स्वर सानुनासिकतामे परिवर्तन, अकारण सानुनासिकताक प्रवृत्ति, एक संग अनेक स्वरक प्रयोग, अक्षर लोप, परसर्गक स्थानपर मूल शब्द, सर्वनामक प्रचुरता, क्रियापदक विकास आ वाक्य रचना।

अवहट्ठ भाषामे जैन धर्मसँ सम्बन्धित रचना ढेर रास अछि आ ओहिमे शौरसेनीक प्रभाव अछि।अवहट्ठक मुख्य क्षेत्र छल मान्यखेत, गुजरात, बंगाल आ मिथिला। जैन धर्मसँ सम्बन्धित लोक मुख्य रूपसँ मान्यखेतमे रहथि। “वज्जालग्ग” श्वेताम्बर मुनि जयवल्लभ द्वारा संकलित सुभाषितक संग्रह छथिजाहिमे अवहट्ठक प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि।शालिभद्र सूरीक “भरतेश्वर बाहुवली रास”, एकटा दोसर शालिभद्र सूरीक “पंच पाण्डव चरित”, स्थूलिभद्र रास, जयशेखर सूरीक “नेमिनाथ फागु”, सकलकीर्तिक “सोलह कारण रास”क अतिरिक्त मौखिक काव्य जेना बैद्ध सिद्ध साहित्य, डाक, धर्ममंगल काव्य, शून्यपुराण, माणिकचन्द्र राजार गान, लोरिकाइन जनक मध्य आएल। अवहट्ठक बाद ब्रजबुली द्वारा राय रमानन्द, शंकरदेव आ चैतन्यदव लोकभाषाक माध्यमसँ जन धरि पहुँचलाह। अवहट्ठक प्रभाव ब्रजबुली आ मैथिलीपर पड़ल। द्वारा बारहम शताब्दीक डाकार्णव नेपालमे रचित अछि जकर लिपि मिथिलाक्षर आ भाषा अवहट्ठ अछि। मिथिलामे कर्णाट आ ओइनवार राजवंशक कालमे अवहट्ठमे रचना कएल गेल।सिद्ध साहित्य, बौद्धक दोहाकोश-चर्यागीत आ ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे अवहट्ठक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल छल। मुनिराम सिंहक पाहुड दोहा आ बौद्ध धर्मक वज्रयानक ग्रन्थमे सेहो अवहट्ठक रूप देखबामे अबैत अछि। दामोदर पंडितक उक्तिव्यक्तिप्रकरण अवहट्ठमे रचित अछि, ई संस्कृत सिखेबाक ग्रन्थ अछि। बारहम शताब्दीक पूर्वार्धमे उद्दहभाण “संदेश रासय”क रचना कएलन्हि, रचयिता स्वयं एहि ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ठ कहै छथि। प्राकृत् पैंगलम् -जे छन्दशास्त्रक संकलन अछि आ जकर संकलनकर्ताक नाम अज्ञात अछि- क टीकाकार सेहो एहि ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ठ कहि

सम्बोधित कएने छथि। विद्यापतिक कीर्तिलता आ कीर्तिपताका सेहो अवहट्ठमे रचित भेल।

अवहट्ठक अपभ्रंशसँ व्याकरणिक भिन्नता आ मैथिलीसँ सन्निकटता: दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ; पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहैत छलाह। संस्कृतक ऐ, औ क्रमसँ अइ, अउ ध्वनि बनि गेल आ ओहिसँ किछु आर स्वर बहार भेल। संस्कृतक बादबला भाषा खास कऽ मध्यकालिक भाषामे लगातार दू वा तीन स्वरक प्रयोगसँ ध्वनि आ लेखन दुनूमे विचित्रता आएल। आधुनिक भाषाक लेल आवश्यक छल जे पुनः व्यंजनक बेशी प्रयोग कऽ, तत्समक बेशी प्रयोग कऽ पूर्वस्थिति आनल जाए, जाहिसँ उच्चारण आ लेखन सरल भऽ सकए। क्रियाक अन्तमे आ आन पदक सभ स्थानमे स्वरकेँ संयुक्त करब प्रारम्भ भेल। एहिमे “ऐ” आ “औ” अवहट्ठक विशेषाता रूपमे परिगणित भेल। जेना टुट्टै=टूटै, गुण्णइ=गुणै, पइ=पै, रहइ=रहै, करउ=करौ, चअउर=चौरा, दुण्णउ=दूणौ, तउ=तौ, आअउ=आऔ।

ऋ एहि तीन रूपमे ध्वनित होमए लागल। र्+अ, र्+इ , र्+उ आ मध्य रूप माने रि (र्+इ) एहि रूपमे स्थिर होमए लागल। जेना अमृत= अमिअ एहिमे मृ=मि भऽ गेल अछि।

स्वरमे किछु आर परिवर्तन भेल। शब्द प्रारम्भक स्वरक दीर्घ होएब स्वाभाविक लगैत अछि, जेना आँचल=आँचर। स्त्रीलिंगमे अन्तिम आ लुप्त होमए लागल जेना भिक्षा=भीख। स्वरक बहुलताबला शब्दमे सन्धि आ लुप्तीकरण बढ़ल, जेना धरित्री=धरती, उपआस=उपास।

अपभ्रंशक अंधआर=अंधार (संधि) बनि गेल।

कज्ज=काज बनि गेल (दीर्घ)

अंचल=आँचर (अनुनासिक)

व्यंजन ओहिना रहल मुदा ण कम आ ञ बेशी प्रयोगमे आबए लागल आ ड़, ढ़ ई दुनू नव व्यंजन आएल। क्ष=क्+ष बदलि कऽ ष्ख होमए लागल। न आ ल मे सेहो पर्याय बनल जेना नहिअ=लहिअ आइ काल्हि सेहो मैथिलीमे लोर आ नोर दुनू बाजल जाइत अछि।

उ सँ अन्त होमएबला संज्ञा रहल मुदा अ, आ, इ, ई, ऊ, ऐ ,ओ सेहो

संज्ञाक अन्तमे आबए लागल। न्हि अन्तिममे लगा कऽ बहुवचन बनेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, जेना युवराजन्हि। द्विवचन खतम भऽ गेल आ तकर बदला बहुवचनक प्रयोग भेल आ ताहि लेल सव्वउं (सभ)क प्रयोग प्रारम्भ भेल। लिंगसँ विशेषणक रूप परिवर्तन आ लुप्तविभक्ति-निर्विभक्तिक प्रयोग बेशी होमए लागल। विशेषणक रूप परिवर्तित भेल। जेना अइस, एत्ते, कतहु, पहिल, चारु।

कारकक विभक्तिक संग सन, सउं, क, माझ, केर, लागि आदिक प्रयोग होमए लागल।

पश्चिमी अवहट्ठमे विभक्तिक प्रयोग घटल मुदा पूर्वी अवहट्ठमे ए, हि विभक्तिसँ ढेर रास काज लेल गेल।

सर्वनाम कर्ता लेल हौ, तोञ, सो आ संबंध लेल मोञ, तुम्ह, तिसु प्रयुक्त होमए लागल।

क्रियामे करउँ, करसि, करथि प्रयुक्त होमए लागल। कृदन्त रूपमे पढ़न्ता, चलु, उपजु, गेल, भेल, कहल, मारल, चलल, करहुं, कहसि, जाहि, पावथि प्रयुक्त होमए लागल।

संयुक्त काल जेना आवत्त हुअ प्रयुक्त होमए लागल।

भविष्यत् कालक पूर्वी रूपमे व लगैत छल आ पछबरिया रूपमे ह लगैत छल।

क्रियाविशेषणमे जनु, नहु,बिनु अबस प्रयुक्त होमए लागल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात, जेना: अक्खर= आखर।

सर्वनामक संख्यामे वृद्धि भेल।

क्रियापदमे विकासक फलस्वरूप कृदन्तक प्रयोग वर्तमानकालमे बेशी होमए लागल।

आब वाक्यमे शब्दक स्थानक निर्धारण आवश्यक भऽ गेल। मोटामोटी कर्ता, कर्म आ आखिरीमे क्रिया राखल जाए लागल।

संयुक्त कालक प्रयोग सेहो आरम्भ भेल।

शब्दक पहिल अक्षरक स्वरक दीर्घ होएबाक प्रवृत्ति अवहट्ठमे बेशी अछि, स्त्रीलिंग शब्दमे शब्दक अन्तिम अक्षरक आ लुप्त होमए लागल। अनुनासिक शब्दक संख्यामे वृद्धि भेल। संज्ञाक लंग आ वचन तँ दुइयेटा रहल मुदा एकवचनक प्रयोग बहुवचनमे होमए लागल।प्रातिपदिक

अधिकांशतः स्वरान्त अछि आ अकारान्त सेहो।विभक्तिक बदलामे परसर्गक प्रयोग होमए लागल। अपादान लेल हुंते, सउँ प्रयोगमे आबए लागल आ अधिकरण लेल माँझ, उप्परि आ एहि दुनू (अपादान आ अधिकरण) लेल कखनो काल चन्द्रबिन्दु टासँ काज चलि गेल, “हिं” विभक्ति सेहो कतेको कारकक लेल प्रयुक्त भेल आ “ए” विभक्ति सँ कर्म, करण, अधिकरण सभटाक भान होमए लागल। संज्ञाक एहि तरहक सरलीकरण सर्वनाममे सेहो देखबामे अबैत अछि। क्रियाक निर्माणमे सरलता आएल आ से भेल कृदन्तक बेशी प्रयोगसँ आ संयुक्त क्रियाक बढ़ोत्तरीसँ। भूतकाल “ल” लगा कऽ सेहो बनए लागल, आ भविष्यत् काल “व” लगा कऽ सेहो, जेना थाकल, पढ़ब जे बादमे मैथिलीमे सेहो आएल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात आ स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरण अवहट्ठक मुख्य विशेषता अछि। अपभ्रंशक अक्खर, ठक्कुर आ नच्चइ क्रमसँ आखर, ठाकुर आ नाचइ भऽ गेल। स्वरक सानुनासिकतामे परिवर्तन भेल जाहिसँ पुरान निअममे परिवर्तन भेल। पहिने स्पर्श व्यंजनमे अनुस्वारक अभाव छल आ कचटतप क पाँचम वर्ण तकर बदलामे संयुक्त भऽ प्रयुक्त होइत छल। अपवादमे य सँ ह धरिक वर्णक उपस्थितिअहिमे अनुस्वार लगैत छल। पूर्‌व स्वरपर स्वराघात आ क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त युक्ताक्षरक पूर्वस्वरपर स्वराघातक संग अनुस्वार आबए लागल, जेना- ऊसास/ आंग/ आँकुस/ आँचर/ काँट/ लाँघि/ पाँच/ चाँद/ आँगन/ क्रमसँ
उस्सास/ अंग/ अंकुस/ अंचल/ कण्टक/ लघ्/ पंच/ चन्द्र/ अंगण/ क बदलामे आबि गेल। स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त अनुस्वारकेँ ह्रस्व कएल जाए लागल आ आधुनिक मैथिलीक अकारण आनुनासिकताक प्रवृत्तिक आरम्भ भेल, जेना- कज्ज=काँज, कच्चुः=काँच, भग्ग=भाँग, ओष्ठ=ओंदिम।
अक्षर लोपः संकोच वा अक्षर लोपक कारणसँ अन्धकार=अन्हार, देवकुल= देउर, देवगृह=देवहा, कोट्टशीर्ष=कोसीस, उपवास=उपास,

उत्तिष्ठ=उँट, सहकार=सहार, स्वर्णकार=सोनार, सुन्नाअर=सुन्नार, सहयार=साहार भऽ गेल।

परसर्गक प्रयोगमे वृद्धि: अपभ्रंशक परसर्गक प्रयोगमे अवहट्ठ कालमे आर वृद्धि भेल। जेना-

कर्ता- एन्ने

करण-सन, सउं

सम्प्रदान-लागि, लग्गि, लागे, प्रति, कारण

अपादान-सओ, हुत, हुते, हुंति, सिउ

संबंध- केर, कर, के, करेउ, कइ, क

अधिकरण- माझ, ऊपर, माँझ, भीतर, माहि

सर्वनामक आधिक्य: कीर्तिलतामे जेन्ने, आ आन ठाम मोर, मेरहु, तोरा, तोहार, तोहर, तोरा आदि सर्वनामक प्रयोग प्रारम्भ भेल। संबधवाचक सर्वनाम- जञोन, जेन्ने, जस, जसु, जे; प्रश्न वाचक- केहु, कोए; अनिश्चयवाचक- कोइ, केहु; निजवाचक- अपन, अपनेहु, निअ आदिक प्रयोग होमए लागल।

कृदन्तक प्रयोग क्रियापदक विकसित रूप: आब कृदन्तक प्रयोगमे वृद्धि भेल जेना भूतकालक कृदन्तक प्रयोग वर्तमान जेकाँ होएब आ कखनो काल अपन पूर्ण रूपमे सेहो होएब।

वर्तमान लेल कृन्तक प्रयोग पढ़न्ता, कहन्ता, आवन्ता; भविष्यत् काल लेल करहुं, करिहि आ भूतकाल लेल कृदन्तक प्रयोग जेना चलु, लागु क प्रयोग भेल।

“अन्त” सँ आधुनिक “ता” निकलल अछि आ “अन्त” क प्रयोग बढ़ि गेल। संयुक्त क्रियाक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल- जेना “ले” जोड़ि कऽ क्रिया बनाएब “खाइले”; सामर्थ्यसूचक पार आ आरम्भसूचक चाह/ लागु क प्रयोग आरम्भ भेल।

४.मैथिली

ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ठकेँ “मैथिल अपभ्रंश” ताहि कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ

लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ एहिमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक “कीर्तिलता” अवहट्ठमे अछि, मुदा “चर्या गीत” आ “वर्ण रत्नाकर” कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्ठसँ सेहो लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्ठक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

ध्वनि: दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम , मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नहि सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य शमे जीह तालुसँ , षमे मूर्धासँ आ दन्त समे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे ष कें वैदिक संस्कृत जेकाँ ख सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जेकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जेकाँ (यथा संयोग आ गणेश संजोग आ गड़ेस उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

पानि-पाइन-पैन

अछि- अ इ छ ऐछ

छथि- छ इ थ – छैथ

पहुँचि- प हुँ इ च

तखन प्रश्न उठैत अछि जे “छथि” कें छैथ लिखबामे की हर्ज? हर्ज अछि, कारण मिथिलाक बहुतो क्षेत्रमे छथि, छथी, पानि, पानी, पहुँचि, पहुँची

सेहो बाजल जाइत अछि। से पानि, रहथि, पहुँचि लिखलासँ सभ क्षेत्रक प्रतिनिधित्व होइत अछि।
आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ एहि सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा एहिमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कैँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ कैँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- एहि लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककैँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि।
फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।
फेर कैँ / सँ / पर पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा तँ/ के/ कऽ हटा कऽ। एहिमे सँ मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ– जेना छहटा मुदा सभ टा। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नहि। घरबलामे बला मुदा घरवालीमे वाली प्रयुक्त करू।
रहए- रहै मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।
मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास रहै ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्ना ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत रहए।
छलै, छलए मे सेहो एहि तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।
संयोगने- (उच्चारण संजोगने)
कैँ/ के / कऽ
केर- क (केर क प्रयोग नहि करू)
क (जेना रामक) –रामक आ संगे (उच्चारण राम के / राम कऽ सेहो)
सँ- सऽ

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नहि। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकेँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

केँ जेना रामकेँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकेँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ तऽ त केर एहि सभक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थेँ प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना के कहलक?

नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ एहि सभक उच्चारण- नै

अ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मन=मोन, वन=बोन (वर्तुल)

अ कखनो काल आ भऽ जाइत अछि, जेना- फंदा=फान, चन्द्र=चान (स्वराघात)

घर=घऽर (उच्चारण) (स्वराघात)

बुद्ध=बुद्धऽ (उच्चारण) (स्वराघात)

घमसान=घमऽसान (दीर्घक पहिनेक ह्रस्व स्पश्ट उच्चरित- स्वराघात)

"इ" क पहिने "आ" रहलापर "ऐ" उच्चरित होइत अछि- जेना पानि=पैन, मुदा विभिन्न क्षेत्रमे पानी, पानि बाजल जाइत अछि तेँ वर्तनीमे पानि, आगि लिखब उचिते अछि।

आ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि, जेना काका=कक्का।

इ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना रिवाज=रेबाज।

ऋ कखनो काल इ/ ई/ ऊ भऽ जाइत अछि जेना कृष्ण=किसुन, पृष्ठ=पीठ, वृद्ध=बूढ़।

अन्तमे "ई" क बदलामे इ लिखल जाइत अछि।

ऋ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि जेना- वृषभ=बसहा, अहृदी=अहदी।

उ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना दुकान=दोकान

ऊ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मूल्य=मोल।

अए कखनो काल ए भऽ जाइत अछि जेना कएलनि=केलनि।
ऐ कखनो काल अइ/ अए भऽ जाइत अछि जेना भैया=भइया, पैर=पएर।
आ+ओ कखनो काल औ भऽ जाइत अछि जेना गमाओल=गमौल।
क कखनो काल ख/ ग भऽ जाइत अछि जेना पुष्करि=पोखरि, भक्त=भगत।
ष कखनो काल शब्दक प्रारम्भ वा अन्तमे रहलापर ख भऽ जाइत अछि जेना षष्ठी=खष्ठी, भेष-भूषा=भेख-भूखा।
क्ष कखनो काल ख भऽ जाइत अछि जेना क्षीर=खीर।
ज्ञ कखनो काल ग भऽ जाइत अछि जेना यज्ञ=जाग।
ग कखनो काल घ भऽ जाइत अछि जेना गर्ग=घाघ।
त्य कखनो काल च भऽ जाइत अछि जेना सत्य=साँच।
त्स्य कखनो काल छ भऽ जाइत अछि जेना मत्स्य=माँछ।
य कखनो काल शब्दक प्रारम्भमे रहलापर ज भऽ जाइत अछि जेना यम=जम।
द्य कखनो काल ज भऽ जाइत अछि जेना विद्युत=बिजुली।
ध्य कखनो काल झ भऽ जाइत अछि जेना वंध्या=बाँझ।
त कखनो काल ट भऽ जाइत अछि जेना कर्तन=काटब।
न्थ कखनो काल ठ भऽ जाइत अछि जेना ग्रन्थि=गेंठ।
द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दण्ड=डाँट।
त कखनो काल लुप्त भऽ जाइत अछि जेना जाइत=जाइ।
स्त कखनो काल थ भऽ जाइत अछि जेनाप्रस्तर=पाथर।
द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दाह=डाह।
ध कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर दह भऽ जाइत अछि जेना गधा=गदहा।
ल कखनो काल न भऽ जाइत अछि आ न कखनो काल ल भऽ जाइत अछि जेना नोर=लोर।
प कखनो काल फ भऽ जाइत अछि जेना पाश=फाँस।
फ कखनो काल “प” आ “ह” भऽ जाइत अछि जेना बेवकूफ=बेकूफ।
ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना शैबाल=सेमार।
म्भ कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना खम्भा=खमहा।

म्ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना कम्बल=कम्मल।
ल कखनो काल र भऽ जाइत अछि जेना हल=हर।
व कखनो काल भ भऽ जाइत अछि जेना वाष्प=भाप।
ह कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर लुप्त भऽ जाइत अछि जेना गेलाह=गेला।
त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नहि) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नहि- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नहि)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नहि)।
मे कैँ सँ पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेशी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकैँ सटाऊ।
एकटा दूटा (मुदा कैक टा)
बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नहि। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नहि (जेना दिअ, आ)
अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारी (ऽ -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि) क बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d’etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नहि दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।
मैथिलीक मात्रात्मक आघातमे ह्रस्व स्वरपर आघात पड़लापर ओ दीर्घ भऽ जाइत अछि।शब्दमे जौँ दीर्घ स्वर रहत तँ आघात ओहिपर, दीर्घ नहि रहत तँ उपान्त्य स्वरपर आ जतए दूटा दीर्घ लगातार अछि ओतए सेहो उपान्त्य दीर्घपर आघात पड़ैत अछि।पा’नि, ओसा’रा। बलात्मक आघात

सेहो गपपर जोर देबा काल प्रयुक्त होइत अछि जेना- अपन=अप्पन। जाहि स्वरपर आघात पड़त तकर पूर्वक सभ स्वर ह्रस्व भऽ जाइत अछि।

मैथिलीक उच्चारण आ लेखनक विशेषता:

१.पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-
अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)
पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)
खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)
सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)
खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)
उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।
नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२.ढ आ ढ़ : ढ़क उच्चारण “र् ह”जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ “र् ह”क

उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-
ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।
ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।
उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।
३.व आ ब : मैथिलीमे “व”क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहि सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।
४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।
५.ए आ य : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।
प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।
नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।
सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि। ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ

मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो “ए”क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६.हि, हु तथा एकार, ओकार : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७.ष तथा ख : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.ध्वनि-लोप : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़’ गेलाह, कऽ लेल, उठ’ पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-
पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।
अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।
(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-
पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।
अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।
(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-
पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।
अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९.ध्वनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।
१०.हलन्त(्)क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त (्)क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि।
११. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाइत अछि- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।

१२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाइत अछि: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

१३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाइत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

१४. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाइत अछि जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

१५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

१६. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

१७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ

यथावत राखल जाइत अछि, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाइत अछि। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

१८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाइत अछि। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

१९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाइत अछि वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

२०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'कऽ क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

२१. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

२२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाइत अछि।

२३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाइत अछि, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

२४. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाइत अछि, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाइत अछि। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

२५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा कऽ लिखल जाइत अछि, हटा कऽ नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाइत अछि, यथा घर परक।

२६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाइत अछि। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

२७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाइत अछि।

२८. समस्त पद सटा कऽ लिखल जाइत अछि, वा हाइफेनसँ जोड़ि कऽ , हटा कऽ नहि।

२९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि- (ऽ) नहि लगाओल जाइत अछि।

३०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाइत अछि।

३१.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जएबाक चाही। जा ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाइत अछि। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाइत अछि।

मैथिली व्याकरणक विशेषता: मैथिलीक विकास बौद्ध सिद्ध आचार्य, फेर कर्णाट आ ओइनवार राजवंश, मल्ल राजवंश आ मध्यकालक मैथिली आ आधुनिक मैथिलीक तथाकथित मानक आ पूब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण भिन्नताक अनुसार परिवर्तित होइत रहल अछि आ मैथिली व्याकरण एहि सभ विशेषताकेँ संग लऽ कऽ चलैत अछि।
मैथिलीमे सभ शब्द स्वरांत, अ वृत्ताकार, ए, य, ऐ, यै, ओ, औ ई सभ स्पष्ट उच्चरित होइत अछि। सम्बन्ध कारक लेल सँ, क, केर (बेशी पद्यमे

प्रयुक्त) प्रयुक्त होइत अछि। संज्ञा रूप कम-सरल (एकवचनसँ बहुवचन करबा लेल सभ आदि जोड़ि दियौ) मुदा क्रिया-धातुरूप बेशी होइत अछि। आदर आ अनादरपूर्ण प्रयोगमे क्रियापदमे परिवर्तन होइत अछि। मैथिलीमे क्रियाक रूप कर्ता आ वाक्यक दोसर संज्ञा, सर्वनाम (कर्तासँ सम्बद्ध) द्वारा निर्धारित होइत अछि। मैथिलीमे क्रिया पुरुष-भेदक अनुरूप बदलैत अछि। मैथिलीमे ब द्वारा भविष्यत् कालक अलाबे क्रियार्थी संज्ञा सेहो बनाओल जाइत अछि। ल प्रयुक्त कए कृदन्त कहल, गेल मे परिवर्तन मैथिलीक विशिष्टता अछि।

मैथिलीमे शब्दक भिन्न-भिन्न वर्णपर बलाघात होइत अछि। मैथिलीमे कारक विभक्तिसँ ओना तँ तिर्यक रूप नहि देखबामे अबैत अछि, जेना गामक, मुदा सम्बन्ध कारकमे ई अपवाद अछि, जेना साँझ-साँझुक। क्रियार्थ संज्ञा रूपमे सेहो तिर्यक रूप होइत अछि।

संज्ञा:कोनो वस्तुक नाममे लघु, गुरु आ गुरुतर ई तीन रूप होइत अछि- मनोज्, मनोज, मनोजबा।

लिंग:लिंगरूप सरल अछि। निर्जीवक लिंग पुल्लिंग भऽ गेल अछि। संज्ञामे लिंगसँ शब्दक रूप परिवर्तन नहि होइत अछि मुदा विशेषण आ क्रियामे होइत अछि।

वचन:संज्ञामे वचनक भिन्नतासँ परिवर्तन नहि होइत अछि। लोकनि, रास आदि शब्द जोड़ि कऽ तकर बोध कराओल जाइत अछि। “हम” एकवचन अछि आ “हमसभ” बहुवचन।

विभक्ति:करण -ए- जेना काजे। अधिकरण- आँ-हि- जेना परुकाँ, चोट्टहि ।

कारक: कर्ता- रिक्त, कर्म- कैँ, करण- सँ, संप्रदान- लए, अपादान- सँ, संबंध-क, केर(पद्यमे), अधिकरण—मे।

सर्वनाम:उत्तम पुरुष- हम, हमे

मध्यम पुरुष- तूँ, तोँ, अहाँ, अपने, ई

अन्य पुरुष-ताहि, तकरा, तकर, हुनका, हुनि, ओकरा, हुनकर, ओकर, हिनका, एकर, हिनकर, जाहि, जकरा, जकर, के, की, ककरा, अपन, कोन, किछु, केदन, केहनदन, कोनादन, एतबा, कतबा, ततबा, ततेक।

क्रियाविशेषण: एतए, कहाँ, कखन, जखन, जाबे, ताबे, आबे, आब, जहिआ, तहिआ, कहिआ, जेना, तेना, एम्हर, ओम्हर, जेम्हर, तेम्हर, भर(दक्षिणभर)। कालबोधक-आइ, काल्हि, परसू, लगले, परुकाँ; स्थानबोधक- जेना आगाँ, पाछाँ; प्रकारबोधक- जेना भने, कने-मने; संयोजक जेना मुदा, आर; सम्बोधन जेना रौ, हौ; समुच्चयबोधक जेना ईह, छी; बलद्योतक जेना –ए ; नहि, भरिसक आदि विविध क्रियाविशेषण होइत अछि।

उपसर्ग: अ, अन, अध, अब, दु, नि, भरि, कम, ब, बद, बे, सर।

प्रत्यय: अक्कड़, अंत, इल, आइन, आइ,आउ, आकू, आन, आना, आप, आयत, आर, इन, बाह, आरि, आरी, आहु, औन, इअल, इआ, ई, गर, ऐत, ओड़, ओला, औटी, औती, ओना, औबिल, क, त, औत, आइ, बान, म, बला, हार, हा, ई, कार, बाह, आनी, खाना, खोर, गरी, ची, बाज।

विशेषण:एहिमे आदर आ लिंगक अनुसार परिवर्तन होइत अछि।सिलेबी, गोल, चर्की ई गाए-बड़द लेल प्रयुक्त होइत अछि आ विशेषणसँ प्राणिक बोध भऽ जाइत अछि। पढ़ल (पुल्लिंग) आ पढ़लि (स्त्रीलिंग), मझिला छौड़ा-माँझिल भाइ(आदर)।

क्रिया: वचन भेद मैथिली क्रियामे नहि होइत अछि।पुरुषक अनुसार क्रियामे भेद अबैत अछि। आदर प्रदर्शनमे सेहो क्रियारूप बदलैत अछि।तिङन्त मे लिंगभेद नहि होइत अछि मुदा कृदन्तमे लिंगक अनुसार क्रियापद बदलि जाइत अछि। क्रिया कारकक अनुसार बदलैत अछि। एहि प्रकारसँ क्रिया देखि कऽ मात्र ई पता लागत जे कर्ता आदरणीय अछि वा नहि, क्रियाक कर्म कोन पुरुषमे अछि आ आदरणीय अछि वा नहि। क्रियाग चारि रूप जेना स्वयं मरब (मरैत अछि), मारब (मारैत अछि), दोसरासँ मरबाएब (मरबैत अछि) आ कर्मवाचानुसार ककरो कहि कऽ मरबाएब (मरबबैत अछि)- होइत अछि।

धातुरूप- मैथिलीमे लगभग १२२५ धातुरूप दीनबन्धु झा संकलित कएने छथि जे पाणिनीक २००० धातुसँ कनिये कम अछि। आ यैह १२२५ टा धातु मैथिली भाषाक स्वतंत्र अस्तित्वकेँ असगरे बनओने रखबा लेल पर्याप्त अछि। किछु उदाहरण:

छक- अविरोधपूर्वक अन्यक्रियासँ दबब अर्थमे- रूपलाल फुल तोड़बामे

सोनेलालसँ छकलाह-जीतल गेलाह।

ठक- परतारब, वञ्चना- ठक बुड़िबककेँ ठकैत अछि- ओकर वस्तु लए लेबाक हेतु भ्रम उत्पन्न करबैत अछि।

डक- अपन उत्कट गन्धक प्रसारण- हीँगु डकैत अछि-अपन तीव्र गन्धक प्रसार करैत अछि।

ढक- मिथ्या अपन अतिप्रशंसा करब- जयलाल ढकैत छथि-अपन मिथ्या अति प्रशंसा बजैत छथि।

बक- अश्रव्य बहुत बाजब- जयलाल बकैत छथि- नहि सुनबाक योग्य कथा बहुत बजैत छथि।

मक- हर्षसँ मालक धावनक्रीड़ा- बाछा मकैत अछि, लीलसँ एम्हर ओम्हर दौगि रहल अछि।

बाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- "पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ" संगहि ज्योतिरीश्वर द्वारा सात "उपभाषक" चर्च भेल अछि। प्राकृतक कैकटा प्रकार छल। ओहिमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्ठक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्दक स्वरांत होएब, क्रियारूपक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्ठमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल।

मैथिलीक वर्तनी

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

कैथी लिपि

वर्णमाला



अ

अ आ इ उ ए ऐ

क

कँ खँ गँ घ

च

चँ च छँ जँ झँ झा

ट

टँ ठँ ठँ ड डे ढ ढ़ णँ ण णँ ण

त

त थ द दँ धँ थँ

प

प फ. ब ब भ भ म म म

य

यँ र ल व श्रा

त्र ह ह

कुनजन झा बौकु झा

खे ठीठर

गाँ आत्माराम

गाँ कृस्नदत

जा

जे

बे शाख मूल नेश्वरीदत्त मीश्र शात ला रवा

के

ढी ढी हुँ शा लें मकुर पाँजि

ति ते तारानाथ ठाकुर

श्याम नाथ श्री प्रीत नाथ दि

थी हीरवी केश

प पा पै पु पो भैं मा भा

रां

मर्यादा ला लि गुँजँ पँत्तीँ लैं लें

चंद्रमणी ठाकुर

शु

स से सी सौं

ठाकुरक बालक

ठाकुरक बालक

श्री ह

(3)

कमलादत्त

शाल्य श्रीठो ग्रा कु कु मोटन

कै डेउढी झींगुर हीदए

लुचाई कल्यान रामदेव

रशाद परम

ब-व नीजुक्त (नियुक्त) रैआशत बन्देली मध्य

च्य न्त हूँ खु म्प जीवपती

रुद्रपतीऑ नन्द जल्दी पीताम्बर (पीताम्बर) मुब शीह राए

श्रीजमोहन दुर्यामुआ ड्यो म्हाराज रुद्र शीहक बाबु रैमापत शींघ

अछि मरा सतं (शतं) मोकाम सिंह नी शौंत

रघुबरैआकबालके कौशौरैआकबालकै दुर्गानाथ

रौधानाथआक दौहीत्र पतीआकबालकै कौद्यानाथऑ

लछमीदत्तऑ श्रीभीखरैआकबालकै ग्राम रआम = ग्राँमे लोहना

महाराजधेत्र शीहक दौहीत्र धरमरमआक गोशाईं ग्राम शाबे श्रीमा

महेश्वर ठाकुरैक बालकै शौनठाकुरक बालकै श्री शौसीनंदनं

(4)

1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]

१३३४—
शाल—

1 शोइती शकल गुणागार मरजादाक प्रा-
2 बार श्री जुत श्री पंजीकार श्री मीरवीआ-
3 झा शर्मनो म्हाशऐरवु उतह- अजबलाल
4 शय मझयकार शतंग - कुशल चमुमर
5 म शतं आगा शुरती जे हम(र) कन्या फार
6 शा डागी दीशक नकर कधा श्री रामा —
7 नाथ झाक बालक शो नीशचे मेल अध्य(अधि)
8 ताही शो अपने के लीखल अदर जे
9 अधीकार ताकी के शीधान्त लीखकै देब-
10 न - हम खुद जेतो ~~मग्र~~ मग्र(मग) आज V+१०|दीन
11 शे जड़ मऐ रहल अदर ताही शो गार नही
12 मेल - जादा - नाशयका ता- १ माह जेठ

१३३४|—
शाल

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1-. कन्याक परिचे

2- कन्या - उदेकान्त झाक - जैनगर - मुल ञतखवे शतौल -

3 पौत्री लाल झाक बीचाड़ी दौभीत्री पन्ची झार - ऐक

4 हड़े वोड़ा - शीमरबनी - दोभीत्री पौत्री जीआ -

5 लाल झाक - जागुर - बेभनगामा - पैनचोभे लरमो -

6 ल (ब्रह्मोलि) - चीन्तामणि झा - अड़ेवारु उशरौली

[illegible]

(6)



શ્રી —

ઉ૧.૧૨૧.
તારીખ: ૩/ માર્ચ
શક.૧૩૪૨૧૧૯
(મુકામ)

1 શ્રોશ્ર-૨૩૩ (ગ)આ.ગ.ર- મા.મા
2 ઠાક મારાશ્રાર- શ્રી (પ્ર) જ મોરીકાર-પીશી, ઉન (દુર્ગા)
3 ગામઠઠ- નુમશ્રકારા: શગ = શને (ઉ)શઠેવ- હતે કા-
4 (ઉશઠ) નીકે માનઠ- માર. આપને- ભોકનીક (ઉશાભ)
5 દી- પ્રતીપઠ- આપશીન- શામાવાર- મો આપનેકપા
6 હગામ- ઉછેરૂ દીન આદમી- પઠાઆઠ- (મુદ્દા) આમ
7 નો શ જોટનરી-લોઠ- પગાભાગઠ- મો આપને
8 (શુ)ઠવાનપ્રા- મે છી- ને (દુ)આરે આનંદાપણ
9 પઠ- આઠી- મો દ્રશ્યઆ- આપને શામીઠ આવી
10 ઠોક આપી- પા. આદીવેન- નદીઆ-વીને- ઈ
11 ભીજઠ- માર મો પઠશ્ય દ્રાક. કાઢ્યો મે- આ
12 આદીકાર- દી ઠીનરી- આર- આદીવેન દી- ને-
13 વીર- દમારા- શી- કાયા નાશીશકે [struck out] શ્રી
14 ખીશેશ્વર: ગ- આપને આશ્વઠ- આપી- શામૃ
15 નદી- આઠી- માવેક (શ)ધા મને દમારા (ખ)ટાકે
16 ૧૯૯- આઠી- ભો- દમારા શે મોઆઠગા- ૨૦
17 આગે- છાશી = [struck out] ૧૩ આપનેક આશા પર-
18 ભીગાર- છી- શાશ્વ દાઠભ- આપને બોઠ
19 શર- ઠીપી- ઉર્વો- પારરી- આઠી- આર.
20 ખીશાશ ઠીઠાદ્રુ ૨ (જુઆઠ) દીકીખી (શ)બી
21 ઉઠ માર ___ શામૃ ચોક ૧૧૭ છે

(દુર્ગાનાથ)

(7)

श्री

कोहबरा
तारीख : 3 माह माघ
शन ·१३४२ शाल
मुल्की

श्वश्ति-शकल-गुणागार-मस्ना-
दाक पाराबार-श्री-युक्त पंजीकार-जी शँ. इतः दुर्गा
नाथश्च. नमशाकाराः शतम्=शतं-कुशलंच-एतेका-
कुशल नीक जानब-जाए-अपने लोकनीक-कुशलादि
दी-प्रतिपल-अपेक्षीत.- शमाचार-जे अपनेक वो
ए ठाम-कईएक दीन-आदमी-पठावल-मुदा अप
ने शँ भेटनहीं-भेल-पता लागल-जे-अपने
शुलतानपुर-मे-छी-तै दुआरे कारीन्दा पठा-
वल-अछी-जे-कृपआ-अपने शामील करी-
दाक आबी. वा जदीचेत नही आबी तं इ
लीखल-जाए जे-बलदेव झाक कान्या में-हमर
अधीकार-हो की नहीं-आर-जदीचेत हो-ते-
वो-हमरा-शँ-कतबा पाबी शके=छथी
बीशेशतः-ते-अपने-अवश्य आबी-शमए
नहीं-अछी-माघेक-शुध्द मे हमरा शुध्द कर
तव्य-अछी-वो-हमरा शं मोवलग-२००)
मांगै-छथी=हम अपनेक आशा पर-
नीरभर-छी-शाब हालत-अपने खोला
शा-लीखी,-कार्ज-जरुरी-अछी-आर-
बीशेश की लीखू=कुशलादी लीखी शुखी
कैल जाए_ शमए थोड़ रहल छै—

दुर्गानाथ

स्वस्ति: । शकल गुणागार मर्यादाक शागर श्री जुत(युत) पन्जीकार श्रीस्वीओं ओं कें

नमशकार आंगा आहांकै पीता हरखी झा पन्जीकार ग्राम रे शाढ़ बौशी- हमर डेउढी

शाधु औली बौ- डेउढी आ दुआ नगर ? रामनगर ओ डेउढी चम्पा नगर राज रे आशल

बन्देली गतेर मध्य - बराबरि रैहि कार्य अपन अधिकार मालो ओ शीघ्रयान्त करै छलाह

आब अहूं बसुबी पाँति पढ़ो कार्य पन्जीकारक मध्य मीजुम्ला मेलहू तैय आहांके

परती(प्रति) रत पत्र लीखी देल जाइ अछि जे आहां बराबरि बदस्तुर शाबीक जेको आहांक

पीता कार्य शीध्यान्तक गैरह छलाह अहूं बराबरि बदस्तुर शाबीक कैल आब और

जे अहांक पीता शरकार शाँ मेरै छलौन्ह शे मोताबीक अहू के बराबरि मेरलकरत

त्रै ? तांरम पत्र बतौरशक्य शनद देल जाइ अछि ३ ती- बैशाख कृश्न शप्तमी रबि

मोताबीक तारीख १८ बैशाख १३१८ शाल मुल्की

(83)

श्री राजा पद्मानन्दसिंह
बहादुर

स्वशित (स्वस्ति) शकल (सकल) गुणागारेखु (षु) श्री जुत (युत) भीखीआ झा महाशएखु (षु)
श्री मन मोहनक नमस्कार आगाँ हशबहशत हो आ अहाँक महेश झा
श्री श्री शरकार मे इतलाऐ देलथीन- शरकार शौं हुकुम भेल जे शबहा (सभा)
वास्तु-करथी -शबहा वास्तु-क- जे -अहाँके- रुपैआ भेटे अद्द शे तहबील मे-रुपैआ

औद्द शौं पठाऐ देल जाएत- वो शरकार हुकुम देलैन जे शुन्दरवाबुक- अधीकार
माला शबाहा शौं पुर्व तैयार कै हाशील करथी तें इशबुल हुकुम श्री श्री
शरकार लीखल अद्द जे-शबहा शौं पूर्व- अधीकार माला तैआर कै ऐकदीनक
वो-आशते (वास्ते) अहाँ खुद आबी के हाजील कै दीऔन्ह- शे नीक जँ कह जवाब
लीखब शरकार मे इतलाऐ दीऔन्ह. हर्रा० ता० २२ पु० १८११ ई०

1 [illegible] (10)
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
536

1 मुल करमहे अनलपुर श्री रुदरमनी झाक बालक + पौत्र - चनी झा + परपौत्र
2 श्याम झा + दौ'मौत्र - भाइनाथ झा - ऐकहरे बोड़ा खजुरी - दौ'मौत्री पुत्र -
3 देबन झा नरौने शुल्हनी - देबन झा कौं बीवाह - नबटोल पल्लीवाड़ पाली —
4 रुद्रमनी झा दौ'मौत्र पशुनाथ झा पगुलवाड़ बदीआम + ॥ ═══ ॥ ═══ ॥





(11)

कन्याँ

बीर ठाकुर पाजी —

भीखारी झा पाजी —

रामदेव मीशर पाजी —

शुरगन (ण) पाजी =

मोती झा पाजी —

पीताम्ब्र(र) झा पाजी =

रुद्रपती झा पाजी =

हेमांगत राइ पाजी =

गुणाकर झा

(A) (12)

[illegible] — 1

[illegible] — 2

[illegible] — 3

[illegible] — 4

[illegible] — 5

[illegible] — 6

[illegible] — 7

[illegible] — 8

[illegible] — 9

[illegible] — 10

[illegible] — 11

[illegible] — 12

[illegible] — 13

[illegible] — 14

[illegible] — 15

[illegible] — 16

[illegible] — 17

[illegible] — 18

1 [illegible] — 19

2 [illegible] — 20

3 [illegible] — 21

4 [illegible] — 22

[illegible] — 23

1 [illegible] — 24

2 [illegible] — 25

3 [illegible] — 26

4 [illegible] — 27

5 [illegible] — 28

6 [illegible] — 29

7 [illegible] — 30

8 [illegible] — 31

(मि) श्री दुर्गा माधव गणेशाः श्री राम जी शहाय - 1 (13)

श्री श्री श्री महाराज पदमा नंद शींह बाहादुरके कन्यादान झाक दौमौत्रीक अधिकार माला - 2

Videha Learning — Gajendra Thakur

ग्राम - बेहट — तीशौत - पाजी (पाँजि) - 3

गदापानी झाक बालक — परवीया झाक दौमीत्र = तीशौत पाजी - 4

जगतबन्धु झा-क बालक - वीदयानाथ झाक दौहीत्र = मोलन झा - 5

गोपीनाथ झा क - बालक - गंगाधर झाक दौहीत्र : रोहाड़ - 6

लक्ष्मन झा क बालक - शाधु ठाकुरक दौहीत्र = रुद्रपतीझा - 7

ग्राम बहुरी - 8

श्री शीरीनाथ झाक दौहीत्र : - शंकर राए — 9

श्री प्रीतनाथ मिश्रक बालक - श्री शीरीनाथ झाक दौहीत्र शंकर राए - पाजी - 10

(मानन्द मिश्रक बालक -

ग्राम नवटोल - 11 — भुवन्धर मीश्रक दौहीत्र — रोहाड़ - 5 - 12

श्री पुरन्दर झाक बालक - — शंकर राए पाजी = 13

सी(की)शोर मीश्रक बालक - जोगानन्द झाक दौहीत्र — भीखारी झा पाजी = 14

बदरीनाथ झाक बालक — जीवधी झाक दौहीत्र — मनजन झा पाजी = 15

पं गशीमीशरक बालक — हीदनाथ झाक दौहीत्र —

श्री फुद्दे झाक बालक - भुवन्धर मीश्रक दौहीत्र — शुबनधु झा पाजी - 16

झींगुर मीश्रक बालक — बेणी झाक दौहीत्र — शीधंवाड़ झा पाजी - 17

ग्राम भटपुरा - ~~18~~ 19 — फलाही झाक दौहीत्र — रुद्रपती झा पाजी 18

आत्माराम झाक बालक - — जगदीश मीशर पाजी ~~20~~ ~~19~~ 20

श्री सत्यनाराएन मीशरक बालक - कुमदी झाक दौहीत्र

धनानन्द मीशरक बालक - तोताई झाक दौहीत्र - जीवनाथ झा पाजी - 21

कुनजकी झाक बालक — कनटू झाक दौहीत्र — वीरठाकुर पाजी 22

ग्राम मगरौली - 23

श्री जनार्दन झाक बालक . कनटू झाक दौहीत्र = वीर ठाकुर पाजी 24

श्री जादव झाक बालक — चुमन झाक दौहीत्र — भीखारी झा पाजी - 25

श्री खगपैनी झाक बालक — वीश्वनाथ झाक दौहीत्र = रामदेव मीशर - पाजी 26

श्री शुलपैनी झाक बालक — आत्माराम झाक दौहीत्र : शुरगन झा पाजी - 27

श्री हीरा झाक बालक — बौकु झाक दौहीत्र — मोती झा पाजी - 28

श्री कलाहर(धर) झाक बालक — मीत्रनाथ झाक दौहीत्र — पीताम्बर झा पाजी - 29

श्री कुलाहर(धर) झाक बालक - पुहुपी झाक दौहीत्र — रुद्रपती झा पाजी - 30

श्री गदापानी झाक बालक — हीदएमन झाक दौहीत्र — हेमीगनन्द(द) राए पाजी 31

(13) (14)

[illegible] — 1

[illegible] — [illegible]

[illegible] = [illegible] — [illegible] = 2

[illegible] = [illegible] — [illegible] = 3

[illegible] = [illegible] — [illegible] — 4

[illegible] = [illegible] — [illegible] = 5

[illegible] — [illegible] — [illegible] — 5

[illegible] = 6

[illegible] — [illegible] — [illegible] = 7

[illegible] = [illegible] — [illegible] = 8

[illegible] — [illegible] = [illegible] = 9

[illegible] = [illegible] = 10

[illegible] = [illegible] = 11

[illegible] = [illegible] = 12

[illegible] = [illegible] — 13

[illegible] = [illegible] — 14

[illegible] = [illegible] — 15

[illegible] = [illegible] — 16

[illegible] = [illegible] = 17

[illegible] = [illegible] — 18

[illegible] = [illegible] — 19

[illegible] = [illegible] — 20

[illegible] = 21

[illegible] = [illegible] — 22

[illegible] — [illegible] — 23

[illegible] = [illegible] — 24

[illegible] — [illegible] — 25

[illegible] = 26

[illegible] — [illegible] — 27

[illegible] — [illegible] — 28

(B)

ग्राम - चनौर - 1 (15)

श्री· झलना झाक बालक = गोपाल मीशरक दौहीत्र - मनजन झा - पाँजी - 2·

गुणशीर झाक बालक = ~~कृष्ण~~ कृश्नदत्त मीशरक दौहीत्र मनजन झा पाजी — 3

रूपनाराएन राएक बालक श्याम नाथ ठाकुरक दौहीत्र शुरगन शाखा - 4

वेदनाराएन राएक बालक श्री जा(या)र झाक दौहीत्र शुरगण(ड़) पाजी 5 —

कूमनी झाक बालक धीरनाथ मीशरक दौहीत्र मंजन झा पाजी — (6)

ग्राम शरीशब = 6

अमृतकर झाक बालक = जै नाराएन झाक दौहीत्र दशाध मीशर पाँजी 7

अमृतका झाक बालक = मुलीया झाक दौहीत्र दशाध मीशर पाजी 8

जीवधर मीशरक बालक = हरखमैनी मीशरक दौहीत्र - वीर ठाकुर = 9

देवधर मीशरक बालक = बाला मीश्रक दौहीत्र मीरकारी झा पाजी = 10

भुवनधर मीशरक बालक = महीनाथ मीश्रक दौहीत्र - मीरकारी झा पाजी = 11

धर्मनाथ झाक बालक = परशमैन झाक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी = 12

गुण(ड़)पति झाक बालक = मनपति झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी = 13

मोदनाथ झाक बालक = मीरवीआ झाक दौहीत्र शंकर राए पाजी = 14

झोटन झाक बालक = मीरनाथ झाक दौहीत्र वीर ठाकुर पाजी = 15

कल्यान का झाक बालक = जगपाद-त झाक दौहीत्र दशाध मीशर पाजी = 16

श्री मनमोहन झाक बालक = महराजकुमार बाबु बासुदेव सींहक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी = 17

श्री तेना मीशरक बालक = परवीआ झाक दौहीत्र वीर ठाकुर पाजी = 18

गोपीनाथ झाक बालक = लक्ष्मीदत्त झाक दौहीत्र मीरकारी झा पाजी = 19

कारी झाक बालक = गंगाधर झाक दौहीत्र शुबनधु झाक पाजी = 20

ग्राम पाही टोल = 21

चन्द्रमणी ठाकुरक बालक = मतीनाथ झाक दौहीत्र गुणाकर झा पाजी - 22

हेमपति झाक बालक = ठुंगनी झाक दौहीत्र शंकर राए पाँजी - 23

श्री लूपाई मीशरक बालक = गोपाल झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 24

केशी लाल मीशरक = गोवीनद झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 25

ग्राम - 26

कमलादत झाक बालक = ~~धनानन्द झाक दौहीत्र रामदेव मीशर पजी~~ =
गोविन्द झाक दौहीत्र शंकर राए - पाजी 27

धराधर झाक बालक धनानन्द झाक दौहीत्र रामदेव मीशर - पजी 28

(C 16)

[illegible] — 1

[illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible] = [illegible] — 2

[illegible] = [illegible] = [illegible] — 3

~~[illegible] = [illegible]~~ [illegible] — 4

~~[illegible] =~~ — 6. [illegible] — 5

~~[illegible] =~~ [illegible] [illegible] — 7

[illegible] = [illegible] [illegible] — 8

[illegible] = [illegible] [illegible] — 9

[illegible] — 10

[illegible] = [illegible] [illegible] — 11

[illegible] = [illegible] [illegible] — 12

[illegible] = [illegible] [illegible] — 13

[illegible] = 14

[illegible] = [illegible] [illegible] — 15

[illegible] = [illegible] [illegible] — 16

~~[illegible] [illegible] [illegible]~~ — 17

[illegible] = 18

[illegible] = [illegible] — [illegible] — 19

[illegible] = [illegible] [illegible] — 20

[illegible] = [illegible] [illegible] — 21

[illegible] = [illegible] [illegible] — 22

[illegible] = [illegible] [illegible] — 23

[illegible] = [illegible] [illegible] — 24

[illegible] = [illegible] [illegible] — 25

[illegible] = [illegible] [illegible] — 26

[illegible] = [illegible] [illegible] — 27

[illegible] = [illegible] [illegible] — 28

[illegible] = [illegible] [illegible] — 29

(C) (17)

ग्राम - ईशहपुर — 1

रघुवर झाक बालक = गंगानाथ झाक दौहित्र माधव झा पाजी 2

किशोर झाक बालक = हीरा मीश्रक दौहीत्र = पीताम्बर(र) - पाजी 3

नयन झाक बालक = बैगंशी मीश्रक दौहीत्र - मनजन झा पाजी - 4

दामोदर झाक बालक = दामोदर झाक दौहीत्र - हेमांगत राए - 5

~~मनमोहन झाक बालक~~ : 6

~~मोनी झाक बालक~~ = महाराज छत्र ~~सिंह~~ शींहक दौहीत्र - रुद्रपती झा - 7

गती झाक बालक भोलानन्द मीश्रक दौहीत्र - मोती झा पाँजी - 8

प्रीत मोहन झाक बालक बुधीकर झाक दौहीत्र - माधव मीश्र पाजी - 9

ग्राम - हटाख(ढ़) - 10

गणपती झाक बालक = वैद्यनाथ झाक दौहीत्र = भोलन झा पाजी - 11

धर्मानन्द झाक बालक = परशमनी झाक दौहीत्र - रुद्रपती झा पाजी - 12

श्री कृश्न दत्त झाक बालक = बाबु श्री गणेश दत्त शींहक दौहीत्र = मोती झा पाजी - 13

ग्राम - रैआम - 14

श्री आदीनाथ झाक बालक = लोकनाथ मीश्रक ~~झाक~~ दौहीत्र मोती झा पाजी - 15

खगन झाक बालक = भोलानाथ झाक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी - 16

लुलाई झाक बालक = लक्ष्मीदत्त झाक दौहीत्र - जीवनाथ झा पाजी - 17

ग्राम - लोहना - 18

घतानन्द झाक बालक = बाबु रमापत शींहक दौहीत्र - रामदेव मीश्र पाजी - 19

श्री कुकु झाक बालक = महाराज रुद्र शींहक दौहीत्र शंकर राए पाजी - 20

भोलानन्द झाक बालक = मोहनलाल झाक दौहीत्र जीवनाथ झा पाजी - 21

श्री मनमोन झाक बालक = बालपती झाक दौहीत्र शंकर राए पाँजी - 22

टीकानन्द झाक बालक = हीरामन झाक दौहीत्र हेमांगत राए पाजी - 23

मनपती झाक बालक = गोवीन्द झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 24

रघुपती झाक बालक = जगमान झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 25

जोगपती झाक बालक = परवीआ झाक दौहीत्र रोहाड़ 26

बबुजन झाक बालक = भागीप झाक दौहीत्र दशाय मीश्र - 27

बबुजन झाक बालक = बाबु प्रजापत शींह दौहीत्र शुरगण पजी - 28

लोकानन्द झाक बालक = मनमोन झाक दौहीत्र शुरगण पाजी - 29

18

[illegible] 1

[illegible] 2

[illegible] 3

[illegible]

[illegible]

[illegible] 4

[illegible] 5

[illegible] 6

[illegible] 7

[illegible] 8

[illegible] 9

[illegible] 10

[illegible] 11

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 15

[illegible] 16

[illegible] [redacted] [illegible]

[illegible]

[illegible] - सोनपुर

[illegible] 17

[illegible] 18

[illegible] 19

[illegible] - 20

[illegible] 21

[illegible] 22

[illegible]

[illegible] 23

(D) (19)

ग्राम - कोलगंज -1

दुर्गानाथ मिश्रक बालक = दुखीआ झाक दौहीत्र - पाजी जीवनाथ झा -2

~~पाजी जीवनाथ झा -2~~

धीरनाथ मीश्रक बालक = दुखीआ झाक दौहीत्र पाजी - जीवनाथ झा-3

रघुबीर मीश्रक बालक = लोकनाथ मीश्रक दौहीत्र पाजी - मोती झा-4

ग्राम - उजान शारदापुर - 5

श्री मैथी(थौ) झाक बालक - छकन झाक दौहीत्र पाजी - मोलन झा-6

ग्राम - उजान -7

उमापती झाक बालक - हरखी ठाकुर दौहीत्र पाजी मीकारी झा-8

भवानंद झाक बालक = जीवपती झाक दौहीत्र पाजी मीकारी झा-9

बीरन झाक बालक = अभऐ मीश्रक दौहीत्र - पाजी मोती झा-10

बर्म्म झाक बालक = बधान झाक दौहीत्र पाजी मीकारी झा-11

लक्ष्मीदत्त झाक बालक = परवीआ झाक दौहीत्र - पाजी मीकारी झा-12

रजनीदत्त झाक बालक जीधर मीश्रक दौहीत्र - पाजी मीकारी झा-13

श्री दामोदर झाक बालक - गोशाँई मीश्रक दौहीत्र - पाजी - मीकारी झा-14

श्री दामोदर झाक बालक - श्री बाबू गणेशदत्त शींहक दौहीत्र पाजी मोती झा-15

श्री बबै झाक बालक कारी मीश्रक दौहीत्र - पाजी रुद्रपती झा-16

शौनपुर ○

श्री तारानाथ ठाकुर बालक - गदापाणी झाक दौहीत्र मीकारी झा पाजी-उजान-धर्मपुर -17

श्री रघुनाथ झाक बालक बाबू श्री डोलपती शींहक दौहीत्र - पाजी लाछो पाठक-18

श्री मीवा झाक बालक कीशो झाक दौहीत्र - पाजी शुकन्धू झा-19

ग्राम - शर्वशीमा बो शौनपुर - 20

शोभ ठाकुरक बालक - बनी झाक दौहीत्र तीशौत - पाजी-21

महेश्वर ठाकुर बालक श्यामु झाक दौहीत्र मीवाती झा पाजी-22

श्री रघुनन्दन ठाकुर बालक हृषीकेश ठाकुर दौहीत्र मीकारी झा पाजी-23

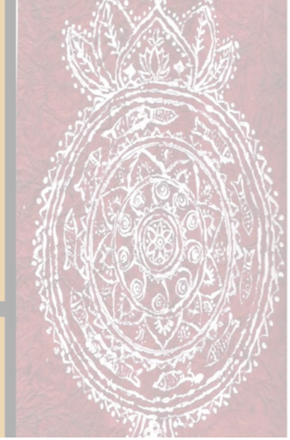
श्री श्रीनंदन ठाकुर बालक = लोकनाथ मीश्रक दौहीत्र पाजी मोती झा-24

1 श्री दुर्गा श्री मान्‌क श्री गणेशाः पान्तु ॥
3 परम अपेक्षित ~~~~~~
4 के श्री पद्‌मा नेन्द्र सिंह -क नमस्कार सतं
5 आगाँ हमरा - अपन - कुरसीनामाक ~~~~
6 ~~~~~~ अहाँ सौँ ~~~~~~
7 [illegible] आदिर जे कृपा पूर्वक अहाँ
8 पौथी लैकें जतेक नबुदी · मै सुके ऐहि मोकाँम
9 ड्योढी रामनग्र(१) शुभागमन - पूर्वक हमरा सौँ
10 भेंट कै जाउ बिसेरव कुसलादि लिखैत रहब·
11 इति रबौ

चित्र सं०—२

Learn Mithilakshara








Learn Mithilakshara





GAJENDRA THAKUR



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली







Ist edition 2009 of **Learn Mithilakshara**

author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657

ISBN : 978-93-80538-55-6

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107



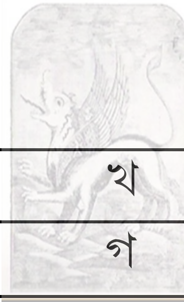


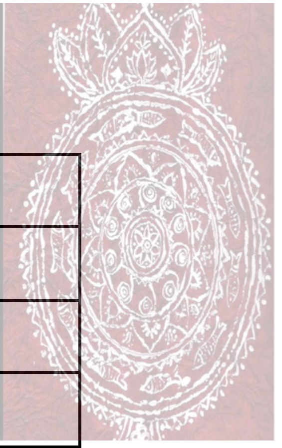
Mithilakshara

The following alphabets exist in MithilakShara (devanagari followed by MithilakShara)

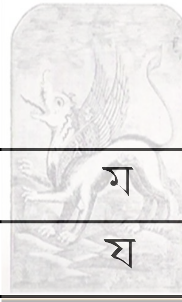
Vowels

Devanagari	MithilakShara
अ	অ
आ	আ
इ	ই
ई	ঈ
उ	উ
ऊ	ঊ
ए	এ
ऐ	ঐ
ओ	ও
औ	ঔ
अं	অং
अः	অঃ
अँ	অঁ
ऋ	ঋ
ॐ	ওঁ
Consonants	
क	ক

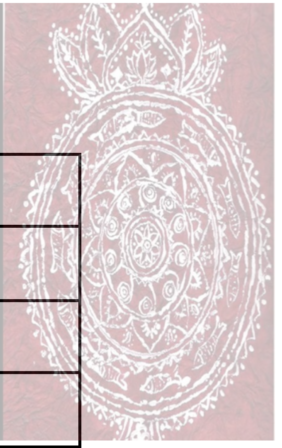




ख	খ
ग	গ
घ	ঘ
ङ	ঙ
च	চ
छ	ছ
ज	জ
झ	ঝ
ञ	ঞ
ट	ট
ठ	ঠ
ड	ড
ढ	ঢ
ण	ণ
त	ত
थ	থ
द	দ
ध	ধ
न	ন
प	প
फ	ফ
ब	ৰঁ
भ	ভ







म	𑒧
य	𑒨
र	𑒩
ल	𑒪
व	𑒫
श	𑒬
ष	𑒭
स	𑒮
ह	𑒯
क्ष	𑒏𑓂𑒭
त्र	𑒞𑓂𑒩
ज्ञ	𑒖𑓂𑒘
Nukta Consonants	
य़	**𑒨𑓃**
ड़	𑒙𑓃
ढ़	𑒛𑓃
Consonants with Matra	
क	𑒏
का	𑒏𑒰

कि	কি
की	কী
कु	কু
कू	কূ
के	কে
कै	কৈ
को	কো
कौ	কৌ
कं	কং
कः	কঃ
कँ	কঁ
कॉ	ক◌ॉ
कॅ	ক◌ॅ
कृ	কৃ
क्र	ক্র

SOME COMPLEX ALPHABETS in MithilakShara

Devanagari	Mithilakshara
क्त्य	ক্ত্য
क्त्र	ক্ত্র
त्क	ত্ক
न्य	ন্য
ल्व	ল্ব





श्च	𑒬𑓂𑒔
क्र	𑒏𑓂𑒩
श्र	𑒬𑓂𑒩
प्र	𑒣𑓂𑒩
ल्व	𑒪𑓂𑒫
र्क	𑒩𑓂𑒏
त्	𑒞𑓂
त्य	𑒞𑓂𑒨
त्त्य	𑒞𑓂𑒞𑓂𑒨
ङ्क्य	𑒓𑓂𑒏𑓂𑒨
त्त्व	𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫
सु	𑒮𑒳
यु	𑒨𑒳
र्ग	𑒩𑓂𑒑
र्क	𑒩𑓂𑒏
ष्ट	𑒭𑓂𑒙
मु	𑒧𑒳 (𑒧𑒳)
हु	𑒯𑒳 (𑒯𑒳)
खु	𑒐𑒳
घु	𑒒𑒳
चु	𑒔𑒳
छु	𑒕𑒳
टु	𑒙𑒳



ठु	𑒚𑒳
थु	𑒟𑒳
बु	𑒥𑒳
भु	𑒦𑒳
गु	𑒑𑒳
जु	𑒖𑒳
दु	𑒠𑒳
नु	𑒢𑒳
पु	𑒣𑒳
भु	𑒦𑒳
यु	𑒨𑒳
लु	𑒪𑒳
शु	𑒬𑒳
सु	𑒮𑒳
कु	𑒏𑒳
णु	𑒝𑒳
तु	𑒞𑒳
धु	𑒡𑒳
रु	𑒩𑒳
षु	𑒭𑒳
हु	𑒯𑒳 (𑒯𑒳)
त्रु	𑒞𑓂𑒩𑒳
कृ	𑒏𑒵




चॢ	চৢ
जॢ	জৢ
दॢ	দৢ
तॢ	তৢ
धॢ	ধৢ
भॢ	ভৢ
हॢ	হৢ
खृ	খৃ
गृ	গৃ
जृ	জৃ
पृ	পৃ
सृ	সৃ
कृ	কৃ
तृ	তৃ
दृ	দৃ
बृ	রৃ
भृ	ভৃ
हृ	হৃ
र	ব
र	**ৰ**
ब	র
य	য
य़	**য়**




क्क	𑒏𑓂𑒏
क्ख	𑒏𑓂𑒐
क्त	𑒏𑓂𑒞
क्न	𑒏𑓂𑒢
क्म	𑒏𑓂𑒧
क्य	𑒏𑓂𑒨
क्र	𑒏𑓂𑒩
क्ल	𑒏𑓂𑒪
क्व	𑒏𑓂𑒫
क्स	𑒏𑓂𑒮
ख्त	𑒐𑓂𑒞
ख्य	𑒐𑓂𑒨
ख्र	𑒐𑓂𑒩
ख्व	𑒐𑓂𑒫
ग्ग	𑒑𑓂𑒑
ग्द	𑒑𑓂𑒠
ग्ध	𑒑𑓂𑒡
ग्न	𑒑𑓂𑒢
ग्व	𑒑𑓂𑒫
ग्र	𑒑𑓂𑒩
ग्ल	𑒑𑓂𑒪
ग्य	𑒑𑓂𑒨
घ्घ	𑒒𑓂𑒒




घ्न	𑒒𑓂𑒢
घ्र	𑒒𑓂𑒩
घ्य	𑒒𑓂𑒨
ङ्क	𑒓𑓂𑒏
ङ्ख	𑒓𑓂𑒐
ङ्ग	𑒓𑓂𑒑
ङ्घ	𑒓𑓂𑒒
च्च	𑒔𑓂𑒔
च्छ	𑒔𑓂𑒕
च्य	𑒔𑓂𑒨
च्छ्र	𑒔𑓂𑒕𑓂𑒩
च्छृ	𑒔𑓂𑒕𑒵
च्छ्व	𑒔𑓂𑒕𑓂𑒫
ज्ज	𑒖𑓂𑒖
ज्झ	𑒖𑓂𑒗
ज्र	𑒖𑓂𑒩
ज्य	𑒖𑓂𑒨
ज्व	𑒖𑓂𑒫
ञ्च	𑒘𑓂𑒔
ञ्छ	𑒘𑓂𑒕
ञ्ज	𑒘𑓂𑒖
ञ्झ	𑒘𑓂𑒗
ट्ट	𑒙𑓂𑒙




ट्य	𑒙𑓂𑒨
ट्र	𑒙𑓂𑒩
ठ्ठ	𑒚𑓂𑒚
ठ्य	𑒚𑓂𑒨
ड्ग	𑒛𑓂𑒑
ड्ड	𑒛𑓂𑒛
ड्र	𑒛𑓂𑒩
ढ्य	𑒜𑓂𑒨
ण्ट	𑒝𑓂𑒙
ण्ठ	𑒝𑓂𑒚
ण्ड	𑒝𑓂𑒛
ण्ण	𑒝𑓂𑒝
ण्य	𑒝𑓂𑒨
ण्व	𑒝𑓂𑒫
त्क	𑒞𑓂𑒏
त्ख	𑒞𑓂𑒐
त्न	𑒞𑓂𑒢
त्प	𑒞𑓂𑒣
त्म	𑒞𑓂𑒧
त्स	𑒞𑓂𑒮
त्त	𑒞𑓂𑒞
त्य	𑒞𑓂𑒨
त्र	𑒞𑓂𑒩

त्व	𑒞𑓂𑒫
थ्र	𑒟𑓂𑒩
थ्य	𑒟𑓂𑒨
थ्व	𑒟𑓂𑒫
द्ग	𑒠𑓂𑒑
द्द	𑒠𑓂𑒠
द्ध	𑒠𑓂𑒡
द्भ	𑒠𑓂𑒦
द्म	𑒠𑓂𑒧
द्य	𑒠𑓂𑒨
द्र	𑒠𑓂𑒩
द्व	𑒠𑓂𑒫
ध्य	𑒡𑓂𑒨
ध्र	𑒡𑓂𑒩
ध्व	𑒡𑓂𑒫
न्त	𑒢𑓂𑒞
न्द	𑒢𑓂𑒠
न्ध	𑒢𑓂𑒡
न्न	𑒢𑓂𑒢
न्य	𑒢𑓂𑒨
न्व	𑒢𑓂𑒫
प्त	𑒣𑓂𑒞
प्न	𑒣𑓂𑒢






प्प	𑒣𑓂𑒣
प्य	𑒣𑓂𑒨
प्र	𑒣𑓂𑒩
प्ल	𑒣𑓂𑒪
प्व	𑒣𑓂𑒫
प्स	𑒣𑓂𑒮
फ्र	𑒤𑓂𑒩
फ्ल	𑒤𑓂𑒪
ब्ज	𑒥𑓂𑒖
ब्द	𑒥𑓂𑒠
ब्ध	𑒥𑓂𑒡
ब्य	𑒥𑓂𑒨
ब्र	𑒥𑓂𑒩
भ्य	𑒦𑓂𑒨
भ्र	𑒦𑓂𑒩
भ्व	𑒦𑓂𑒫
म्न	𑒧𑓂𑒢
म्प	𑒧𑓂𑒣
म्फ	𑒧𑓂𑒤
म्ब	𑒧𑓂𑒥
म्भ	𑒧𑓂𑒦
म्म	𑒧𑓂𑒧
म्य	𑒧𑓂𑒨




म्र	𑒧𑓂𑒩
म्ल	𑒧𑓂𑒪
म्व	𑒧𑓂𑒫
य्य	𑒨𑓂𑒨
य्व	𑒨𑓂𑒫
र्क	𑒩𑓂𑒏
र्ग	𑒩𑓂𑒑
ल्य	𑒪𑓂𑒨
ल्व	𑒪𑓂𑒫
ल्क	𑒪𑓂𑒏
ल्प	𑒪𑓂𑒣
व्य	𑒫𑓂𑒨
व्र	𑒫𑓂𑒩
व्व	𑒫𑓂𑒫
व्ल	𑒫𑓂𑒪
श्च	𑒬𑓂𑒔
श्छ	𑒬𑓂𑒕
श्न	𑒬𑓂𑒢
श्म	𑒬𑓂𑒧
श्य	𑒬𑓂𑒨
श्र	𑒬𑓂𑒩
श्ल	𑒬𑓂𑒪
श्व	𑒬𑓂𑒫




श्श	𑒬𑓂𑒬
ष्क	𑒭𑓂𑒏
ष्ट	𑒭𑓂𑒙
ष्ठ	𑒭𑓂𑒚
ष्ण	𑒭𑓂𑒝
ष्प	𑒭𑓂𑒣
ष्म	𑒭𑓂𑒧
ष्य	𑒭𑓂𑒨
ष्व	𑒭𑓂𑒫
स्क	𑒮𑓂𑒏
स्ख	𑒮𑓂𑒐
स्त	𑒮𑓂𑒞
स्थ	𑒮𑓂𑒟
स्य	𑒮𑓂𑒨
स्ल	𑒮𑓂𑒪
ह्न	𑒯𑓂𑒢
ह्म	𑒯𑓂𑒧
ह्य	𑒯𑓂𑒨
ह्र	𑒯𑓂𑒩
ह्ल	𑒯𑓂𑒪
ह्व	𑒯𑓂𑒫
क्त्य	𑒏𑓂𑒞𑓂𑒨
क्त्र	𑒏𑓂𑒞𑓂𑒩




त्क	ত্ক
त्र्य	ত্র্য
त्क्र	ত্ক্র
ङ्क्र	ঙ্ক্র
ङ्क्त्र	ঙ্ক্ত্র
ङ्त्र	ঙ্ত্র
ङ्क्य	ঙ্ক্য
ङ्ख्य	ঙ্খ্য
ङ्ग्य	ঙ্গ্য
ङ्ग्र	ঙ্গ্র
ङ्घ्र	ঙ্ঘ্র
ङ्घ्य	ঙ্ঘ্য
च्छ्य	চ্ছ্য
च्छ्र	চ্ছ্র
च्छ्व	চ্ছ্ব
ण्ड्र	ণ্ড্র
ण्ड्य	ণ্ড্য
ण्ड्व	ণ্ড্ব
त्म्य	ত্ম্য
त्र्य	ত্র্য
त्त्य	ত্ত্য
द्ध्य	দ্ধ্য
द्ध्र	দ্ধ্র




द्भ्य	দ্ভ্য
द्भ	দ্ভ্র
न्त्र	ন্ত্র
न्त्य	ন্ত্য
न्त्व	ন্ত্ব
न्द्य	ন্দ্য
न्ध्य	ন্ধ্য
ब्ध्य	ব্ধ্য
ब्ध्व	ব্ধ্ব
म्भ्य	ম্ভ্য
त्र्य	ত্র্য
स्त्य	স্ত্য
त्स्य	ৎস্য
स्त्र	স্ত্র
त्स्न	ৎস্ন
स्थ्य	স্থ্য
क्त्र्य	কত্র্য
र्द्ध्व	র্দ্ধ্ব
म्र्य	ম্র্য
क्ष्ण	ক্ষণ
क्ष्म	ক্ষ্ম
क्ष्य	ক্ষ্য
क्ष्व	ক্ষ্ব





श्च्य	শ্চ্য
ष्प्र	ষ্প্র
ष्ट्र	ষ্ট্র
ष्ठ्यू	ষ্ঠ্যূ
मु	ম্ব (ম্ব)
हु	হ্ম (হ্)
ड़	ড়
ड़ि	ড়ি
ड़ी	ড়ী
ड़ै	ড়ৈ
ढ़	ঢ়
ढ़ि	ঢ়ি
ढ़ी	ঢ়ী
ढ़ै	ঢ়ৈ
कॉ	ক◌ॉ
डॉ	ড◌ॉ
ऋ	**ঋ**
ॠ	**ৠ**
ऌ	**ঌ**
ॡ	**ৡ**
क़	**ক়**
ख़	**খ়**





ग़	ग़
ज़	ज़
फ़	फ़

Conjuncts	
द + halant + द द्द	দ + halant + দ দ্দ
द + halant + ध द्ध	দ + halant + ধ দ্ধ
द + halant + व द्व	দ + halant + র দ্র
द + halant + म द्म	দ + halant + ম দ্ম
द + halant + य द्य	দ + halant + য





	𑒖𑓂𑒨
द + halant + ब द्ब	𑒠 + halant + 𑒩𑓀 𑒠𑓂𑒩𑓀
द + halant + न द्न	𑒠 + halant + 𑒢 𑒠𑓂𑒢
द + halant + ग द्ग	𑒠 + halant + 𑒑 𑒠𑓂𑒑
द + halant + घ द्घ	𑒠 + halant + 𑒒 𑒠𑓂𑒒
ह + halant + म ह्म	𑒯 + halant + 𑒧 𑒯𑓂𑒧
ह + halant + ल ह्ल	𑒯 + halant + 𑒪 𑒯𑓂𑒪
ह + halant + व ह्व	𑒯 + halant + 𑒩 𑒯𑓂𑒩
ह + halant + न ह्न	𑒯 + halant + 𑒢 𑒯𑓂𑒢





ह + halant + य ह्य	হ + hal ant + য হ্য
ष + halant + ट ष्ट	ষ + hal ant + ট ষ্ট
ष + halant + ठ ष्ठ	ষ + hal ant + ঠ ষ্ঠ
त + halant + त त्त	ত + hal ant + ত ত্ত
क + halant + त क्त	ক + hal ant + ত ক্ত
श + halant + च श्च	শ + hal ant + চ শ্চ
श + halant + व श्व	শ + hal ant + র শ্ব
श + halant + र श्र	শ + hal ant + ব শ্র

ऽ (*avagraha*) **ॐ**	ঽ (*avagraha*) ওঁ

Punctuation/ Quotation Marks:
The English symbols [ ] { } ( ) - + * / = । ; : . , " ? ! % \ ~ _ ` '

translate into the same symbols Marks.

PRACTISE AGAIN AND AGAIN:

Vowel :

Devanagari followed by MithilakShara:-

अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ॠ , ऌ , ॡ , ए , ऐ , ओ , औ

অ , আ , ই , ঈ , উ , ঊ , ঋ , ৠ , ঌ , ৡ , এ , ঐ , ও , ঔ

Consonants: Devanagari followed by MithilakShara:-

क , ख , ग , घ , ङ

ক , খ , গ , ঘ , ঙ







च , छ, ज, झ, ञ

𑒔 , 𑒕, 𑒖, 𑒗, 𑒘

ट , ठ, ड, ढ, ण

𑒙 , 𑒚, 𑒛, 𑒜, 𑒝

त , थ, द, ध , न

𑒞 , 𑒟, 𑒠, 𑒡 , 𑒢

प , फ , ब , भ , म

𑒣 , 𑒤 , 𑒥 , 𑒦 , 𑒧

य , र, ल , व , श , ष , स , ह

𑒨 , 𑒩, 𑒪 , 𑒫 , 𑒬 , 𑒭 , 𑒮 , 𑒯

क का कि की कु कू कृ कॄ क्लृ क्लॄकॅ के कॆ कै

कॉ को कौ कौ कंकः

𑒏 𑒏𑒰 𑒏𑒱 𑒏𑒲 𑒏𑒳 𑒏𑒴 𑒏𑒵 𑒏𑒶 𑒏𑒷 𑒏𑒸 𑒏𑒺 𑒏𑒹 𑒏𑒻 𑒏𑒻

𑒏𑒽 𑒏𑒼 𑒏𑒾 𑒏𑒾 𑒏𑓀 𑒏𑓁

॒ *(anudatta)*

॑ *(udatta)*

॓ *(swarita)*

ँ (chandrabindu)

ं (anusvara)

ः (visarga)

𑓄 (avagraha) 𑓇 (aum)

𑒬𑓂𑒩𑒲 (shree) 𑓃 (nukta)

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः अँ आँ ऋ ॠ ऌ

ष स ह क्ष ज्ञड़

𑒁 𑒂 𑒃 𑒄 𑒅 𑒆 𑒋 𑒌 𑒍 𑒎 𑒁𑓀 𑒁𑓁 𑒁𑒿 𑒂𑒿 𑒇 , 𑒈 , 𑒉 , 𑒊

𑒭 𑒮 𑒯 𑒏𑓂𑒭 𑒖𑓂𑒒 𑒛𑓃

म् म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः म्र ज्म र्म मॅ






मॅ मँ माँ मृ मॄ मॢ मॣ म॑ म॒ म॓ म॔ म़
ळ

ম্ ম মা মি মী ম্ব(ম্ব) মৃ মে মৈ মো মৌ মং মঃ ম্র ক্ম র্ম
মॅ মॉ মঁ মাঁ মৃ মৄ মৢ মৣ ম॑ ম॒ ম॓ ম॔ ম়
ळ

(udaatta): ॒ (anudaatta): ॓ (grave): ॔
(accute): ़ (nukta) ॐ : শ্রী
ঋ২ : ~ (avagraha) ॰ : (abreviation)
। : (ardhacharana,khada danda)
॥ : (poornacharan)
১২৩৪৫৬৭৮৯০ 1234567890

REVISE:-

स्वर

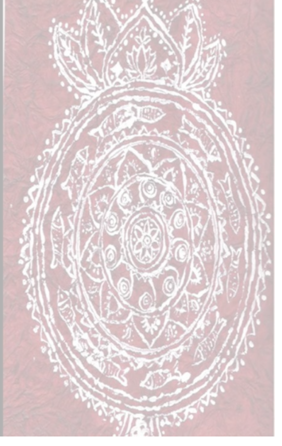
अ: अ। आ। इ। ई। उ। ऊ। ए। ऐ।

ओ। औ। अं। अः। ऋ। ॠ। ऌ। ॡ।

स्वर

অ: অ । আ । ই । ঈ । উ । ঊ । এ । ঐ ।
ও । ঔ । অং । অ: । ঋ । ৠ । ঌ । ৡ



व्यंजन

ব্যংজন

क: क । का । कि । की । कु । कू । के ।

कै । को । कौ । कं । कः

ক: ক । কা । কি । কী । কু । কূ । কে ।
কৈ । কো । কৌ । কং । কঃ

ख: ख । खा । खि । खी । खु । खू । खे ।

खै । खो । खौ । खं । खः

খ: খ । খা । খি । খী । খু । খূ । খে ।
খৈ । খো । খৌ । খং । খঃ

ग: ग । गा । गि । गी । गु । गू । गे । गै ।

गो । गौ । गं । गः

গ: গ । গা । গি । গী । গু । গূ । গে । গৈ
। গো । গৌ । গং । গঃ

घ: घ । घा । घि । घी । घु । घू । घे । घै ।

घो । घौ । घं । घः

ঘ: ঘ । ঘা । ঘি । ঘী । ঘু । ঘূ । ঘে । ঘৈ
। ঘো । ঘৌ । ঘং । ঘঃ

ङ: ङ । ङा । ङि । ङी । ङु । ङू । ङे । ङै ।

ङो। ङौ। ङं। ङः

𑒓: 𑒓 । 𑒓𑒰 । 𑒓𑒱 । 𑒓𑒲 । 𑒓𑒳 । 𑒓𑒴 | 𑒓𑒹 | 𑒓𑒻
| 𑒓𑒼 | 𑒓𑒾 | 𑒓𑓀 | 𑒓𑓁

च: च । चा । चि । ची । चु । चू। चे। चै।

चो। चौ। चं। चः

𑒔: 𑒔 । 𑒔𑒰 । 𑒔𑒱 । 𑒔𑒲 । 𑒔𑒳 । 𑒔𑒴 | 𑒔𑒹 | 𑒔𑒻
| 𑒔𑒼 | 𑒔𑒾 | 𑒔𑓀 | 𑒔𑓁

छ: छ । छा । छि । छी । छु । छू। छे। छै।

छो। छौ। छं। छः

𑒕: 𑒕 । 𑒕𑒰 । 𑒕𑒱 । 𑒕𑒲 । 𑒕𑒳 । 𑒕𑒴 | 𑒕𑒹 | 𑒕𑒻
| 𑒕𑒼 | 𑒕𑒾 | 𑒕𑓀 | 𑒕𑓁

ज: ज । जा । जि । जी । जु । जू। जे। जै।

जो। जौ। जं। जः

𑒖: 𑒖 । 𑒖𑒰 । 𑒖𑒱 । 𑒖𑒲 । 𑒖𑒳 । 𑒖𑒴 | 𑒖𑒹 |
𑒖𑒻 | 𑒖𑒼 | 𑒖𑒾 | 𑒖𑓀 | 𑒖𑓁

झ: झ । झा । झि । झी । झु । झू। झे।

झै। झो। झौ। झं। झः

𑒗: 𑒗 । 𑒗𑒰 । 𑒗𑒱 । 𑒗𑒲 । 𑒗𑒳 । 𑒗𑒴 | 𑒗𑒹 |
𑒗𑒻 | 𑒗𑒼 | 𑒗𑒾 | 𑒗𑓀 | 𑒗𑓁

ञ: ञ । ञा । ञि । ञी । ञु । ञू। ञे।

ञै। ञो। ञौ। ञं। ञः

𑒒: 𑒒 । 𑒒𑒰 । 𑒒𑒱 । 𑒒𑒲 । 𑒒𑒳 । 𑒒𑒴 | 𑒒𑒹 |
𑒒𑒻 | 𑒒𑒼 | 𑒒𑒾 | 𑒒𑓀 | 𑒒𑓁

ट: ट । टा । टि । टी । टु । टू | टे | टै |

टो | टौ | टं | टः

𑒓: 𑒓 । 𑒓𑒰 । 𑒓𑒱 । 𑒓𑒲 । 𑒓𑒳 । 𑒓𑒴 | 𑒓𑒹 | 𑒓𑒻
| 𑒓𑒼 | 𑒓𑒾 | 𑒓𑓀 | 𑒓𑓁

ठ: ठ । ठा । ठि । ठी । ठु । ठू | ठे | ठै |

ठो | ठौ | ठं | ठः

𑒔: 𑒔 । 𑒔𑒰 । 𑒔𑒱 । 𑒔𑒲 । 𑒔𑒳 । 𑒔𑒴 | 𑒔𑒹 | 𑒔𑒻
| 𑒔𑒼 | 𑒔𑒾 | 𑒔𑓀 | 𑒔𑓁

ड: ड । डा । डि । डी । डु । डू | डे | डै |

डो | डौ | डं | डः

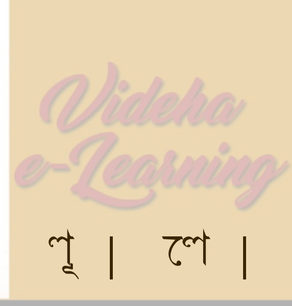
𑒕: 𑒕 । 𑒕𑒰 । 𑒕𑒱 । 𑒕𑒲 । 𑒕𑒳 । 𑒕𑒴 | 𑒕𑒹 | 𑒕𑒻
| 𑒕𑒼 | 𑒕𑒾 | 𑒕𑓀 | 𑒕𑓁

ढ: ढ । ढा । ढि । ढी । ढु । ढू | ढे | ढै |

ढो | ढौ | ढं | ढः

𑒖: 𑒖 । 𑒖𑒰 । 𑒖𑒱 । 𑒖𑒲 । 𑒖𑒳 । 𑒖𑒴 | 𑒖𑒹 | 𑒖𑒻
| 𑒖𑒼 | 𑒖𑒾 | 𑒖𑓀 | 𑒖𑓁

ण: ण । णा । णि । णी । णु । णू | णे | णै |




णो। णौ। णं। णः

ণ: ণ । ণা । ণি । ণী । ণু । ণূ। ণে। ণৈ। ণো। ণৌ। ণং। ণঃ

तः त।ता।ति।ती।तु।तू। ते। तै। तो। तौ। तं। तः

ত: ত । তা । তি । তী । তু । তূ। তে। তৈ। তো। তৌ। তং। তঃ

थः थ।था।थि।थी।थु।थू। थे। थै। थो। थौ। थं। थः

থ: থ । থা । থি । থী । থু । থূ। থে। থৈ। থো। থৌ। থং। থঃ

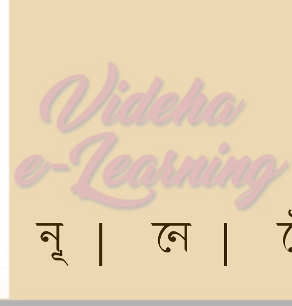
दः द।दा।दि।दी।दु।दू। दे। दै। दो। दौ। दं। दः

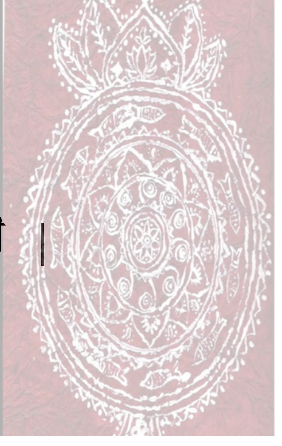
দ: দ । দা । দি । দী । দু । দূ। দে। দৈ। দো। দৌ। দং। দঃ

धः ध।धा।धि।धी।धु।धू। धे। धै। धो। धौ। धं। धः

ধ: ধ । ধা । ধি । ধী । ধু । ধূ। ধে। ধৈ। ধো। ধৌ। ধং। ধঃ

नः न।ना।नि।नी।नु।नू। ने। नै। नो। नौ। नं। नः



ন: ন । না । নি । নী । ন্ব । নৃ | নে | নৈ |
নো | নৌ | নং | নঃ

प: **प । पा । पि । पी । पु । पू । पे । पै ।**
पो । पौ । पं । पः
প: প । পা । পি । পী । প্ব । পৃ | পে | পৈ
| পো | পৌ | পং | পঃ

फ: **फ । फा । फि । फी । फु । फू । फे ।**
फै । फो । फौ । फं । फः
ফ: ফ । ফা । ফি । ফী । ফ্ । ফৃ | ফে |
ফৈ | ফো | ফৌ | ফং | ফঃ

ब: **ब । बा । बि । बी । बु । बू । बे । बै ।**
बो । बौ । बं । बः
ৰ: ৰ । ৰা । ৰি । ৰী । ৰ্ । ৰৃ | ৰে | ৰৈ
| ৰো | ৰৌ | ৰং | ৰঃ

भ: **भ । भा । भि । भी । भु । भू । भे ।**
भै । भो । भौ । भं । भः
ভ: ভ । ভা । ভি । ভী । ভু । ভূ | ভে |
ভৈ | ভো | ভৌ | ভং | ভঃ

म: **म । मा । मि । मी । मु । मू । मे । मै ।**
मो । मौ । मं । मः

ম: ম । মা । মি । মী । ম্ব(ম্মু) । মূ | মে |
মৈ | মো | মৌ | মং | মঃ

य: य । या । यि । यी । यु । यू। ये। यै।
यो। यौ। यं। यः
য: য । যা । যি । যী । যু । যূ | যে | যৈ
| যো | যৌ | যং | যঃ

र: र । रा । रि । री । रु । रू। रे। रै।
रो। रौ। रं। रः
ব: ব । বা । বি । বী । বু । বূ | বে | বৈ
| বো | বৌ | বং | বঃ

ल: ल । ला । लि । ली । लु । लू। ले। लै।
लो। लौ। लं। लः
ন: ন । না । নি । নী । নু । নূ | নে | নৈ
| নো | নৌ | নং | নঃ

व: व । वा । वि । वी । वु । वू। वे। वै।
वो। वौ। वं। वः
র: র । রা । রি । রী । রু । রূ | রে | রৈ |
রো | রৌ | রং | রঃ

स: स । सा । सि । सी । सु । सू। से।
सै। सो। सौ। सं। सः

স: স । সা । সি । সী । স্ব । সূ | সে | সৈ
| সো | সৌ | সং | সঃ

ष: ष । षा । षि । षी । षु । षू। षे।
षै। षो। षौ। षं। षः
ষ: ষ । ষা । ষি । ষী । ষ্ব । ষূ | ষে | ষৈ
| ষো | ষৌ | ষং | ষঃ

श: श । शा । शि । शी । शु । शू। शे। शै।
शो। शौ। शं। शः
শ: শ । শা । শি । শী । শ্ব । শূ | শে | শৈ
| শো | শৌ | শং | শঃ

ह: ह । हा । हि । ही । हु । हू। हे। है।
हो। हौ। हं। हः
হ: হ । হা । হি । হী । ফ(হ্) । হ্ন | হে |
হৈ | হো | হৌ | হং | হঃ

क्ष: क्ष । क्षा । क्षि । क्षी । क्षु । क्षू। क्षे।
क्षै। क्षो। क्षौ। क्षं। क्षः
ক্ষ: ক্ষ । ক্ষা । ক্ষি । ক্ষী । ক্ষু । ক্ষূ | ক্ষে |
ক্ষৈ | ক্ষো | ক্ষৌ | ক্ষং | ক্ষঃ

त्र: त्र । त्रा । त्रि । त्री । त्रु । त्रू। त्रे। त्रै।

त्रो। त्रौ। त्रं। त्रः

ত্র: ত্র । ত্রা । ত্রি । ত্রী । ত্রু । ত্রূ | ত্রে | ত্রৈ
ত্রো| ত্রৌ |ত্রং | ত্রঃ

ज्ञ: ज्ञ। ज्ञा। ज्ञि। ज्ञी। ज्ञु। ज्ञू| ज्ञे| ज्ञै| ज्ञो| ज्ञौ| ज्ञं| ज्ञः

জ্ঞ: জ্ঞ । জ্ঞা । জ্ঞি । জ্ঞী । জ্ঞু । জ্ঞূ | জ্ঞে

| জ্ঞৈ | জ্ঞো | জ্ঞৌ | জ্ঞং | জ্ঞঃ

सांख्य ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
९

সাংখ্য
০ । ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ | ৮ |
৯

क का कि की कु कू कृ कॄ क्लृ क्लॄ कॅ **के कॆ कै**
कॉ को कॊ कौ कं कः

ক কা কি কী কু কূ কৃ কৄ কৢ কৣ কॅ কে কॆ কৈ
কॉ কো কॊ কৌ কং কঃ

<u>সিদ্ধিরস্তু</u>

Learn Braille through Mithilakshara













Learn Braille through Mithilakshara



Videha e-Learning

Gajendra Thakur



GAJENDRA THAKUR



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली







Ist edition 2009 of **Learn Braille through Mithilakshara**

author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657
ISBN : 978-93-80538-56-3

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107











Devanagari, Mithilakshara and Braille

देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेल लिपि

দেবনাগবী, মিথিনাক্ষব আ ব্রেন নিপি

फ्रांसक लुइस ब्रेल -अठारह सए नौ ई. मे जन्म आ अठारह सए बावन ई.मे मृत्यु- जे अपने आन्हर छलाह पन्द्रह बर्खक अवस्थामे ब्रेल लिपिक आविष्कार आँखिसँ विहीन लोकक लेल कएने रहथि। एहि लिपिमे कागजपर विशेष प्रिंटरसँ उठल-उठल बिन्दुक माध्यमसँ -जकरा हाथक स्पर्शसँ अनुभव कएल जा सकए- भाषाक संप्रेषण होइत अछि। एकरा दुनू हाथक स्पर्शसँ पढ़ल जाइत अछि। दहिना हाथ संदेशकेँ रूपान्तरित कए संप्रेषित करैत अछि आ वाम हाथ अगिला पंक्तिक प्रारम्भक अनुभव करैत अछि। एहि लिपिकेँ सामान्यतः डेढ़ सए शब्द प्रति मिनटक गतिसँ पढ़ल जा सकैत अछि जे आँखि द्वारा पढ़ल जाएबला सामान्य शब्द संख्या तीन सए शब्द प्रति मिनटक अदहा अछि।

एहि लिपिक आधारकेँ सेल कहल जाइत अछि। एकटा सेलक निर्माण छह टा बिन्दुक संयोजनसँ होइत अछि। एहिसँ तिरसठि प्रकारक विभिन्न वर्णक अक्षर-संख्या आ विराम-अर्द्धविराम आदि चेन्ह- निर्माण होइत अछि।

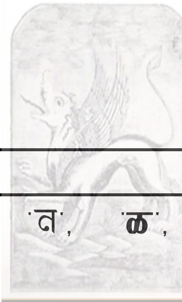
ফ্রাংসক ন্বওস ব্রেন -অঠাবহ সএ নৌ ঙ. মে জন্ম আ অঠাবহ সএ বাবন ঙ.মে মৃত্যু- জে অপনে আন্হব ছনাহ পন্দ্রহ বর্খক অবস্থামে ব্রেন নিপিক আবিষ্কাব আঁখিসঁ বিহীন নোকক নেন কএনে বহথি। এহি নিপিমে কাগজপব বিশেষ প্রিংটবসঁ উঠন-উঠন বিন্দুক মাধ্যমসঁ -জকবা হাথক স্পর্শসঁ অনুভব কএন জা সকএ- ভাষাক সংপ্রেষণ হোএত অছি। একবা দুনু হাথক স্পর্শসঁ পঢ়ন জাএত অছি। দহিনা হাথ সংদেশকেঁ রূপান্তবিত কএ সংপ্রেষিত কবৈত অছি আ বাম হাথ অগিনা পংক্তিক প্রাবম্ভক অনুভব কবৈত অছি। এহি নিপিকেঁ সামান্যতঃ ডেঢ় সএ শব্দ প্রতি মিনটক গতিসঁ পঢ়ন জা সকৈত অছি জে আঁখি দ্বাবা পঢ়ন জাএবনা সামান্য শব্দ সংখ্যা তীন সএ শব্দ প্রতি মিনটক অদহা অছি।
এহি নিপিক আধাবকেঁ সেন কহন জাএত অছি। একটা সেনক নির্মাণ ছহ টা বিন্দুক সংযোজনসঁ হোএত অছি। এহিসঁ তিবসঠি প্রকাবক বিভিন্ন বর্ণক -অক্ষব-সংখ্যা আ বিবাম-অর্দ্ধবিবাম আদি চেন্হ- নির্মাণ হোএত অছি।






[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Devanagari	MithilakShara	Braille
'अ','आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ'	'অ','আ', 'ই', 'ঈ', 'উ', 'ঊ'	'⠁','⠜', '⠊', '⠔', '⠥', '⠳'
'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ', 'ऋ'	'এ', 'ঐ', 'ও', 'ঔ', 'ঋ'	'⠑', '⠌', '⠕', '⠪', '⠐⠗'
one byte nukta varnas **"क़","ख़","ग़","ज़", "ड़","ढ़","फ़","य़"**	one-byte nukta varnas **"ক়","খ়","গ়","জ়", "ড়","ঢ়","ফ়","য়"**	one-byte nukta varnas '⠄', '⠘', '⠸', '⠉', '⠊', '⠌', '⠋', '⠠'
two-byte nukta varnas **"क़", "ख़", "ग़", "ज़", "फ़"**	two-byte nukta varnas **"ক়", "খ়", "গ়", "জ়", "ফ়"**	two-byte nukta varnas "⠅", "⠭", "⠐⠣", "⠵", "⠐⠗"
'क', 'ख', 'ग', 'घ', 'ङ'	'ক', 'খ', 'গ', 'ঘ', 'ঙ'	'⠅', '⠨', '⠛', '⠣', '⠬'
'च', 'छ', 'ज', 'झ', 'ञ'	'চ', 'ছ', 'জ', 'ঝ', 'ঞ'	'⠉', '⠡', '⠚', '⠴', '⠒'
'ट', 'ठ', 'ड़', 'ड', 'ढ़', 'ढ', 'ण'	'ট', 'ঠ', **'ড়'**, 'ড', **'ঢ়'**, 'ঠ', 'ণ'	'⠾', '⠺', '⠻', '⠫', '⠐⠻', '⠿', '⠼'
'त', 'थ', 'द', 'ध', 'न'	'ত', 'থ', 'দ', 'ধ', 'ন'	'⠞', '⠹', '⠙', '⠮', '⠝'
'प', 'फ', 'ब', 'भ', 'म'	'প', 'ফ', 'ব', 'ভ', 'ম'	'⠏', '⠖', '⠃', '⠘', '⠍'





'य', 'र', 'ल', 'ळ', 'व'	'𑒨', '𑒫', '𑒪', 'ळ', '𑒩'	'⠽', '⠗', '⠇', '⠸', '⠧'
'श', 'ष', 'स', 'ह'	'𑒬', '𑒭', '𑒮', '𑒯'	'⠩', '⠯', '⠎', '⠓'
'क्ष', 'ज्ञ'	'𑒏𑓂𑒭', '𑒖𑓂𑒛'	'⠟', '⠱'
'ऽ', '्', 'ा', 'ॉ', 'ि', 'ी', 'ु', 'ू', 'े', 'ै', 'ो', 'ौ', 'ं', 'ँ', 'ृ', 'ः', '.', '।'	'𑓄', '𑓂', '𑒰', 'ॉ', '𑒱', '𑒲', '𑒳', '𑒴', '𑒺', '𑒻', '𑒼', '𑒾', '𑓀', '𑒿', '𑒵', '𑓁', '.', '।'	'⠄', '⠈', '⠜', '⠛', '⠊', '⠔', '⠥', '⠳', '⠑', '⠌', '⠕', '⠪', '⠰', '⠄', '⠐⠗', '⠠'
० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९	𑓐 𑓑 𑓒 𑓓 𑓔 𑓕 𑓖 𑓗 𑓘 𑓙	0 1 2 3 4 5 6 7 8 9

Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara



Videha e-Learning

Gajendra Thakur

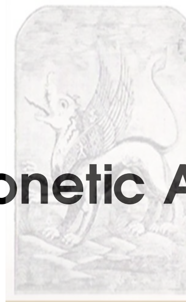




Videha e-Learning

Gajendra Thakur







Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara

GAJENDRA THAKUR



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली







Ist edition 2009 of **Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara** author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657
ISBN : 978-93-80538-57-0

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

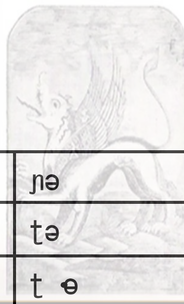
Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107





Devanagari, Mithilakshara and International Phonetic Alphabet

Devanagari	Mithilakshara	International Phonetic Alphabet
अ	অ	ə
आ	আ	ɑ ː
इ	ই	i
ई	ঈ	i ː
उ	উ	u
ऊ	ঊ	u ː
ए	এ	e ː
ऐ	ঐ	a ː i
ओ	ও	o ː
औ	ঔ	a ː u
ऋ	ঋ	ɹ̩
ॠ	ৠ	ɹ̩ ː
ऌ	ঌ	l̩
ॡ	ৡ	l̩ ː
अं	অং	^{n}
अः	অঃ	h
क	ক	kə
क़	ক়	qə
ख	খ	k ə
ख़	খ়	xə
ग	গ	gə
ग़	গ়	ɣə
घ	ঘ	g ə
ङ	ঙ	ŋə
च	চ	cə
छ	ছ	c ə
ज	জ	ɟə
ज़	জ়	zə
झ	ঝ	ɟ ə




ञ	𑒘	ɲə
ट	𑒙	ʈə
ठ	𑒚	ʈ ə
ड	𑒛	ɖə
ड़	𑒛𑓃	ɽə
ढ	𑒜	ɖ ə
ढ़	𑒜𑓃	ɽ ə
ण	𑒝	ɳə
त	𑒞	t̪ə
थ	𑒟	t̪ ə
द	𑒠	d̪ə
ध	𑒡	d̪ ə
न	𑒢	nə
प	𑒣	pə
फ	𑒤	p ə
फ़	𑒤𑓃	fə
ब	𑒥	bə
भ	𑒦	b ə
म	𑒧	mə
य	𑒨	jə
र	𑒩	rə
ल	𑒪	lə
व	𑒫	və
श	𑒬	ɕə
ष	𑒭	ʂə
स	𑒮	sə
ह	𑒯	ɦə
क्ष	𑒏𑓂𑒭	kʃə
त्र	𑒞𑓂𑒩	t̪ɾə
ज्ञ	𑒖𑓂𑒘	gjə
श्र	𑒬𑓂𑒩	ɕcə
्	𑓂	◌̥
ा	𑒰	ɑː







ि	𑒱	i
ी	𑒲	i ː
ु	𑒳	u
ू	𑒴	u ː
ृ	𑒵	ɹ
े	𑒹	e ː
ै	𑒻	a ː i
ो	𑒼	o ː
ौ	𑒾	a ː u
ं	𑓀	n
ँ	𑒿	n
ं	𑓀	n
ँ	𑒿	n
ः	𑓁	h




देवनागरी	तिब्बती	तिरहुता
क	ཀ	𑒏
ख	ཁ	𑒐
ग	ག	𑒑
ङ	ང	𑒒
च	ཅ	𑒔
छ	ཆ	𑒕
ज	ཇ	𑒖
त	ཏ	𑒞
थ	ཐ	𑒟
ध	[illegible]	𑒡
न	ན	𑒢
प	པ	𑒣
फ	ཕ	𑒤
ब	བ	𑒥
म	མ	𑒧
य	ཡ	𑒨
र	ར	𑒩

देवनागरी	तिब्बती	तिरहुता
ल	ལ	𑒪
श	ཤ	𑒬
स	ས	𑒮
ह	ཧ	𑒯
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9

क कि कु के को कं (न) कं (म) क्र

का की कू कै कौ कः

अ - रिक्त
आ -
इ -
ई -
उ -
ऊ -

ए
ऐ
ओ
औ

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ ऋ ॠ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ऌ ॡ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल ळ व

श ष स ह

अं (न)
अं (म)
अः -

ब्राह्मी एवं तिरहुता

ब्राह्मीक विकास

अ- 𑀅 अ

क- 𑀓 क

ग- 𑀕 ग

त- 𑀢

थ- 𑀣

ध- 𑀥 द

प- 𑀧 प

ब- 𑀩 ब

य- 𑀬 य

व- 𑀯 व

ब्राह्मीक विकास (२) ब्राह्मी सँ तिरहुता

	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

5 ई.पू.

4 ई.पू.

3 ई.पू.

2 ई.

5 ई.

7 ई.

9 ई.

11 ई.

रिक्त

Blank

ब्राह्मी संयुक्ताक्षर

